50

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

ग्रन्थाङ्क 14

कूर्मवंश यश प्रकाश
अपर नाम
लावारासा

1997

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
जोधपुर

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक

पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

(सम्मान्य संचालक, राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर, जयपुर)

ग्रन्थाङ्क 14

चारण कविया गोपालदान विरचित

कूर्मवंश यश प्रकाश

अपर नाम

लावारासा

सम्पादन कर्त्ता

महताब चन्द्रजी खारैड

प्रकाशक

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर (राज.)

Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur

द्वितीयावृत्ति **1997** मूल्य : 56.00

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

प्रधान सम्पादक

पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

(सम्मान्य संचालक, राजस्थान पुरातत्त्वान्वेषण मन्दिर, जयपुर)

ग्रन्थाङ्क : 14

चारण कविया गोपालदान विरचित

कूर्मवंश यश प्रकाश

अपर नाम

लावारासा

सम्पादन कर्ता

महताब चन्द्रजी खारैड

प्रकाशक

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur

द्वितीयावृत्ति 1997 मूल्य : 56.00

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिल भारतीय तथा विशेषतः राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, राजस्थानी, हिन्दी आदि भाषा निबद्ध
विविध वाङ्मय प्रकाशिनी विशिष्ट ग्रन्थावली

प्रधान सम्पादक

पुरातत्त्वाचार्य जिनविजय मुनि

ग्रन्थाङ्क : 14

चारण कविया गोपालदान विरचित

कूर्मवंश यश प्रकाश

अपर नाम

लावारासा

सम्पादन कर्ता

महताब चन्द्रजी खारैड

प्रकाशक

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur

प्रथमावृत्ति : 1953

द्वितीयावृत्ति : 1997 मूल्य : 56.00

प्रधान सम्पादकीय

कूर्मवंश प्रकाश (लावारासा) में कच्छवाहा राजाओं एवं उनकी नरूका शाखा के वीरो द्वारा लड़े गये पांच युद्धों का ओजपूर्ण भाषा में वर्णन है। घटनाक्रम ऐतिहासिक है किन्तु कवि ने स्थान-स्थान पर आवश्यकतानुसार काव्योचित कल्पना का भी सहारा लिया है।

प्रथम युद्ध जयपुर के महाराजा जगत्सिंह एवं मारवाड़ के शासक मानसिंह के मध्य, द्वितीय युद्ध अमीरखाँ एवं नरूखाँ शाखा के वीरों के मध्य, तृतीय युद्ध लदाना युद्ध के नाम से विख्यात है जो अमीरखाँ एवं भारतसिंह के मध्य हुआ, चौथा युद्ध उणियारा नाम से तथा पञ्चम एवं अन्तिम युद्ध द्वितीय लावा युद्ध के नाम से विख्यात है।

प्रस्तुत ग्रन्थ का सम्पादन प्रकाशन सम्पादक श्री खारैडजी द्वारा प्रस्तुत प्रतिलिपि पर आधारित है। ग्रन्थ के मुद्रणोपरान्त इसकी अन्य 9 प्रतियों की जानकारी मिली। तत्कालीन निदेशक मुनिश्री जिनविजय जी का मानस था कि भावी पुनर्मुद्रण में उक्त सभी प्रतिलिपियों से पाठ ग्रहण कर एक नवीन आलोचनात्मक पाठ तैयार करवाया जावे।

इधर जब लावारासा के पुनर्मुद्रण की बात आई तो इस सम्बन्ध में काफी प्रयासों के बावजूद भी 45 वर्ष पूर्व के चिन्तन को कार्यरूप देने में व्यवधान आया क्योंकि वाञ्छित प्रतियों का अता-पता नही चला। फलस्वरुप विश्लेषणात्मक आवृत्ति का विचार त्याग कर यथास्थिति रूप में ही पुस्तक का पुनर्मुद्रण करना पड़ा। विषय नितान्तरूपेण दुःखद है किन्तु इसके अतिरिक्त कोई अन्य विकल्प भी नहीं था। जैसी भी स्थिति रही हो प्रस्तुत प्रकाशन का वर्तमान स्वरूप निस्संदिग्ध रूप में शोधार्थियों एवं विद्वानों हेतु उपयोगी रहेगा-ऐसा मेरा विश्वास है।

आनन्द कुमार
आर.ए.एस.
निदेशक

किंचित् प्रास्ताविक

'राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला' में प्राचीन राजस्थानी एवं हिन्दीके, जिन कतिपय ग्रन्थोंके प्रकाशन करनेका निश्चय, पिछले वर्षके प्रारंभमें, किया गया था उनमेंका प्रस्तुत ग्रन्थ चारण कविया गोपालदान विरचित 'कूर्मवंशयशप्रकाश' अपरनाम 'लावारासा' भी एक है जो अब इस प्रकार सुसंपादित और संमुद्रित होकर, प्रथम वार प्रकाशमें आ रहा है और विद्वानोंके कर-कमलमें उपस्थित हो रहा है।

जिस समय प्रस्तुत ग्रन्थके संपादनकर्त्ता श्री महताब चन्द्रजी खारैडसे, इस कृतिके विषयमें कुछ परिचय मिला और इनकी की हुई प्रतिलिपि देखनेमें आई, उस समय यह ज्ञात नहीं हुआ था कि इस ग्रन्थकी और भी प्रतियां कहींसे उपलब्ध हो सकती हैं। खारैडजीने जिस मूल प्रति परसे अपनी प्रतिलिपि की थी वह प्रति भी मुझे प्रत्यक्ष देखनेको नहीं मिली। अतः जैसी प्रतिलिपि खारैडजीकी थी उसीको छपनेके लिये प्रेसमें भेज दी गई। प्रेसने ग्रन्थका आधेसे अधिक भाग एकसाथ कंपोज करके भेज दिया और उसका संशोधन वगैरह हो कर उतना भाग छप गया, तब फिर प्रेसने बाकीका भाग भी एकसाथ कंपोज करके करेक्शनके लिये भेजा। उस समय अकस्मात् भगतपुरा (खूड) के निवासी उत्साही राजपूत युवक श्री सौभाग्यसिंहजी शेखावत द्वारा ज्ञात हुआ कि इस ग्रन्थकी दो-एक प्रतियां तो उनके निजके पासमें हैं और कुछ अन्य प्रतियां अन्य सज्जनोंके पास भी उनने देखी हैं इत्यादि। प्राचीन ग्रन्थोंके संपादनकी हमारी अपनी शैली है कि प्रकाशनके लिये जो ग्रन्थ तैयार किया जाय उसकी जितनी भी प्राचीन प्रतियां ज्ञात या उपलब्ध हो सकती हों, उन्हें प्राप्त करना, देखना एवं उनका परस्पर मिलान करना और फिर उनके आधार पर उसका यथाशक्य शुद्ध पाठ तैयार करके, उसे प्रेसमें छपनेके लिये भेजना। लेकिन, प्रस्तुत कृतिके विषयमें हम अपनी इस शास्त्रीय संपादन शैलीका प्रयोग नहीं कर सकें। क्यों कि जिन अन्य प्रतियोंके अस्तित्व का जब हमें परिचय मिला, तब तो इसके पाठका मुद्रण कार्य प्रायः समाप्त होने पर था। इसलिये इस ग्रन्थका प्रस्तुत प्रकाशन केवल एक ही प्रतिकी प्रतिलिपिके आधार पर किया जा रहा है और इससे इसमें शब्द, वाक्य, पंक्ति आदिकी दृष्टिसे कई प्रकारकी अशुद्धियोंका होना अनिवार्य है। यदि भविष्यमें इसके पुनर्मुद्रणका प्रसंग उपस्थित हुआ तो, उपलब्ध अन्यान्य प्रतियोंका मिलान कर, उन परसे एक विश्लेषणात्मक और अनुसन्धानात्मक आवृत्ति–जिसे इंग्रजीमें 'क्रिटिकल एडिशन' कहते हैं–तैयार होनी चाहिये।

श्रीयुत सौभाग्यसिंहजी शेखावत हमें सूचित करते हैं कि–

'लावारासा' की मेरे पास ३–४ प्रतियां हैं। एक तो मैंने हाजिर कर ही दी थी ३ प्रतियां और हैं। ये प्रतियां मुझे विभिन्न व्यक्तियोंसे उपलब्ध हुई हैं। इनमेंसे (१) एक प्रति तो मेरे प्रपितामहके पास ही थी जो कि ठिकाना खूड़में कामदार थे। (२) दूसरी कुमार श्री देवीसिंहजी, मंडावावालोंसे मिली है। (३) तीसरी सुखदानजी सिंढायच ग्राम दुलचासकी कलमी,

बारैठ प्रभुदानजी कवीरसरसे मिली है। कहते हैं कि यह प्रति गोपालदानजीकी हस्तलिखित प्रतिसे अनुकृत हुई है जो सबसे अच्छी है और मेरी प्रतिसे अधिक मिलती है। इनके सिवाय, ठाकुर बहादुरसिंह बानूड़ा (खूड़) के पास भी एक प्रति है जो पहली और तीसरी प्रतिसे मिलती है। इनके अतिरिक्त कल्याणदानजी मानदानजी कविया दीपपुरा, सीकर; ठाकुर किशनसिंहजी परसरामपुरा (उदयपुरवाटी) एवं रावराजा सरदारसिंहजी, उनिधाराके पास भी इसकी प्रतियां हैं।"

यद्यपि जैसा कि ऊपर सूचित किया गया है प्रस्तुत आवृत्ति, केवल एक ही प्रतिकी प्रतिलिपिके आधार पर संपादित हुई है अतः इसमें पाठभेद, पंक्तिभेद, छन्दभेद आदि स्थान-स्थान पर दृष्टिगोचर होंगे – तथापि इसके संपादक श्री खारैडजीने इसे यथाशक्य शुद्ध रूपमें तैयार करनेका यथेष्ट श्रम लिया है और मूलके नीचे कठिन एवं अल्पपरिचित शब्दोंका अर्थ आदि दे कर ग्रन्थके समझने समझानेका यथोचित प्रयत्न किया है। साथ ही में अच्छी विस्तृत भूमिका लिख कर ग्रन्थगत इतिहासका जो स्पष्ट दिग्दर्शन करानेका प्रयत्न किया है उससे ग्रन्थके अध्ययनकी उपयोगिता अधिक सिद्ध होगी।

सर्वोदय साधना आश्रम
चंदेरिया (मेवाड़)
दि. १०–४–५३.

जिनविजय मुनि

प्रधान सम्पादकीय

प्रस्तुत ग्रंथ 'राजस्थान पुरातन ग्रंथमाला' के अन्तर्गत 133 वें पुष्प-रूप में विद्वानों के हाथों में सौंपते हुए हमें बड़ी प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

भारतीय मध्यकालीन ऐतिह्य सामग्री में जहां फारसी के इतिहास-लेखकों को स्थान प्राप्त है, वहां राजस्थान की ख्यात, वात, वंशावली, पीढ़ियावली पट्टावली, विगत, हक़ीकत, हाल, याद, वचनिका, एवं दवावैत आदि के लेखकों की भी अनदेखी नहीं की जा सकती। इन दोनों ही प्रकार के इतिहास-लेखकों की सामग्री प्रकाशित रूप में आज हमें उपलब्ध होती है। जहाँ तक घटित घटनाओं की प्रामाणिकता का प्रश्न है वहां दोनों ही लेखकों की कलम ने अपने-अपने आश्रयदाता के गुणगान करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। फिर भी हमें क़ाफी सीमा तक ऐतिहासिक घटना-क्रम को एक दूसरे की सामग्री के तुलनात्मक अध्ययन से तथ्यात्मक विवरण उपलब्ध हो सकता है।

राजपूत राजाओं की रियासतों में 'ख्यात' लेखन की परम्परा 17 वीं शताब्दी से 19 वीं शताब्दी तक मिलती है।

प्रस्तुत ख्यात में जहां जोधपुर के महाराजा मानसिंह के कार्यकाल में प्रशासनिक अव्यवस्था, राजनैतिक उथल-पुथल, नाथ-सम्प्रदाय का बलात् विस्तार, नाथों द्वारा राज्य-कार्य में हस्तक्षेप करना, टोंक के नवाब मीर खां पिण्डारी आदि की लूट-पाट से राज्य की आर्थिक स्थिति डावांडोल रहती थी वहीं इस राज्य में मानसिंह द्वारा कवियों, लेखकों, शिल्पियों, चित्रकारों एवं संगीतज्ञों को भी अच्छा प्रोत्साहन मिला।

मानसिंह स्वयं भी एक अच्छे कवि थे जिन्होंने नाथों की भक्ति से ओत-प्रोत होकर अनेक रचनाएं कीं। इनकी कवित्व-शक्ति का एक उदाहरण देखिए —

कविराजा बांकीदास जो महाराजा मानसिंह के राज्याश्रित प्रतिभाशाली एवं विलक्षण कवि थे, के देहावसान पर मातमपुर्सी के लिए स्वयं मानसिंह उनकी हवेली पर पहुंचे थे और वहां स्वर्गीय बांकीदास के लिए मरसिये कहे थे।

सद्विद्या बहु साज । वांकी थी वांका वसू ॥
कर सूधी कवराज । आज कठी गो, आसिया ॥
विद्या कुळ विख्यात । राज-काज हर रहसी री ॥
वांका ! तो विण वात । किण आगळ मन री कहां ॥

भावार्थ है—विभिन्न साजों वाली उत्तम विद्या बांकीदास के जीवित रहते ही बांकी (निराली) थी। हे आसिया ! हे कविराज ! उसे सीधा करके (बंकिम विहीन) करके तू कहां चला गया ?

कुल-प्रसिद्ध विद्या सम्बन्धी, राज्य-कार्य सम्बन्धी, लालसा सम्बन्धी तथा आनन्द देने वाली मन की बातें आज तेरे बिना किसके समक्ष कहें ?

'ख्यात' में मानसिंह के राज्य-सिंहासनारूढ़ से प्रारम्भ होकर उसकी मृत्यु पर्यन्त राज्य-संचालन की गतिविधियों, सामाजिक, आर्थिक स्थितियों हत्याएं, लूट-पाट. राज्याश्रित जागीरदारों के पक्ष-विपक्ष में विभिन्न खेमें, नाथों व ओसवाल मुत्सद्दियों का प्रभुत्व, रनिवास में रानियों आदि के विभिन्न दल, अंग्रेजों द्वारा पुनर्गठित राज्यव्यवस्था, युवराज छत्रसिंह की हत्या के बाद मानसिंह की दुरवस्था, तत्कालीन पड़ौसी राज्यों से सम्बन्ध आदि का रोचक एवं विस्तृत वर्णन मिलता है ।

प्रस्तुत ख्यात का अविकल पाठ विभिन्न पाठों के ताल-मेल के साथ प्रथम बार प्रकाशित किया जा रहा है । इसमें राजस्थानी भाषा के साथ-साथ तत्कालीन खड़ी बोली का भी प्रयोग हुआ है ।

जहां यह ग्रंथ ऐतिहासिक सामग्री का विश्लेषण करने वाले शोध विद्वानों के लिए उपादेय होगा वहीं तत्कालीन सामाजिक व आर्थिक ढाँचा भी अनुसन्धित्सुओं के लिए महत्व का होगा ।

कुछ वर्षों पहले इसी प्रतिष्ठान द्वारा 'मारवाड़ रा परगना री विगत' जैसे महत्वपूर्ण ग्रन्थ का सम्पादन राजस्थानी भाषा के विद्वान् डा० नारायणसिंह भाटी द्वारा करवाकर प्रकाशित किया गया था । उसका इतिहास-जगत् में अच्छा स्वागत हुआ और देश के उच्च कोटि के इतिहासविदों ने उस ग्रन्थ की सम्पादन-पद्धति की भी सराहना की, और, तत्कालीन निदेशक महोदय ने डा० भाटी से आग्रह किया कि वे प्रतिष्ठान के लिए 'महाराजा मानसिंह की ख्यात' का भी सम्पादन कर दें । डा. भाटी ने उक्त अनुरोध पर यह सम्पादन-कार्य उन्हीं दिनों पूरा कर दिया था पर, प्रतिष्ठान की कुछ कठिनाइयों के कारण तब उसका प्रकाशन सम्भव नहीं हो सका । अब यह महत्वपूर्ण ग्रंथ अनुसन्धित्सुओं के उपयोग के लिए उनके समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है ।

यह ग्रन्थ शोधकर्ताओं के लिए अधिक उपयोगी हो सके इसके लिये सम्पादक महोदय ने अपनी विस्तृत भूमिका के अलावा ग्रन्थ के अन्त में नामानुक्रमणिकाएं तथा उस समय के कुछ महत्वपूर्ण पत्र भी जोड़ दिये हैं जो अब तक अप्रकाशित थे और जिनसे उस समय के मारवाड़ की कई आन्तरिक हलचलों का पता चलता है । प्रतिष्ठान के कनिष्ठ तकनीकी सहायक श्री गिरधरवल्लभ दाधीच जिन्होंने प्रूफ-शोधन आदि में उल्लेखनीय सहयोग दिया है, धन्यवाद के पात्र हैं। वैसा ही सहयोग विभाग को पंकज प्रिण्टर्स, के श्री पुखराज जांगिड़ से मिला, जिसके लिए इन्हें भी धन्यवाद देना चाहूंगा ।

जे. के. जैन

लावारासा - अनुक्रमणिका

**
*

भूमिका

वीरभूमि राजस्थान अपनी अमर वीर संतानोंकी वीरता, त्याग एवं उदारताके लिये जगप्रसिद्ध है। इसके सपूतोंकी गौरव-गाथाएँ गा कर अनेक महाकवि अपने यशको, अक्षुण्ण बना गये हैं। इन महाकवियोंने अपनी रचनाएँ राजस्थानकी प्रसिद्ध काव्यभाषा डिंगलमें की हैं। कहना नहीं होगा कि यह काव्यभाषा वीर-रसके व्यंजित करनेमें अन्य भाषाओंसे अपना स्थान कुछ ऊँचा रखती है, किन्तु यह भी बात नहीं है कि इस भाषामें अन्य रस उत्तमतासे व्यंजित ही नहीं हुए हों। इस भाषामें करुण, शृंगार और शांत रस भी बहुत सुंदरतासे व्यंजित किये गये हैं, जिनका अनूठापन चित्तको बरबस अपनी ओर आकर्षित करता है।

राजस्थानकी वीर गाथाओंको गाने वाले इन महाकवियोंमेंसे अनेक तो ऐसे थे जो स्वयं युद्धक्षेत्रमें अपनी वाणी और भुजाओं, दोनोंका चमत्कार बताते थे, जिनके रचित ग्रंथोंका उपयोग इतिहासकारोंने अपने इतिहासग्रंथोंमें किया है। इन महाकवियोंका उद्देश्य अपने आश्रयदाताओंका अत्युक्तिपूर्ण यशोगान ही नहीं था, वरन् ऐतिहासिक सामग्री एकत्रित करना भी था। ऐसे ही कवि-शिरोमणियोंमें कविया गोपाल भी थे, जिनके रचित 'कुर्मवंशयशप्रकाश' अर्थात् 'लावारासा' में दोनों उद्देश्योंका सफलतापूर्वक निर्वाह हुआ है।

प्रस्तुत पुस्तक, अर्थात् कूर्मवंशयशप्रकाश (लावारासा) स्व. पुरोहित हरिनारायणजी, बी. ए., विद्याभूषणको किसी राजपूत सज्जनसे प्राप्त हुई थी, जिनका विचार इसे प्रकाशित करा देनेका था। श्रद्धेय पुरोहितजीने यह पुस्तक सम्पादन करनेको मुझे दी। सम्पादन और टिप्पणियोंका कार्य सन् १९३७ ई. के आसपास ही समाप्त हो चुका था। भूमिकामें देनेके लिये ऐतिहासिक-सामग्री एकत्रित की जा रही थी, इधर महासमर आरंभ हो जानेसे कागज दुष्प्राप्य हो गया। सुतराम् इस पुस्तकका प्रकाशन-कार्य रुक गया। संवत् २००२ वि.में पुरोहितजी साहबके निधनसे भूमिकामें जो कुछ उनके विचार लिखे जानेको थे, वह उन्हींके साथ चले गये। अब भूमिकाका भार भी मेरे ऊपर ही आ पड़ा। मेरे लिये यह कार्य बिलकुल नवीनतम ही रहा। पुरोहितजी भूमिकामें क्या-क्या देना चाहते थे, यह मुझे इस विषयमें उनसे हुई बातचीतसे मालूम हो गया था। उसी आधार पर चल कर, प्रस्तुत सामग्री एकत्रित कर, उपस्थित कर रहा हूँ। यद्यपि इसमें अनेक प्रकारकी त्रुटियाँ पाठकोंको प्राप्त होंगी, तथापि मुझे आशा ही नहीं, विश्वास है कि विद्वान् पाठकगण मेरी अल्पज्ञता एवं प्रथम प्रयासको ध्यानमें रख कर क्षमा करेंगे।

कविया गोपालजीका यह दूसरा ग्रंथ प्रकाशित हो रहा है। इससे पूर्व इनका एक ग्रंथ श्रद्धेय स्व. पुरोहित श्री. हरिनाराणजी द्वारा संपादित "शिखरवंशोत्पत्ति पीढ़ी वार्तिक" (सीकरका इतिहास) नागरी प्रचारणी सभा, काशी, द्वारा संचालित "बालाबख्स राजपूत चारण पुस्तकमाला" में प्रकाशित हो चुका है। उस पुस्तककी भूमिकामें कविका जो परिचय अन्वेषणके पश्चात् दिया है, उसका सार पाठकोंके लिये यहाँ दे दिया जाता है –

कविया गोपालका पूरा नाम गोपालदान कविया था। यह अनेक डिंगल-पिंगल शास्त्रोंके ज्ञाता, अनन्य साहित्यसेवी एवं "बालावक्स राजपूत चारण पुस्तकमाला" के संस्थापक बारहठ श्री बालाबक्स पाल्हावतके मामा थे। इन्होंने उक्त दोनों ग्रंथोंके अतिरिक्त 'कृष्णविलास' एवं अनेक स्फुट गीत छंद बनाये थे। यह भी सुना जाता है कि उन्होंने 'काव्य प्रकाश भाषा' और 'सभा-प्रकाश भाषा' नामक दो ग्रंथ और बनाये थे। ये अभी अप्रकाशित हैं। कविने अपना परिचय 'कृष्णविलास' और 'लावारासा' में दिया है, वह क्रमशः इस प्रकार है—

कृष्णविलाससे—

कवि जन कवियो दिव्यकुल, चारण चंडीबाल।
'अलूभक्त'के, वंशमें, कहत नाम गोपाल ॥
'अलू' नंद 'नरपाल' भय, 'नरू' नंद 'मघवान'।
'मेघराजके' सुत भये, 'गिरधर' नाम सुजान ॥
'गिरधर' सुत 'माहू' भये, 'माहू' सुत 'हरिराम'।
पुत्र भये हरिरामके, 'विजयराम' गुण धाम ॥
'विजयरामके' पुत्र फिर, 'दौलतराम' बखान।
सुत भये 'दौलतरामके', ताको नाम जु 'ज्ञान' ॥
पुत्र भये फिर 'ज्ञानके' 'जलूदान' 'खुमान'।
'रामनाथ' 'श्योनाथ' ये, चार बंधु समजान ॥
हम भये पुत्र 'खुमानके', नाम 'गुपाल' कहाय।
बरन्यूं ग्रंथ नवीन यह, नृपकी आज्ञा पाय ॥

लावारासासे—

दांतोपुर दख्खिन दिसा, सीकर उत्तर कोन।
कूहर पच्छिम जानिये, पूर्व जींणको भोन ॥
ताके मध्य उदैपुरो, बसत सुकविको ग्राम।
उन्नत 'पर्वतहर्ष'को, तहँ भैरवको धाम ॥
कविजन कवियो दिव्यकुल, चारण चंडीवाल।
'अलूभक्तके' वंशमें, अह मम नाम गुपाल ॥

इन उद्धरणोंके आधार पर चारण-कुलभूषण 'गोपालदान' कविया सीकर के 'उदयपुरा' अपर नाम 'चोखाका बास' ग्रामके निवासी थे। यह ग्राम सीकरसे ५ कोस दक्षिणकी तरफ हर्षके ऐतिहासिक पर्वतसे १ कोस और 'जींणमाता'के स्थानसे दो कोस है। इनके पिताका नाम 'खुमान' था। इनके तीन भाई और एक बहिन थी। इनके दो विवाह हुए थे और पांच पुत्र और २ पुत्रियां थीं। इनकी जन्मतिथि ठीक ठीक तो ज्ञात नहीं हुई, किन्तु इनका स्वर्गवास भाद्रपद कृष्ण ४ सं.

१९४२ विक्रमाब्दमें, १५ दिनकी बीमारीके पश्चात्, अपने ग्राम उदयपुरामें, ७० वर्षकी अवस्थामें हुआ। इससे इनका जन्म संवत १८७२ वि. निकलता है। इन्होंने अपनी शिक्षा अपने काका कवि रामनाथसे और तिजारेमें–जो इलाका अलवरमें है–रह कर श्रीबलवंतसिंह रईससे प्राप्त की थी। यह श्रीबलवंतसिंह अलवरके रावराजा श्रीबख्तावरसिंहकी पासवान 'मूसी'के पुत्र थे।

'शिखरवंशोत्पत्ति पीढ़ी वार्तिक'में कविने ग्रंथ निर्माणका समय सं १९२६ वि. दिया है उस प्रकार इस ग्रंथ 'लावारासामें' नहीं दिया। यह ग्रंथ किस समय लिखा गया, इसका ठीक ठीक समय प्रमाणाभावमें कुछ बताया नहीं जा सकता है। किन्तु अनुमान ऐसा होता है कि लावारासाके पांचवे प्रसंगमें जिस युद्धका कविने वर्णन किया है, उस युद्धका होना "तवारिखे महमूदाबाद याने टोंकके" लेखक सैयद मुहम्मद असगरअली "आबरू"ने हिजरी सन् १२६५ में लिखा है। हिसाबसे यह हिजरी सन् संवत् १९१० वि.में पड़ता है। इससे यह तो निश्चय हो जाता है कि सं. १९१० से पूर्व यह ग्रंथ नहीं बना। और यह भी निश्चित ही है कि इस समयके पांच दस वर्ष बाद भी इतना जल्दी यह ग्रंथ नहीं बना होगा। मेरा अनुमान यह कि इस ग्रंथका निर्माण "शिखर-वंशोत्पत्ति पीढी वार्तिक"के पश्चात् सं १९२६ वि.के पश्चात् होना चाहिए। एक ऐतिहासिक ग्रंथकी समाप्तिके बाद वैसा ही दूसरा ग्रंथ लिखनेकी प्रवृत्ति होना स्वभावतः उचित प्रतीत होती है। 'लावारासा'में कविने ग्रंथ-निर्माणका उद्देश्य भी कुछ ऐसा ही प्रकट किया है–

सूरवीर रजपूत कुल, कवि चारण कुल जानि।
जो न बहत निज धर्मजुत, दहुँ कुल दीरघ हानि ॥
आदि धर्म छिति छत्रकुल, पूरन पैंज प्रतीत।
दान करन मारन मरन, रजपूतों यह रीत ॥
सँग रहनो संपति-विपति, सुख दुःख सहनो सत्थ।
कीरत कहनो दान जुध, कुल चारण यह कत्थ ॥
याते हम यह ग्रंथमें, परिश्रम कियो अपार।
सुजस कच्छ कुलको कियो, अपनी मति अनुसार ॥

इससे यह प्रकट है कि कविने अपना पूर्ण अधिकार समझ कर इस ग्रंथकी रचना की। इसका रचना-काल जैसा कि ऊपर अनुमान किया गया है–सं १९२६ वि.के पश्चात् सं १९३० वि.के आसपास होना चाहिए।

प्रस्तुत ग्रंथ 'लावा रासामें' कविने अपनी डिंगल भाषाको छोड़ कर, शताब्दियोंसे क्रमशः विकसित होती आ रही उस राजस्थानी भाषाका प्रयोग किया है, जो उत्तर-भारतमें गुजरातसे अंतरवेद (प्रयाग) तक प्रचलित थी। इसके साथ ही इस ग्रंथमें फारसी, अरबी, संस्कृत, डिंगल और राज-स्थानके देशी शब्दोंका कविने प्रयोग किया है। इसके अतिरिक्त मुसलमानोंके मुखसे खड़ी बोली

और पंजाबीके पुटसे युक्त भाषाका कविने प्रयोग कराया है। ग्रंथमें वर्णन, प्रसंग और रसके अनुकल काव्यके रीतिग्रंथोंके अनुसार किया गया है। स्थान २ पर वर्णनको सजीव करनेके लिए उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षादिका प्रयोग उत्तम रीतिसे किया गया है। जैसे—

"जम्बूर रन्ध्र रन्ध्रके, गिरेन्द्रसे रसै लवै"।
"हूर अपच्छर सूर बरि, बैठि विमाननि जात।
दम्पति मानहु तीज दिन्, डुलहर बैठि डुलात"॥
"चलत सोर साबात, मनहु डंडुर बूंद घन"।

और भी "कितेक हूर अच्छरी, विमान बैठि ऊतरी, कितेक जात व्योमको मनो अरठ्ठ की घरी"। एक स्थान पर उत्प्रेक्षाओंकी छटा देखिये—

आसुरके उर मध्य, •दन्त अन्तक सम बसिय।
यानहु रन्ध्र मुसाल, खंभ ज्वाला गनि जैसिय॥
बसन वेधि कटाक्ष कोर कुलटा दृग कढ्ढिय।
हढ्ढ वेधि जम हुढ्ढ, येम तन पारऊ कढ्ढिय॥
ऊधरी जानि सम्पा जलद, चुवत श्रोन रंग जढ्ढियो।
मानहु कुमारि जावक सहित, करवातायन कढ्ढियो॥

इसके अतिरिक्त और भी कई स्थल हैं जिन्हें पाठकगण यथास्थान देखेंगे। सम्पूर्ण ग्रंथ वीररस-प्रधान है। अतः इस रसके अनुकूल ही छंदोंका प्रयोग कर वर्णनीय दृश्यको साकार बना दिया है। वैसे इस ग्रंथमें दोहा, सोरठा, छप्पय, दुर्मिल, भुजंगप्रयात, मोतीदाम, भुजंगी, त्रोटक, निसाणी और पद्धरी छंदोंका प्रयोग बहुलतासे है, इसके साथ ही त्रिभंगी, बेक्खरी, नाराच, दीर्घनाराच, और बेताल छंदोंका भी कहीं-कहीं प्रयोग है। परन्तु इन छंदोंके प्रयोगमें कविने बड़ी दक्षता दिखाई है। किस वर्णन अथवा विषयमें कौन सा छंद उपयुक्त होगा, जिससे प्रसंग सजीव एवं साकार हो उठे, वैसी ही लय वाला छंद प्रयोग कर, कविने अपनी विशेषता प्रकट की है। यथास्थान पाठकगण इसका अनुभव करेंग। इसके साथ ही पाठकगण यह भी अवलोकन करेंगे कि जिस विषयका कविने वर्णन आरंभ किया है, उसका शब्दों द्वारा अविकल चित्र सामने उपस्थित कर दिया है। इससे यह न समझा जावे कि वर्णनमें कविने कोई दोष ही नहीं आने दिया है। एकाध ऐसे भी स्थल हैं, जहाँ कवि वर्णन-प्रवाहमें बह भी गया है। यथा—

"चलावत अंकुशतें हुजदार, मनो गिरिके सिर वज्र प्रहार"।
"भरि बत्थ बत्थ गलबाँहि करि, ऐम असुर हिन्दुव मिलत।
मानहु अनेक दिन बीछुरे, उर मिलाय बंधव मिलत"॥

उक्त दोनों स्थल चिन्तनीय हैं। एक स्थान पर वर्णन कुछ टूटा हुआ-सा ज्ञात होता है। 'लदानायुद्ध' प्रसंगमें जहाँ मीरखां अपने परिवारके कैद होने पर शोक प्रकट कर रहा है, उस स्थान पर शोक करते करते ही एक दम चढ़ाईका वर्णन उचित प्रतीत नहीं होता। ऐसा लगता है कि इन दोनों स्थलोंके मध्यमें कुछ अंश छूट गया हो, यदि इनको जोड़नेके लिए कवि कुछ बीचमें और कहता तो ठीक होता। ऐसे एकाध स्थलको छोड़ कर सब प्रकारसे ग्रंथ सुंदर है। फिर भी हणुतिया ग्रामके पाल्हावत बारैठ श्री चतरदानने जो स्व. श्री बालावक्सजीके काका थे, निम्नांकित दोहा 'लावारासा'के विषयमें रच कर कविया गोपालदानकी खिल्ली उड़ाई है—

"चोर चोर तुक चंदकी, ग्रंथ बणायो गोप।
मीसण सूरजमल्लकी, उचक लई कछु ओप।।

इस दोहे में उक्त पाल्हावत बारैठने लावारासाको महाकवि चंदके 'पृथ्वीराज-रासा'से और बूंदीके महाकवि सूर्यमलके 'वंशभास्कर'से तुकें और उपमायें चुरा कर बनाया हुआ इंगित किया है। मैंने पृथ्वीराज रासा और वंशभास्करका कई स्थलोंसे अध्ययन किया है। मुझे तो पृथ्वीराज रासाकी भाषामें और लावारासाकी भाषामें कहीं भी समानता प्रतीत नहीं हुई, तुकोंकी चोरीकी बात तो अलग रही। महाकवि चंद और कविया गोपालदानकी भाषा और वर्णन शैलीमें रातदिनका अन्तर है। इसका निर्णय तो पाठकगण स्वयं भी, पृथ्वीराज रासाके अध्ययनसे कर सकते हैं। रही उपमाओंको चुरानेकी बात ; उपमा, उत्प्रेक्षा, आदिकी चोरी, चोरी नहीं कहीं जा सकती है। पूर्ववर्ती कवियों द्वारा प्रयुक्त उपमा, उत्प्रेक्षा आदिका ग्रहण परवर्ती कवियों द्वारा होता ही आ रहा है। इसमें चोरीका दोष नहीं। माना कि एक कविने मुखको चंद्रमा कहा और अन्य कवियोंने उसका अनुकरण किया तो इसमें चोरी क्या ? इसमें तो कहनेकी शैलीका पार्थक्य ही मौलिकता का मूल कारण है। कविया गोपालदान और महाकवि सूर्यमल समवयस्क और समकालीन थे। कविया गोपालने अपने काका रामनाथके साथ महाकवि सूर्यमलसे बूंदीमें भेंट की थी और कवि गोपालने वंशभास्करका श्री रामनाथसे अध्ययन भी किया था, जिसका प्रभाव उसके चित्त पर पड़ा था। लावारासामें यह प्रभाव झलकता अवश्य है, परन्तु इसे चोरी कदापि नहीं कही जा सकती। वास्तवमें बात यह है कि उक्त दोहा केवल हास्य मात्र है, क्योंकि कवि गोपालदान और पाल्हावत श्री चतरदान आपसमें ब्याई (समधी) थे। इसके साथ-साथ आपसमें गहरे स्नेही भी। इनमें आपसमें हास्य उपहास्य निरंतर होता रहता था, जिसके पचासों छंद प्रसिद्ध हैं। श्री चतरदान, गोपालदानकी और श्री गोपालदान श्री चतरदानकी, इस प्रकार अवसर प्राप्त होने पर, हँसी उड़ाया ही करते थे, जिससें मनमुटाव लेश मात्र भी नहीं रहता था। कविया गोपालदानने भी एक दोहे में श्री चतरदान पाल्हावतकी खूब खबर ली है—

"सांपिन, बीछिन, गोहरी, ल्यालन पाल्हन-नार।
बांझ रहेतें बहुत गुन, ब्याये करत बिगार।।"

अस्तु, उक्त "चोर-चोर तुक चंदकी" दोहेमें सिवाय हास्यके और तथ्य नहीं है।

'कूर्मवंश यशप्रकाश में' (लावारासा में) कविने कछवाहों एवं उसकी नरूका शाखाके वीरों द्वारा लड़ी हुई लड़ाइयोंका रोचक ढ़ंगसे ओजपूर्ण शब्दोंमें वर्णन किया है। इस ग्रंथमें ५ युद्धों का, ५ प्रसंगोंमें वर्णन है जिसका कथासार क्रमशः इस प्रकार है —

[१] प्रथम प्रसंग

इस प्रसंगमें शिव स्तुतिके पश्चात्, जयपुराधीश महाराज श्री जगतसिंह और जोधपुरपति महाराज श्री मानसिंहके युद्धका वर्णन है। इसमें पोकरणके ठाकुर चांपावत सवाईसिंहने जोधपुरकी गद्दीका उत्तराधिकारी धौकलसिंहको मान कर, मानसिंहके विरुद्ध, सवाईजगतसिंहको अपनी ओर करके आक्रमण किया। इस युद्धमें स. जगतसिंहके साथ खेतड़ीके राजा अभयसिंह, महणसरके ठाकुर लक्ष्मणसिंह, दीवान रायचंद, गोगावत रायचंद, सीकरके लक्ष्मणसिंह, खंडेले, नवलगढ़, दांता, उणियारा, धूला, झिलाय, नाथावत और राजावत सरदार, बीकानेरके सूरतसिंह और अमीरखां अपनी अपनी सेना सहित सम्मिलित हुए। यह युद्ध परबतसर (जोधपुर राज्य) के पास हुआ। युद्धके कुछ दिन बाद महाराज मानसिंहके सहायक गण, कुचामन ठाकुरके अतिरिक्त, उनका साथ छोड़ कर महाराज स. जगतसिंहकी ओर मिल गये। इससे महाराज मानसिंहको भाग कर जोधपुरके किलेकी शरण लेनी पड़ी। महाराज स. जगतसिंहने धौकलसिंहको नागोरमें गद्दी पर बैठा कर, जोधपुर पर आ कर घेरा डाल दिया। फिर महाराज सवाई जगतसिंह तो जयपुर लौट आये। इधर महाराज मानसिंहने अमीरखांको अपनी ओर मिला लिया। उसने छलबल करके मारवाड़को लूटा। सवाईसिंहको मार डाला। फिर ढूंढाड़में आ कर लूटमार करने लगा। महाराज जगतसिंह अपने राग रंगमें ही लगे रहे।

[२] द्वितीय प्रसंग – प्रथम लावा युद्ध

अमीरखांने ढूंढाड़में बहुत लूटमार की, किन्तु महाराज स. जगतसिंहने इसका कोई प्रबंध नहीं किया। इस प्रकार लूटमार करता हुआ वह लावाके समीप आया और वहीं अपने डेरे खड़े करवा दिये। उस समय मुन्नूखांने कहा कि किलेमें बहुत धन है। यदि आज्ञा हो तो युद्ध किया जावे अथवा कुछ लेने-देनेकी बात की जावे। इस पर नवाबके चाचा मीर मुल्लाखांने कहा कि ये नरूके राजपूत सदासे बहुत ही प्रबल रहे हैं, इनसे युद्ध करना उचित नहीं है। देखो सैयदोंने आँमेर और जोधपुरने सांभर पर युद्ध किया था, उस समय वे दोनों जो हार गये थे तब इन नरूके राजपूतोंने ही सैयदोंसे उसी स्थान पर लोहा लिया था और बादशाही सेनाके माही मुरातब छीन कर आँबेरपति सवाई जयसिंहको ला दिये थे। इससे इन नरूकोंसे तो 'लेने-देनेंकी ही बात तै करनी

चाहिए। किन्तु अमीरखांने इसकी बात नहीं मानी और किलेको घेर लिया। लावा-पतिने भी प्रत्युत्तर अच्छा दिया। इस प्रकार यह युद्ध छै मास तक चलता रहा। इसमें नरूकोंका प्रसिद्ध वीर सहलसिंह मारा गया, मीरखांकी भी बहुत हानि हुई। इससे वह बहुत घबरा गया। अंतमें 'लेने-देने'की बातचीत आरंभ कर धोखेसे कंवर हनुमंतसिंहको पकड़ कर और घेरा उठा कर चल दिया।

[३] तृतीय प्रसंग – लदाना-युद्ध

इस प्रकार हनुमंतसिंहको ले कर अमीरखां वहाँसे चला गया। यह बात खुमानसिंहको बहुत ही खटकी। वह लावासे लदाने गया, और वहाँ कँवर भारतसिंहसे बातचीत की। भारतसिंहने युद्धकी तैयारी की और माधवनग्रका (माधवराजपुरका) किला अपने अधीन कर, एक पत्र अमीरखांको लिखा कि या तो तुम कुंवर हनुमंतसिहको छोड़ दो या युद्धके लिये तैयार हो जाओ। पत्र पाने पर अमीरखां बहुत क्रुद्ध हुआ और उसने पत्रका प्रत्युत्तर दिया कि हमने लावाके युद्धमें दो लाख रुपये खर्च किये हैं, इसलिये हनुमानसिंहको छुड़ानेके लिए दो लाख रुपये दो, नहीं तो हम भी युद्धके लिये तैयार हैं। यह बात जब आसमानखांने सुनी तब उसने अमीरखाँसे अर्ज की कि आपको ऐसा उत्तर देना उचित नहीं है। मुझे कल ही एक स्वप्न आया है कि उसने (भारतसिंहने) आपकी स्त्रियों आदिको कैद कर लिया है। इस पर बड़ा भयंकर युद्ध हुआ है। इस युद्धमें हमारी बहुत बड़ी हानि हुई है। इसलिए पत्र सोच समझ कर भेजा जावे। इस तरह आसमानखांने बहुत समझाया किन्तु अमीरखांने एक भी बात नहीं सुनी। अंतमें दूतको उत्तर दिया कि वह (भारतसिंह) हमारे पांवोंमें आ कर गिरे और दंड स्वरूप हमको रकम दे। यह समाचार दूतने आ कर भारत-सिंहको कहे। भारतसिंहने क्रुद्ध हो कर अमीरखांकी बेगमोंको जो उस समय 'टोरड़ीमें' थीं पकड़ लिया। जब यह बात अमीरखांको ज्ञात हुई तो वह अत्यन्त ही क्रोधित हुआ और उसने माधवराजपुरे पर चढ़ाई कर दी। यह युद्ध नौ महिने तक चलता रहा। इसमें अमीरखांकी बहुत हानि हुई। अंतमें उसने एक दूत भारतसिंहके पास भेजा और कहलाया कि आप हमारे कुटुम्बको छोड़ दीजिये, हम हनुमंतसिंहको छोड़ देंगे। भारतसिंहने इसका उत्तर भेजा कि तुम हनुमंतसिंहको तो छोड़ ही दो और अपनी बेगमोंको छुड़वानेके लिए एक लाख रुपया हर्जानेका दो। यदि यह अस्वीकार हो तो युद्धके लिए तैयार रहो। अंतमें विवश हो कर अमीरखांको हनुमंतसिंहको छोड़ना पड़ा और एक लाख रुपये और अनेक वस्तुएँ भारतसिंहको भेजीं। इस प्रकार अपनी बेगमोंको छुड़ा कर अमीरखां वहाँसे चला गया।

[४] – चतुर्थ प्रसंग – उणियारा-युद्ध

यहाँसे अमीरखां अजमेर जियारतको गया। वापिस आते समय उसने सांभरको लूटा। इस समय तक राजस्थानमें अंग्रेजोंके पाँव बहुत कुछ जम गये थे। अंग्रेजोंने सांभर पर

आ कर अमीरखांको घेर लिया। फिर अंग्रेजी सरकारने अमीरखांको टोंक आदि दिला कर उसे नवाब बना दिया। कुछ दिनों बाद अमीरखांका देहान्त हो गया। अब टोंकका स्वामी उसका पुत्र वजीरउद्दौला हुआ। टोंककी सीमा पर उणियारा एक ठिकाणा है। वहाँके स्वामीका भी स्वर्गवास हो गया। उनके स्थान पर फतहसिंह वहाँके स्वामी हुए। स्वर्गवासी उणियारे नरेशने बंभोरका किला अपने दूसरे पुत्रको दिया था। उसने आपसी झगड़ेसे वह किला टोंक वालोंको दे दिया। जब यह किला टोंक वालोंके हाथमें आ गया तब उणियारे वालोंकी कुछ और जमीन भी अपने अधिकारमें कर ली। जब यह बात फतहसिंहको ज्ञात हुई तो उसने अपने सिपाही वहाँ भेजे। इस स्थान पर एक छोटा युद्ध हो गया जिसमें २० व्यक्ति मुसलमानोंके मारे गये और बाकीके भाग गये। वजीरउद्दौलाको जब यह समाचार ज्ञात हुआ तो उसने एक सेना उणियारेकी ओर भेजी। उस सेनाने वहाँ जा कर बहुत उत्पात किया। फतहसिंहने भी मुसलमानी सेनाको दबानेके लिये अपनी सेना भेजी। कई दिन तक घमासान युद्ध चलता रहा। अंतमें मुसलमानी सेनाके पांव उखड़ गये और वे युद्धस्थल छोड़ कर टोंक भाग गये।

[९] पंचम प्रसंग – द्वितीय लावा-युद्ध

द्वितीय लावा-युद्धके समय लावाके स्वामी कर्णसिंह थे। एक समय भावनगरका एक पहलवान टोंकमें आया। नवाब वजीरउद्दौलाने उसका बहुत सम्मान किया और उसे अपना 'उस्ताद' बना लिया। जब वह जाने लगा तो नवाबने उसे बहुत द्रव्य आदि भेंटमें दिये। जब वह पहलवान टोंकसे विदा हो कर जा रहा था उस समय आगे आ कर मार्ग भूल गया और वह अपने साथियों सहित लावाकी ओर आ निकला। वह लावाके बाहर तालाबके किनारे महादेवके मंदिरके पास ठहरा। प्रातःकालका समय था, लावाका कोई राजपूत सुभट महादेवकी पूजन करनेको आया था। उसने महादेवकी पूजन की, और गाल बजा कर स्तुति करने लगा। उसके कपोलोंकी आवाज उस पहलवानने बाहरसे सुनी और सुनकर वह जूते पहिने हुए ही मंदिरमें प्रवेश करने लगा, उसको कई व्यक्तियोंने अंदर जानेसे रोका परन्तु वह उन्मत्त नहीं रुका। अंदर जाने पर उस सुभटने भी पहलवानको निकालना चाहा उस पर दोनों ओरसे तरवारें निकल पड़ीं। एक छोटा-सा युद्ध हो गया, सम्पूर्ण देवालय रक्तसे रंग गया। वह पहलवान अपने साथियों सहित मारा गया। एक छोटा लड़का बचा, वह भाग कर रोता-रोता नवाबके पास आया और उसने सम्पूर्ण कथा सुनाई। इस पर नवाब बहुत क्रुद्ध हुआ और उसने लावा पर चढ़ाई करनेकी आज्ञा दे दी। इस पर स्वर्गवासी नवाबके चाचाने उसे बहुत समझाया किन्तु उसने एक भी नहीं सुनी और अपनी सेना ले कर लावा पर चढ़ाई कर दी। बनास नदीके किनारे अपने डेरे डाले। इस युद्धमें नवाबके साथ जावरे भावनगर आदिकी भी सेना थी। लावाके स्वामी कर्णसिंहने भी प्रतिकारका प्रबंध किया। इस युद्धमें फतहसिंह उणियारेसे, हनुमंतसिंह श्योरासे, भारतसिंह लदानेसे और चोरूं महरूयाके

स्वामी भी लावाकी सहायतार्थ सम्मिलित हुए। कर्णसिंहके एक भाई अलवरमें थे। उनको भी सूचना भेजी गई। वह अपनी और अलवरकी सेना सहित आये। मारोठके मेड़तिया राठौड़ सुजानसिंह भी इस युद्धमें अपने दलबल सहित सम्मिलित हुए। युद्ध आरंभ हो गया। इधर पन्नासिंहने टोंकको जा घेरा और वहां लूटमार करने लगा। यह समाचार नवावको भी मिले। युद्ध भयंकर होता जा रहा था। नवावका सेनापति मंसूरखां मारा गया। तव कुतव्बीखांने वड़े कौशलसे हमला किया। इस हमलेको सुजानसिंहके दरोगा हाजर्याने बड़ी वीरतासे रोका और अंतमें वह वीरगतिको प्राप्त हुआ। इधर कुतव्बीखां भी मारा गया। अब युद्धकी बागडोर स्वयं नवाबने संभाली। बहुत भयंकर युद्ध हुआ। मुसलमानी सेनाके पांव उखड़ गये। वह छिन्नभिन्न हो कर इधर उधर भाग निकली। नरूकोंकी सेनाने बहुत दूर तक उनका पीछा किया और छोड़ी हुई युद्ध-सामग्रीको अपने अधिकारमें करके वापिस लौट आई।

इसके अनन्तर कविने अपना परिचय तथा ग्रंथनिर्माणका कारण बताया है।

ऊपर कुर्मवंशयशप्रकाशके (लावारासा) के पांचों प्रसंगोंका जो कथासार दिया गया है, वह सत्य घटनाओंके आधार पर, कवि द्वारा कल्पना शक्तिसे काव्यत्वके रूपमें, प्रस्तुत किया गया है। इनमें प्रथम प्रसंगकी घटनाको छोड़ कर बाकी चारों प्रसंगकी घटनायें कछावाहोंकी नरूका शाखा और मुसलमान लुटेरोंके मध्य हुए युद्धोंके वर्णनकी हैं। इनका परिचय देनेसे पूर्व, तत्कालीन परिस्थितियों और वातावरणका सिंहावलोकन कर लेना उपयुक्त होगा।

अठारवीं शताब्दीका अंतिम चरण और उन्नीसवीं शताब्दीका आदि चरण, सम्पूर्ण भारतीय जनताके लिए दुर्भाग्यपूर्ण, अशांत एवं निकृष्टतम था। देशमें चारों ओर लूटमार एवं अराजकताका साम्राज्य था। वंगालमें ईस्ट इंडिया कम्पनीके कर्मचारियोंके अत्याचारोंसे जनता पिसती जा रही थी। मध्यप्रदेश और राजस्थान प्रांत मराठे, *पिंडारी और पठान

---

* पिंडारी लोग दक्षिणमें कर्णाटकके निवासी थे। घास काट कर बेचना इनका मुख्य आजीविका कार्य था। ये पहिले हिन्दु थे बादमें मुसलमान हो गये। ये गोमांस नहीं खाते थे और देवताओंकी पूजा और व्रत उपवास भी करते थे। इनमें अनेक जातियोंके मिल जानेसे यह संकर जाति बन गई। कहते हैं कि ये लोग पिंड नामक शराबका अधिक सेवन करनेसे पिंडारी कहलाने लग गये। बादमें इन लोगोंने अपनी आजीविकाका साधन दस्युवृत्ति बना लिया था। औरंगजेबके शासनकालमें इन पिंडारी दस्युओंका नेता पुनप्पा बहुत प्रसिद्ध हुआ है। मुगल सेनाओंसे इसके कई युद्ध हुए थे। जब मुगल दक्षिणमें अपना आधिपत्य फैला रहे थे उस समय ये पिंडारी महाराष्ट्र सेनामें भरती हो गये थे। धीरे धीरे ये लोग भयंकर अत्याचारी और दारुण प्रजापीड़क हो गये थे। पानीपतकी तीसरी लडाईमें चिंगली और हुल नामक दो सरदार पंद्रह हजार सवारोंके साथ उपस्थित थे। पेशवा बाजीराव प्रथमने जब मालवा पर आक्रमण किया था, उस समय गाजीउद्दीन पिंडारीने पेशवाकी सहायता की थी। इसी समयसे ये लोग मालवामें बस गये थे। मालवामें इनके बसनेके पश्चात् तुकोजीराव होल्कर और महादजी सेंधियाने इन लोगोंको अपनी सेनामें भरती कर लिया था। तभीसे इनके दल होल्करशाही और सेंधिया-शाहीके नामसे विख्यात हो गये थे। तलवार और भाला इनके मुख्य अस्त्र थे। पंद्रह व्यक्तियोंके दलके पीछे एक बंदूक भी इन लोगोंके पास थी। घोड़ेकी सवारीमें ये लोग बहुत ही तेज थे। ये

लुटेरों द्वारा आये दिन रोंदे जा रहे थे। मुगल सम्राटके हाथ नाम मात्रकी सत्ता थी। वह इनका कुछ भी प्रतिकार करनेमें असमर्थ था। राजस्थानके नरेश भी बलहीन हो रहे थे। ये लोग इन लुटेरोंको इनके उपद्रवोंसे बचनेके लिये अच्छी रकम देते थे, किन्तु ये लोभी लुटेरे अधिक प्राप्तिके लिए अपने उपद्रव बंद ही नहीं करते थे। इन दस्युओंमें पठानों की संख्या अधिक थी। इनका प्रमुख अमीरखां अत्यन्त चतुर, बुद्धिमान एवं शक्तिशाली था। उसने राजस्थान विशेष कर ढूँढाड़में अपनी कार्यवाहियाँ अधिक दिखलाई थीं, जिससे धन-जनकी इतनी अधिक हानि हुई थी कि उसका अनुमान लगाना कठिन है। इसके साथ इतने अधिक भयंकर और बर्बरतापूर्ण युद्ध हुए थे, जिनकी कथा सुनने मात्रसे कायरोंके जी दहल उठते हैं और वीरोंके भुजदंड फड़क उठते हैं। उस समयमें बहुत ही कम मनुष्य ऐसे रहे होंगे, जो इन युद्धोंमें सम्मिलित न हुए हों और इन युद्धोंमें इतने अधिक व्यक्ति काममें आये थे कि जिनका स्मरण आज भी जयपुरमें एक कहावत द्वारा किया जाता है। जब कोई व्यक्ति किसी अन्य व्यक्तिकी खोज करता हुआ किसीसे प्रश्न करता है तो उसे उत्तर मिलता है कि वह तो मीरखांकी लड़ाईमें मारा गया। अस्तु। इस ग्रंथ अर्थात् 'लावारासा' में अमीरखां और उसके पुत्रसे हुए युद्धका चार प्रसंगोंमें वर्णन है। यह अमीरखां ढूंढाड़ में अमीरखां पींडारीके नामसे प्रसिद्ध था। यद्यपि यह पिंडारी नहीं था, पिंडारी दस्युओंकी प्रसिद्धिसे पिंडारियों जैसे कार्य करनेसे (लूटमार करनेसे) यह इस नामसे विख्यात हो गया था। यह पठान था जैसा कि निम्नांकित अवतरणोंसे प्रकट होगा–

इतने शीघ्रगामी थे कि एक एक दिनमें चालीस-पचास मीलका सफर कर जाते थे। यही कारण था कि इनका पीछा नहीं किया जा सकता था। इन्हें वेतन नहीं दिया जाता था। ये लूटके द्रव्यसे संतोष कर लेते थे। इन दिनों करीमखां, वासिल मुहम्मद और चीतू पिंडारियोंके मुख्य सरदार थे। सेंधिया और होल्करने करीम और चीतूको नर्मदाके किनारे जागीरें दे रखी थी। अतः ये नबाव कहलाते थे। इन लोगोंने दस्युवृत्तिमें अत्यधिक धन और शक्ति संचय कर ली थी। इनके इस अभ्युदयसे सेंधिया भी भयभीत हो गया था। अंतमें कुछ लोभ दे कर इन्हे कैद कर लिया था। चीतूने ७ लाख रुपया दे कर ४ वर्ष पश्चात् मुक्ति प्राप्त की। मुक्ति लाभ कर उसके हृदयमें प्रतिहिंसानल धधक उठी। फिरसे सेना एकत्रित कर सेंधियाके अधिकृत प्रदेशोंमें घोर अत्याचार करने आरंभ कर दिये। अंतमें सेंधिया दौलतरावने भूपालके पश्चिम प्रांतवर्त्ति प्रदेशमें और भी ५. जगीरें दे कर उससे अपना पिंड छुड़ाया। करीमको उसकी माताने सेंधियाको छै लाख रुपया दे कर छुड़ाया। इसने भी अपने दलमें सम्मिलित होते ही सेंधियासे बदला लेना आरंभ किया। किन्तु यह सेंधियाका अच्छी तरह सामना न कर सका और भाग कर अमीरखांकी शरणमें आ गया। इन पिंडारियोंके दारुण अत्याचारोंसे मालवा, राजस्थान, दक्षिण और ब्रिटिश शासनाधिकृत प्रांतवासी अत्यन्त त्रस्त हो गये थे। अतः अंतमें लार्ड हेस्टिंगजने इन दस्युओंकी ३४००० सेनाका दमन करनेके लिए एक लाख २० हजार सेना एकत्रित की। पहिले नई संधियोंके अनुसार; मराठोंकी शक्ति अच्छी तरह जकड़ी गयी। फिर पिंडारियों पर चारों ओरसे आक्रमण आरंभ किये गये। इतनी बड़ी सेनाका सामना करना हंसी खेल नहीं था। करीमखांने हथियार डाल दिये, उसको गोरखपुरके जिलेमें एक जागीर दे दी गई। वासिल मुहम्मदने निराश हो कर आत्महत्या कर ली। चीतू कुछ दिनों तक लड़ता रहा अंतमे वह जंगलमें भाग गया, जहां उसको एक चीतेने खा डाला। इनके दल छिन्नभिन्न कर दिये गये। इस तरह सन् १८१८ ई० में पिंडारियोंका अंत हो गया।

कहते हैं कि खुदावन्द करीमने व्यक्तियों पर राज्य करनेके लिए मलिक तालूतको उत्पन्न किया। उसके दो पुत्र हुए, बुरहिया और अरमिया। अरमियाके अफगानिया नामक पुत्र हुआ और बुरहियाके आसफ नामक। आसफ राज्यका मंत्री नियुक्त हुआ और अफगानिया राज्यका सेनापति। इसी अफगानियाकी संतानें अफगान नामसे प्रसिद्ध हुई और उनकी जीविकाका आधार शस्त्र रहा। अफगानियाकी संतानोंमें आगे चल कर अब्दुलरशीद नामक व्यक्ति बहुत ख्यात हुआ जिसने 'पठान' की उपाधि धारण की। तबसे ये अफगान 'पठान' कहलाने लगे।

इन पठानोंमेंसे कालेखां बुनरवाल सालारजईका पुत्र ताबिलखां उर्फ तालेखां जोहड-बनीर देहलीके मुहमदशाह बादशाहके समयमें भारतमें आ कर नवाब अली मुहम्मदके यहाँ नौकर हुआ। जब मुहम्मदशाह बादशाहने नवाब अली मुहम्मद पर चढ़ाई की तो तालेखां भी दूसरे अफगानोंके साथ साथ नवाबका साथ छोड़ कर तरीनासरायके निकट आ कर बस गया। नवाब अलीमुहम्मदके मरनेके कुछ समय पश्चात् तालेखां भी यहीं पर मर गया। उसके पुत्र मुहम्मदखांको नवाब अलीमुहम्मदके सेनापति दूंदेखांने फिर अपने पास नौकर रख लिया, दूंदेखांके मरनेके बाद मुहम्मद हयातखांने नौकरी छोड़ दी और कुछ जमीन ले कर खेतीबाड़ीका कार्य आरंभ कर दिया। सन् ११८२ हिजरी तदनुसार सन् १७६४ के मई मासमें उसके एक पुत्र हुआ जिसका नाम अमीरखां रखा गया। अमीरखां बाल्यावस्थासे ही होनहार वीर मालूम होता था। छः सात वर्ष खेल कूदमें व्यतीत हुए। वह बादशाह और वजीरका खेल अधिक पसंद करता था। वह स्वयं बादशाह बन जाता था। अपने दूसरे साथियोंमेंसे किसीको वजीर, किसीको सेनापति, किसीको सिपाही आदि बना कर अपने बाल-स्वभावानुसार क्रीड़ा किया करता था। यहाँ तक कि जो कुछ उसे खरचनेको पैसे अपने माता-पितासे प्राप्त होते थे, इस खेलमें अपने साथियोंमें बांट दिया करता था। उसके इस स्वभावसे उसके माता-पिता अप्रसन्न थे। वे कई दफा डांट भी चुके थे कि यदि तेरी ऐसी ही आदत रही तो तू घरमें कुछ भी न रख सकेगा। लेकिन इस महत्वाकांक्षी बालकके हृदय पर इन सबका कुछ भी असर नहीं होता था। उसका यह स्वभाव जैसेका तैसा बना रहा। एक दिन एक पहुँचे हुए मुसलमान महात्माने इसे महत्वाकांक्षी और भाग्यशाली देख कर कहा कि क्या तू महत्वाकांक्षाका दूध पियेगा? दूधका नाम सुन कर अमीरने बाल स्वभावानुसार पीने की इच्छा प्रकट की। उस महात्माने शराब का प्याला भर कर अपने होठों से लगाकर अमीरको दिया। अमीरने कभी शराब देखी भी नहीं थी। जैसे ही उसने प्याला अपने होठोंसे लगानेके लिए ऊँचा उठाया कि शराबकी गंध नाकमें पहुँची और प्याला जमीन पर फेंक कर उसने महात्माको सैकड़ों गालियां दीं। उस महात्माने उसकी गालियोंकी ओर ध्यान न दे कर उससे कहा "अरे मूर्ख, तेरी आशाओं और महत्वाकांक्षाओंका प्याला तेरे हाथमें था जिसको तूने नासमझीसे फेंक दिया, जा तेरे भाग्यमें यही था।" अमीर उस समय तो कुछ समझ नहीं सका किन्तु बड़े होने पर इस घटनाका स्मरण कभी उसे सुखद प्रतीत नहीं हुआ।

इस प्रकार अमीर अपनी बाल्यावस्था व्यतीत कर बड़ा हुआ। जब यह १५ वर्षके लगभग हुआ होगा, इसने अपनी महत्वाकांक्षाको पूर्ण करने और भाग्यकी परीक्षा करनेका विचार किया। इससे इसके माता-पिता अत्यंत स्नेह रखते थे और इसे कहीं जाने नहीं देते थे, अतः माता-पिताकी आज्ञा प्राप्त किये बिना ही यह घरसे निकल पड़ा। यह घरसे लखनऊ गया, फिर वहाँसे मेरठ आया। यहाँ गुलाम कादिरखांकी सेनामें संमिलित हो गया। किन्तु इच्छानुसार सफलता प्राप्त नहीं हुई। इससे यह समझ कर कि बिना माता-पिताकी आज्ञा प्राप्त किये ही आनेसे सफलता नहीं मिली है, वह वापिस घर लौट कर आ गया। अब यह यौवनावस्था प्राप्त युवक २० वर्षका हो चुका था—उस समय इसका शरीर गठीला और मांस-पेशियां दृढ़ थी। शरीर की ऊँचाई मध्यम थी। आकृतिसे साहस और वीरत्व प्रकट होता था, इस कारण मुखाकृति अत्यंत प्रभावोत्पादक थी। इसके साथ ही शरीर और मुखाकृतिसे अत्यंत भाग्यशाली प्रतीत होता था। महत्वाकांक्षाएँ इसकी मुखाकृति पर अपना घर बनाये हुए थीं। इस प्रकारका व्यक्ति घर कब तक रह सकता था। एक दिन अपने माता-पिताकी आज्ञा प्राप्त कर कुछ आदमियों सहित घरसे जीविकोपार्जनार्थ चल ही तो पड़ा। घरसे निकल कर घूमता हुआ मालवे पहुँचा, वहाँ सेनामें भरती हो गया। यहाँ कुछ दिन रहनेके बाद यह युसुफखां रिसालदारके पास आया। रिसालदारने इसे भाग्यशाली देख कर अपने पास रख लिया। यहाँ कई दिन रहनेके पश्चात् रिसालदार और अमीरखां दोनों जोधपुरके महाराज विजयसिंहके पास आये। इन्हीं दिनों रिसालदार अपनी पुत्रीका विवाह अमीरके साथ करना चाहता था, किन्तु अमीरको यह अच्छा नहीं लगा, अतः उसका साथ छोड़ कर अमीर ईडर चला आया, दो मास यहाँ रह कर यह बडौदा आ गया। इस समय इसके पास ३००-४०० आदमी एकत्रित हो चुके थे। इन आदमियों सहित इसने गायकवाड़की नौकरी कर ली। यहाँ भी यह अधिक दिन नहीं ठहर सका, घूमता हुआ सूरत पहुँचा, जहाँ गायकवाडके पंडितसे इसका परिचय हुआ जो सूरतमें चौथ वसूल करता था। अंग्रेज व्यापारियोंके कारण चौथ वसूल नहीं हो रही थी, अतः अमीरने सहायता करके चौथ वसूल करा दी। यहाँसे अमीर भोपाल चला आया। भोपालमें इस समय छत्तेखांकी सन् १७९४ ई. मृत्यु हो जाने से भिन्न भिन्न दलों द्वारा सेना एकत्रित की जा रही थी। अमीर अपने आदमियों सहित नवाब हयात मुहम्मदखांके पास नौकर हो गया। यहीं पर इसका परिचय गोशमुहम्मद फैयाजउल्लाखां बंगस, मुरीद मुहम्मदसे हो गया। इसने यहाँ कई काम किये, जिससे इसकी प्रसिद्धि हो गई। यहाँ एक वर्ष रह कर अमीर रघुगढ़के राजा जयसिंह और दुर्जनसाल खींचीके पास आगया। इस समय यह खींची राजा अत्यन्त कठिनाईमें थे, क्यों कि सेंधियाने किसी बातसे बिगड़ कर अपने यहाँसे इनको निकाल दिया था। ये लोग दस्युवृत्तिसे अपना निर्वाह कर रहे थे। इन्हीं दिनोंमें राजा रघुगढ़ और सेंधियामें युद्ध आरंभ हो गया। अमीरने खींचियोंकी सहायता की जिससे सेंधियाको पीछे हटना पड़ा; किन्तु खींचियोंके एक सरदारसे अमीरका झगड़ा हो जानेके कारण, अमीर

यहाँ भी अधिक नहीं ठहर सका। यहांसे अलग हो कर मरहठा सरदार बालाराव इंगलियाके पास, जो भोपालका प्रबंधक था, आ कर नौकर हो गया। अमीरको फतहगढ़के किले और नवाब गोशमुहम्मदकी रक्षाका भार सौंपा गया। किन्तु मुराद मोहम्मदकी मृत्यु हो जाने और बालाराव इंगलियाका वहाँसे संबंध टूट जानेके कारण, अमीरका संबंध भी फतहगढ़से छूट गया। कुछ दिन अमीर इस प्रयत्नमें रहा कि बजीरखांके यहाँ नौकर हो जावे, परन्तु सफलता नहीं प्राप्त हुई।

अमीरखांने अब तक अच्छी ख्याति प्राप्त कर ली थी। इस ख्यातिने ही अमीरके भाग्यको जसवंतराव होल्करके भाग्यसे जा मिलाया। इसी समय अर्थात् हिजरी सन् १२१४, तदनुसार १७९९ ई. से अमीरखां और जसवंतराव होल्कर तब तक साथ साथ रहे, जब तक कि अंग्रेजोंने इन्हें अलग अलग होनेके लिए विवश नहीं किया। इस समय जसवंतराव होल्कर बड़ी विपत्तिमें था। इसके बड़े भाई काशीरावने सब कुछ छीन कर इसे राज्यसे बाहर निकाल दिया था। होल्करने अमीरसे प्रतिज्ञा की कि जैसे जैसे प्राप्ति होगी उसका आधा भाग कर लिया जायेगा। सर्वं प्रथम काशीरावसे ही इनका युद्ध हुआ, जिसमें इनकी विजय हुई। जसवंतराव अब सम्पूर्ण मालवेका स्वामी हो गया।

यद्यपि अमीरखां जसवंतरावका नौकर था किन्तु उसने अमीरके साथ कभी भी नौकरों जैसा व्यवहार नहीं किया। आपसमें इनका व्यवहार मैत्रीपूर्ण था। यहाँ तक कि अमीरखां हर काम करनेमें स्वतंत्र था, जिसे चाहता सेनामें रख लेता था, जिसे चाहता उसे निकाल देता था। इस स्वतंत्रताके साथ साथ इसे कष्ट भी बहुत उठाने पड़ते थे। रुपयेकी तंगीके कारण जब सेनाको वेतन नहीं मिलता था तो वह स्थान स्थान पर लूटमार किया करती थी; और जब इस प्रकार भी आवश्यकताकी पूर्ति नहीं होती थी, तो नवाब अमीरखांको सेना अत्यन्त दुःखी करती थी। यहाँ तक कि उसे तोपके मुहसे बांध कर देर तक धूपमें रखती थी। लेकिन समय पड़ने पर यही सेना अपने स्वामीके लिए अपने प्राणों की आहुती देनेमें जरा भी पीछे नहीं हटती थी। होल्करने इस सेनाके खर्चके लिए अमीरको कई गांव जागीरमें भी दे रखे थे, किन्तु इससे उसका व्यय अधिक ही था। इस कारण अमीरखांकी यह सेना राजस्थान, मालवा, बुंदेलखंड आदि स्थानों पर बराबर दस्युता किया करती थी। धीरे-धीरे यह दस्युओंका दल बढ़ता ही गया, यहाँ तक कि इस दलमें ३५,००० हजार व्यक्ति और ११५ तोपें एकत्रित हो गयीं थीं। अस्तु।

अमीरखांके इस प्रकार स्वतंत्र होने तथा होल्करके सम्मान सहित अमीरके साथ व्यवहार करनेसे, होल्करके कई एक सरदार अमीरसे अप्रसन्न रहते थे। ये लोग होल्करके कान भरने लगे, जिससे उसके हृदयमें संदेहने घर कर लिया। यह बात अमीरसे गुप्त न रह सकी। सुतराम् अमीरखांने एक दिन समय पा कर एकान्तमें होल्कर को पकड़ कर

और उसके कमरबंदसे एक छोटी कटार निकाल कर कहा—"मैं इस समय एकाकी हूँ, यदि मेरे मार डालनेमें तुम्हारी भलाई होती हो तो यह छुरी लो और मुझे मार डालो, जरा भी विलंब न करो।" इस पर होल्कर लज्जित हो कर कहने लगा कि ऐसी कोई भी बात नहीं होगी, जिससे तुम्हें कष्ट हो। इसके पश्चात कभी भी ऐसी कोई घटना नहीं हुई। तबसे यह बराबर मिल कर कार्य (दस्युता) करते रहे।

उसी समयमें महादजी सिंधिया पूनासे उज्जैन आया था। होल्करकी सेनाने इसे लूट लिया। इस पर महादजी सिंधिया चितौडमें लखवाके पास चला गया। होल्कर और लखवामें शाहजहांपुरके किलेमें युद्ध हुआ जिसमें लखवा हार कर भाग गया। उधर दौलतराव सिंधियाका अंग्रेज सेनापति कुलूससाहब दक्षिणसे सिरौंजमें आया। सिरौंज अमीरखां को होल्करकी ओरसे जागीरमें मिला हुआ था। अतः वहाँ अमीरखांकी ओरसे एक प्रबंधक अधिकारी युसुफखां रहता था। उसने अमीरको कुलूस साहबके आनेकी सूचना भेजी। अमीरखांने सिरौंज पहुँच कर उसे वहाँसे भगाया। फिर नागपुरके राजाको ३॥ घंटेके युद्धके पश्चात् देवरीके निकट परास्त किया। इधर फिर दौलतराव सिंधिया, बलवंत राव बोकडा और चौरस साहब जिसके साथ बीस हजार पिंडारी थे, उज्जैन आये। होल्करके पास इस समय सेना कम थी, अतः वह केसूरी चला गया और वहां उसने उन दो सेनाओंको लूट लिया जो बलंवतरावकी सहायताके लिए दक्षिणसे आई थी। फिर अमीरखां को चौरस साहब आदिके साथ युद्ध करनेको बुलाया। होल्कर और अमीरखांने मिल कर उन्हें भागनेके लिए विवश कर दिया। इसके पश्चात् दोनोंने मिल कर स्थान स्थान पर बड़ी लूटमार की। कुछ दिन साथ रह कर फिर अलग अलग हो कर काम करने लगे। सन् १८०५ ई. में जसवंतराव होल्कर और अंग्रेजोंके बीच युद्ध हुआ। यह युद्ध डीगमें हुआ था, जिसमें होल्करको परास्त होना पड़ा और भरतपुरमें शरण लेनी पड़ी। लार्ड लेकने होल्करका पीछा किया और भरतपुरके राजा रणजीतसिंहको कहलवाया कि जसवंतराव को उन्हें सौंप दे। किन्तु राजा रणजीतसिंहने जसवंतरावको देनेके लिए इंनकार कर दिया इस, पर भरतपुरका किला घेर लिया गया। इस समय अमीरखां भी होल्करकी सहायताके लिए आ गया था। उसने अंग्रेजोंके सिपाहियोंको हैरान करना आरंभ किया। उसका विचार था कि जो सहायता और रसद कर्नल मेरीके साथ अंग्रेजोंके लिए आती है उसे भरतपुर न पहुँचने दी जावे, किन्तु वह सफल नहीं हो सका। इस पर राजा रणजीतसिंहने इन्हें सलाह दी कि एक व्यक्ति तो यहाँ भरतपुरमें रहे और दूसरा शत्रुके देशमें जा कर लूटमार करे। जसवंतरावका जानेका साहस नहीं हुआ क्यों कि वह फरुखाबाद और डीगके युद्धमें हार चुका था। अतः अमीरखां वहाँसे रुहेलखंडकी ओर चला। जैसे ही अमीरखां रवाना हो कर चला, जनरल स्मिथने अपने सवारों और तोपखानेके साथ उसका पीछा किया। अमीरखां आगरा, फरुखाबाद आदिको लूटता हुआ मुरादाबाद पहुँचा। वहाँ अंग्रेज कुछ सिपाहियोंके

साथ पड़े हुए थे। दो दिन तक वे उससे लड़ते रहे। इतने हीमें जनरल स्मिथ भी जा पहुँचा। जनरल स्मिथके पहुँचनेसे अमीरखां अपनी सेनाको ले कर पहाड़ोंकी ओर भागा, जनरल भी उसके पीछे पीछे चला। अफजलगढ़के पास दोनोंका युद्ध हुआ किन्तु अमीरखां ठहर न सका। युद्धस्थल छोड़ कर रुहेलखंडके गांवोंको लूटता हुआ गंगापार हो गया। इस समय इसके साथ केवल १०० सिपाही रह गये थे। इसलिए फिर इसने सेना एकत्रित की और जसवंतरावके पास चला आया। इधर लार्ड लेकने जसवंतरावको संधि कर लेनेके लिए विवश कर दिया। जब संधि होने लगी तो लार्ड लेकने जसवंतरावसे यह कहा कि इस संधिपत्र पर अमीरखांके भी हस्ताक्षर होने चाहिए। अमीरखांको यह स्वीकार नहीं था। इस पर जसवंतरावने अमीरखांकी बहुत खुशामद की और कहा कि मुझे इस समय एक करोड़ बीस लाख मिला है, जिसमेंसे मैं आधा दे दूंगा। इस समय ३० लाखके गांव देता हूँ, बाकी दक्षिणा और गांव प्राप्त कर दे दूंगा। इस पर बड़ी कठिनाईसे अमीर राजी हुआ। उसने अपने प्रतिनिधि भेज कर जसवंतरावसे गांवोंका लेखा मंगवा लिया। जसवंतरावने नवाबकी इच्छानुसार गवर्नर जनरलसे टोंक, अलीगढ़, मालवेसे सिरोंज और पडावा, मेवाड़से नीमाहेडा, खीचीवाडेसे छवड़ा नवाबको खर्चमें लिख दिये।

अमीरखांको अब रहनेके लिए, अच्छा स्थान मिल चुका था और उसकी अवस्था भी बढ़ चुकी थी। अतः उसने मुहम्मद अय्याज खांकी पुत्रीसे सन १२२१ हिजरी तदनुसार सन् १८०६ ई. में अजमेरमें विवाह कर लिया। इस स्त्रीसे हिजरी १२२२ (सन् १८०६) में इसके एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम वजीर मुहम्मद रखा गया। इस समय तक इसका (अमीरखांका) दल बहुत बढ़ गया था। उसका आतंक चारों ओर छाया हुआ था। कुछ दिन बाद अमीरखांको जयपुरके राजा सवाई जगतसिंहने जोधपुरके राजा मानसिंहसे युद्ध करने के लिए अपनी सहायतार्थ बुला लिया।

घटना इस प्रकार हुई कि उदयपुरके राणा भीमसिंहकी कन्या कृष्णा कुमारी अत्यन्त सुन्दर थी। उसका वाग्दान (सगाई) राणाने जोधपुर नरेश भीमसिंहके साथ किया था। जब भीमसिंहका निसंतान स्वर्गवास हो गया और जोधपुरकी गद्दी पर मानसिंह बैठे तो राणाने कृष्णा कुमारीका विवाह उसके साथ करना चाहा। इस पर मानसिंहने उत्तर दिया कि कृष्णा कुमारीकी सगाई उसके पिता भीमसिंहके साथ हुई थी, अतः माताके साथ मैं विवाह नहीं कर सकता। इसलिए राणाने जयपुरके महाराज जगतसिंहसे संबंध करना चाहा। महाराज जगतसिंहने जोधपुर नरेश महाराज मानसिंहसे पूछ कर और उनके इनकार होने पर विवाह संबंध स्वीकार कर लिया।

तत्कालीन समयमें पोकरणके ठाकुर सवाईसिंह बहुत ही प्रभावशाली एवं विख्यात व्यक्ति थे जिनके पितामह देवसिंहको महाराजा भीमसिंहने मरवा दिया था। देवसिंहके

दो पुत्र थे। सबलसिंह और श्यामसिंह। सबलसिंहके पुत्र सवाईसिंह पोकरणके स्वामी हुए और श्यामसिंहने जयपुरमें गींजगढ़की जागीर प्राप्त की। महाराज मानसिंह जब जोधपुरकी गद्दी पर बैठे, उस समय सवाईसिंह अपनी कन्याका विवाह जयपुरके महाराज जगतसिंहसे करनेकी तैयारी जयपुरमें कर रहे थे। महाराज मानसिंहने सवाईसिंहसे कहलाया कि आजतक राठौड़ों ने जयपुरवालोंको कभी डोला नहीं दिया है। आप डोला दे रहे हो इससे राठौड़ोंका बहुत ही अपयश होगा। सवाईसिंहने, जो मानसिंहसे पहिलेसे ही इस बात पर खिजा हुआ था कि उसकी बिना सम्मतिके ही जोधपुरकी गद्दी पर बैठ गया था, उत्तर भिजवाया कि मेरे काका जयपुरमें ही रहते हैं, वहींसे यह विवाह होगा परन्तु यह कहां तक उचित है कि जोधपुरकी मांगको जयपुर वाले ब्याह ले जावें। मानसिंहको यह बात बहुत चुभी और उसने उदयपुरके राणाको विवाहके लिए कहलाकर वह स्वयं विवाहकी तैयारी करने लगा। इधर जयपुरमें भी विवाहकी तैयारी हो रही थी। उदयपुरके राणा जयपुरसे संबंध स्थापित कर देनेके कारण कृष्णा कुमारीका विवाह जयपुर नरेशसे ही करना चाहते थे। इस कारण इस युद्धका श्रीगणेश हो गया।

इधर पोकरण ठा. सवाईसिंहने प्रचारित किया कि स्वर्गीय महाराज भीमसिंहकी राणीसे धौंकलसिंह नामक एक पुत्र उत्पन्न हुआ है जो खेतडीमें पोषण पा रहा है। वही जोधपुरकी गद्दीका उत्तराधिकारी है। साथ ही जयपुर नरेश जगतसिंहको कृष्णाकुमारीसे विवाह करनेके लिए उत्साहित किया और आश्वासन दिया कि समय पड़ने पर हम सब राठौड़ आपके साथ हैं। हम केवल यही चाहते हैं कि भीमसिंहका पुत्र धौंकलसिंह ही जोधपुरका स्वामी बने।

ऊपर लिखा जा चुका है कि राजस्थानमें अमीरखां और उसका दल अपने कार्य कलापोंके कारण भयंकरतामें अति प्रसिद्ध हो चुका था। यह दल पैसेके लिए सब कुछ करनेके लिए हर समय तैयार रहता था। जो अधिक रकम देता था उसीकी ओर हो जाता था। इस कारण जयपुर और जोधपुर नरेश दोनोंने अच्छी रकम देनेकी प्रतिज्ञा कर अमीरखांके दलसे सहायता प्राप्त करनी चाही। इसमें जगतसिंहको सफलता मिल गई। और मानसिंहको किसी भी ओरसे सहायता प्राप्त न हो सकी। जगतसिंहके साथ इस युद्धमें अमीरखांके अतिरिक्त हैदराबादके मीरमकदून वाजिदखां, खुदाबक्स, मीर शदुद्दीन, मीर मरदान अली, नवाब खाजहाँ, बीकानेर नरेश सुरतसिंह और पोकरणके ठा. सवाईसिंह सम्मिलित हुए थे। परबतसर पर जहाँ जयपुर और जोधपुरकी सीमाएँ मिलती हैं, ये लोग एकत्रित हुए। उधरसे महाराज मानसिंह इन्हें रोकनेके लिये साठ हजार सेना सहित आगे बढ़े। दोनों सेनाओंमें भयंकर काटमार हुई, और अंतमें सवाईसिंहके उद्योगसे, राठौड़ी सेना मानसिंहका साथ छोड़ कर, जगतसिंहकी ओर मिल गई। इससे मानसिंह किंकर्त्तव्य विमूढ़ हो गया। जैसे तैसे करके बचे हुए व्यक्तियोंको साथ ले जोधपुरकी ओर रवाना हुआ। महाराज जगतसिंह अब

विवाहार्थ उदयपुर जाना चाहते थे, किन्तु सवाईसिंहके अनुरोधमे पहिले मानसिंहसे निबट लेना उचित समझ कर, जोधपुरकी ओर बढ़े। मेड़ताके पास फिर राठौड़ी सेनासे मुठभेड़ हुई। और वहां विजय प्राप्त कर कुछ जमीन बीकानेर नरेशको दी। अब मानसिंहके पास केवल जोधपुर और जालोर ही रह गये थे। महाराज जगतसिंहने पीपाड़ पहुँचकर मारवाड़की २२ तोपें और प्राप्त कीं। मंडोवर और जोधपुरके निकट सूर्यास्तके समय महाराज जगतसिंह धौंकलसिंहके डेरेमें गये। वहाँ धौंकलसिंहने महाराजका अच्छा आदर-सत्कार किया। वहां दरबार हुआ, जिसमें बीकानेरके सुरतसिंह भी थे। धौंकलसिंहको जोधपुरका स्वामी घोषित कर आगे बढ़े जहाँ सिंघी रामचन्द्र बक्सी और अमीरखांकी सेनाएँ इनसे आ कर मिल गई। उसी दिन ये लोग सायंकाल जोधपुर नगर अधिकृत करनेवाले थे। अतः इन्होंने विजय घोषित कर दी और धौंकलसिंहके नामसे १६ अप्रैल सन् १८०७ ई.को दुहाई फेर दी और जोधपुर आ कर घेरा डाल दिया।

अब तो जोधपुर नरेश बड़ी कठिनाईमें पड़े। एक बार फिर गुलामखां अफगानके द्वारा अमीरखांसे सहायताकी याचना की, किन्तु अमीर सहायता देनेसे साफ इनकार कर गया। घेरा कई दिन तक चलता रहा। राठौड़ोंने बड़ी वीरता पूर्वक सामना किया। अंतमें तोपोंके गोलोंसे किलेका कुछ हिस्सा गिरा दिया गया। उधर किलेकी खाद्य-सामग्री दिन दिन कम होती जा रही थी। ऐसी परिस्थितिमें महाराज मानसिंहने ठा. सवाईसिंहको कहलवाया कि, "राठौडोंकी इज्जत अब आपके हाथ है। धौंकलसिंह अंततोगत्वा राठौड़ ही है। अतः मारवाड़के दो हिस्से करके एक हिस्सा धौंकलसिंहको दिया जावे, जिसकी राजधानी नागौर रहे, दूसरा अर्द्ध भाग मेरे लिये रहे जिसकी राजधानी जोधपुर रहे।" इस पर सवाईसिंहने प्रत्युत्तर दिया कि आप किला परित्याग कर दीजिए और अपने लिए एक अच्छी जागीर ले लीजिए। इस पर मानसिंहने "साका" करके वीरोंकी तरह युद्धक्षेत्रमें प्राणोत्सर्ग करनेका विचार किया। इसी समय इंद्रराज सिंघी और भंडारी गंगारामने जो किसी कारणवश किलेमें कैद थे—मानसिंहको कहा कि अब यह समय हमारी स्वामिभक्तिका है, आप हमारा विश्वास कीजिए और हमें छोड़ दीजिये। हम आपको दिखा देंगे कि हम क्या कर सकते हैं? अंतमें ये दोनों कर्मचारी छोड दिये गये। इन्होंने किलेसे बाहर निकल कर मरहठा सरदारों द्वारा अमीरखांसे कहलवाया कि यदि आप हमारी सहायता करो तो हम आपको ४ लाख रुपया सालाना और आपकी सम्पूर्ण सेनाका खर्चा देंगे तथा आपको एक अच्छी जागीर भी देंगे। इस पर अमीर सिंघी इन्द्रराजसे बातचीत करनेके लिए घेरेसे हट गया और मरहठा सरदारोंसे मिल कर, मारवाड़को लूटता हुआ अरक्षित जयपुर पर आक्रमण कर दिया।

जब यह बात महाराज जगतसिंहको ज्ञात हुई तो प्रथम तो वह बहुत घबड़ाया, फिर तुरन्त ही बक्सी शिवलालको अमीरके विरुद्ध भेज दिया। शिवलालने आगे बढ़ कर अमीरकी

सेनाको फागीके पास परास्त किया। तत्पश्चात् अपनी सेनाको छोड़ कर किसी कार्यवश जयपुर चला आया। जब अमीरखांको अपनी हारका हाल ज्ञात हुआ तो उसने मुहम्मदखां और राजा बहादुरको जो ईशरदाको घेरे हुए थे, बुला लिया और बक्सी शिवलालकी सेनाकी ओर बढ़े। रास्तेमें इन दोनों सेनाओंकी टक्कर हुई। कई स्थानों पर नवाबकी सेना परास्त हुई, किन्तु वर्षाकी अधिकताके कारण कछवाही सेनाको सांगानेर तक पीछे हटना पड़ा और नवाबकी सेनाने उसका पीछा किया। यहांसे जयपुर शहर सिर्फ ५ कोस दूरी पर था। शहर जयपुर पर चढ़ाई करना नवाबके लिए सरल नहीं था। अतः नवाब अमीरखां सेंधिया और राठौड़ोंके साथ मारवाड़की ओर चला।

इधर अभी तक अम्बाजी इंगलिया और स. जगतसिंह जोधपुर पर घेरा डाले हुए थे, जब कि अन्य सरदार अमीरखांकी तरह घेरा छोड़ कर जा चुके थे। अतः जगतसिंहने भी घेरा उठा लेनेका विचार कर धौंकलसिंह और सवाईसिंहको नागौर ठहरनेके लिए कहा। और उनकी रक्षार्थ अन्य लोगोंको वहां छोड़ा। साथ ही कुछ सेना शेखावाटीमें भी सहायतार्थ छोड़ी और आप स्वयं जयपुरकी ओर रवाना हुआ। इस प्रकार यह घेरा उठाया गया। इसमें मानसिंह बड़ा ही भाग्यशाली प्रमाणित हुआ जो बिना किसी उद्योगके घेरेसे निकल गया।

अब रही कृष्णा कुमारीके विवाहकी बात, उसका हाल यह है कि अमीरखांने पहिले जगतसिंह और सवाईसिंहसे सच्ची मित्रता प्रदर्शित की, तत्पश्चात् पैसेके लोभसे इनका साथ परित्याग कर दिया और मानसिंहसे जा मिला। लेकिन, उसके साथ भी अपनी कुटिलताका परिचय दिया। उसने सवाईसिंह, इंद्रराज सिंघी और महाराजा मानसिंहके गुरु देवनाथकी हत्या की, जिससे मानसिंहको अत्यन्त दुःख हुआ। अंतमें उसने यह सोचा कि कृष्णा कुमारी रहेगी तो फिर झगड़ा होना संभव है, इसे समाप्त कर दिया जाना ही उचित है। अतः उसने उदयपुर जा कर राणा भीमसिंहको कृष्णा कुमारीकी हत्या कर देनेके लिये विवश कर दिया। कृष्णा कुमारीके तीन बार हलाहल पी लेने के पश्चात् सदाके लिए झगड़ेकी संम्भवना जाती रही। सवाईसिंहकी हत्याके पश्चात् धौंकलसिंह भाग कर बीकानेरकी ओर चला गया। इस प्रकार इस युद्धका अंत हुआ।

ऊपर लिखा जा चुका है कि अमीरका दल बहुत बढ़ गया था। उसकी सेनामें कई रिसालदार थे, जो स्थान स्थान पर रियासतों और ठिकाणे वालोंसे अपनी सेनाका व्यय बलात् लेते थे और समय असमय पर जनताको लूटते रहते थे। इस पर भी दलका व्यय नहीं चलता तो वे मिल कर अमीरखांको तंग करते थे। एक समय जोधपुर वाले युद्धके पश्चात् खुदाबक्स, मुहम्मद सईदखां, कुतुबुद्दीनखां, फैजुल्लाखां, मुनीरखां, नजीबखां, खान मुहम्मद दाराशाहखां, कमरुद्दीनखां, और अन्य रिसालदारोंने मुहम्मदखांके साथ षड़यन्त्र करके अपने वेतनके लिये विद्रोह उत्पन्न किया। उस समय अमीरखां अपने परिवारके साथ डुमकोलाके

किलेमें था, जो उसने कुछ दिन पूर्व हस्तगत किया था। इन विद्रोहियोंने वहाँ जा कर धरना दिया। अमीरखांने राजा बहादुरलालसिंहको, जो उदयपुरमें था, अपनी सेना सहित इन उपद्रवियोंको शांत करनेके लिये बुलाया, किन्तु इसने उत्तर भिजवाया कि आजकल मैं महाराणाकी सेवामें हूँ, बिना उनकी आज्ञाके नहीं आ सकता। अतः अमीरखांने महाराणाको लिख कर उसे बुला लिया। वह वहांसे सीधा जयपुरमें नवाब मुख्तारुद्दौलाके पास आया, उसने फिरसे उसकी (नवाबकी) अध्यक्षतामें सेनाकी बागडोर संभाली।

जब अमीरखांको ज्ञात हुआ कि उसकी रक्षक सेना जमशेदखां, मुहम्मद सईदखां आदिके साथ इन उपद्रवकारियोंसे अलग है और अभी तक शांत है तो उसने सोचा कि इनके सामने झुकनेके स्थान पर इस सेनाके सामने प्रकट होना अति उत्तम होगा। इस विचारके अनुसार वह किलेसे बाहर आया और सबको पृथक पृथक बुला कर कहा कि यदि आप यह समझते हों कि मैंने अपने लिए धन एकत्रित करके छिपा रखा है तो आप तलाश करके कोई भी वस्तु अपने अधिकारमें कर सकते हो। किन्तु इन अफगानोंने उसका जरा भी विश्वास नहीं किया और उसे अपने अधिकारमें पा कर उसके साथ अत्यन्त कुत्सित व्यवहार करने लगे। अमीरखांने यह देख कर अपने पुत्र वजीरुद्दौलाके साथ अपने परिवारको द्वाररक्षकोंकी अधीनतामें टोंक भेजा दिया और आप स्वयं उन लोगोंके साथ किशनगढ़की सीमामें आया। वहां खूब लूटमार की और ७० हजार रुपया सेना खर्चका राजासे प्राप्त किया। इसी प्रकार शाहपुरा, आदिसे सेनाव्यय प्राप्त कर तत्पश्चात् बूंदीकी सीमामें प्रवेश किया, फिर समंदी, डूंगर और निनवनमें आया। इस स्थान पर कर्नल मोहनसिंह और मुहम्मद अय्याजखांके रिसालेसे मिला, जो तत्काल ही बूंदीसे आये थे। अमीरखांने बूंदीसे भी सेना-व्यय मांगा और लेनेके बाद जयपुर राज्यकी सीमामें प्रवेश किया। टोरडी और चांदसेनके निकट आकर उणियारा और ईशरदासे भी उसी प्रकार अपनी मांग रखी तथा निवाईके पास आ कर डेरा डाला। अब उसका विचार जयपुरके साथ द्रव्यके लिए आवश्यक समझौता करनेका हुआ। इसके लिए मुख्तारुद्दौलाको सेना सहित बुलाया था जो उस समय हिण्डौनमें था। उसको पत्र लिख-कर आप मोहनसिंहकी सेना सहित चाकसूमें आया। इस स्थान पर अमीरखांने, मेघसिंह आदि जयपुरके अन्य अधिकारियोंसे मिल कर तै किया कि १२ लाख रुपया उसको (अमीरको) हीराचंद सेठके द्वारा मिल जाय जो मुख्तारुद्दौलाकी सेनाके साथ है। अमीरखां यह समझौता कर किशनगढ़की ओर बढ़ा। उधर यह समाचार मुख्तारुद्दौलाने सुने कि जयपुरके साथ इस प्रकार बातचीत निश्चित हो चुकी है तो वह वापिस लौट गया। जयपुरके भूतपूर्व दीवान राव चतुर्भुजके बहकानेसे शेखावाटीमें नवलगढ़ और खेतड़ीके विरुद्ध गया। इसी बीचमें महाराज जगतसिंहने किसी कारणवश मेघसिंहको दीवानपदसे हटा दिया। उसी समय अमीरखांने अपने पुत्रको सपरिवार टोंक छोड़ कर शेरगढ़ चले जानेकी आज्ञा भेजी और स्वयं किशनगढ़से रवाना हो कर तूजरमें आ कर बांडीके निकट डेरे डाले। इधर मुख्तारुद्दौलाने नवलगढ़ और खेतड़ी तथा शेखावाटीके अन्य ठिकाणोंसे सेना-व्यय प्राप्त कर अमीरके

पास आ कर पडाव किया। अमीरखां अभीं तक अफगानोंकी दुखदाई नीतिके कारण उनके घेरेमें ही था। इस प्रकार आठ मास व्यतीत हो चुके थे। अमीरखांने, दस लाखकी हुंडी जो अभी जोधपुरसे प्राप्त हुई थी, उन्हे दे कर अपना पीछा छुड़ाया और खुशीमें अपने डेरेमें आ कर सलामीकी तोपें दगवाई। जयपुरमें जब इन तोपोंकी आवाजकी सूचना महाराज जगतसिंहको मिली तो वे बहुत चकित हुए। प्रातःकाल जब सर्व घटना ज्ञात हुई तब महाराजने वोहरा दीनारामको अमीरखांके पास आवश्यक समझौतेके लिए भेजा। अमीरखां कुछ समय तक वहीं ठहरा रहा। अपने सेना व्ययको मिलता न देख कर अपनी सम्पूर्ण सेना सहित सांगानेर आया। सांगानेरके पास जोधपुरकी सेना थी उस पर आक्रमण कर भगा दिया। अब वह बोहरा दीनारामके वागके (आजका गांधी नगरके) निकट, आ गया। जब यह समाचार जयपुरके अधिकारियोंने सुने तो वे बहुत घबराये और उन्होंने दस लाख रुपया बोहरा दीनारामके द्वारा, जो तोजारसे अमीरखांके साथ था, देना स्वीकार किया। जिसमेंसे ६ लाख रुपया तो अमीरखांने मुख्तारुद्दौलाकी सेनाका बंधा हुआ खर्चा रखा, बाकी रुपया जमशेदखां, दाराशाहखां और खैरमुहम्मदखां तथा अन्य स्वतंत्र रिसालदारोंके लिए रखा। इस प्रकार भाग करनेका कारण यह भी था कि जब अमीर धरनेमें था उस समय यह लोग अत्यन्त ही स्वामि-भक्त रहे थे। अमीरखांने इस रुपयेको प्राप्त कर लेनेका कार्य मुख्तारुद्दौला पर रखा।

इस प्रकार सब कार्यवाही कर अमीरखां लावाकी ओर अग्रसर हुआ। वहाँ उसका विचार पहुँचते ही आक्रमण कर देनेका था, किन्तु मुख्तारुद्दौलाने समझाया कि इस प्रकार आक्रमण करनेसे कुछ भी हाथ नहीं आवेगा। अतः उसने दाराशाहके साथ अपनी सेनाको, मेवाड़में सेना-व्यय एकत्रित करनेके लिए भेजी और आप स्वयं दो हजार घुड़सवारों, जमशेदखां और अफरीदियों सहित वहीं ठहर कर लावावालोंसे सेना-व्ययकी मांग करने लगा। लावेके किले पर दो तीन बार आक्रमण भी किये। किन्तु किलेकी सुदृढ़ दीवारों और खाईकी गहराईके कारण ये सफल नहीं हुए। बहुत समय ऐसे ही व्यतीत हो गया। इसी बीचमें राय दाताराम, मुख्तारुद्दौलाकी सेनाके साथ जोधपुर भेजा गया, वह महाराज मानसिंहसे १० लाख रुपया प्राप्त कर आ रहा था। उसके लौटनेके समाचार जसवंतराव होल्करके डेरेमें पहुँचे, उस समय 'अमीरनामे'का लेखक मुंशी भुसावनलाल (शाहदान कवि) भी वहाँ उपस्थित था, जो उस समय राजा मोहनसिंहकी सेनामें कार्य कर रहा था। उसने (शाहदान-कविने) इस घटनाकी स्मृतिमें कुछ कविताएँ रचीं। इसी समय सन् १२२७ हिजरीमें (ई. सन् १८११) पिंडारी करीमखां, जिसके पास पिंडारी दस्युओंका बहुत बड़ा दल था, दौलतराव सेंधियासे हार कर, बचे हुए सिपाहियोंके साथ अमीरके पास आया। इस पर सेंधिया पर, राजाराणा जालिमसिंह, होल्कर 'बाई' (जसवंतरावकी विधवा) और अंग्रेजोंने मिलकर, अमीरको इस दस्यु सरदार करीमखांको पकड़ कर सौंप देनेके लिये बहुत दबाया था। अमीरने इस बातको अपने गौरवके अनुकूल न समझ कर इस पिंडारे सरदार और उसके साथियोंको

अपने पास रखा और सेंधिया आदिको उत्तर भिजवाया कि वह (पिंडारा सरदार) इस समय उसके पास है, इसलिये इस तरफसे कोई चिन्ता नहीं करनी चाहिए। यद्यपि अमीरखांको उसके बहुतसे रिसालदारोंने समझाया कि पिंडारेको पकड़ कर सौंप देना चाहिए, तथापि उसने उन लोगोंकी एक भी न सुनी।

अब हम फिर 'लावा' की ओर आते हैं। जयपुरसे जो रुपया तय हुआ था वह ठीक समय पर मुख्तारुद्दौलाको मिल चुका था। इस पर जमशेदखां और दूसरे रिसालदारोंने जिनके पास सेना थी, समय पा कर नवाब मुख्तारुद्दौलाको पकड़ लिया और उसके सीनेसे तलवार लगा कर सौंगध खाई कि जब तक उन्हें पूरा रुपया न चुका दिया जावेगा, तब तक उसे न छोड़ा जावेगा। संयोगवश उसी समय, जिस समय यह उपद्रव हो रहा था, अमीरखां भी नवाबके डेरेकी ओर जा निकला। उस समय दिनके ३-४ बजेका समय था। वहाँ पहुँच कर जब उसे सब घटना ज्ञात हुई तो उसने विचार किया, कि यदि लोग उसे इस समय इस डेरेमें देख लेंगे तो सेनामें संदेह करेंगे, कि यह उपद्रव उसीने खड़ा किया है। अतः वह चुपचाप अपने डेरेमें न लौट कर लोगोंकी निगाहसे निकल गया। वह फैजुल्लखां बंगसके डेरेमें चला गया। जब तक यह उपद्रव शांत न हुआ तब तक वहीं रहा। जैसी कि अमीरखांने आशंका की थी, मुख्तारुद्दौलाकी अध्यक्षतामें जो सिपाही थे उन्होंने यह समझ कर कि अमीरने ही उनके सरदारके साथ यह गड़बड़ी की है, उसके डेरेको घेर लिया और मोर्चा-बंदी कर दी। और यह कहा कि जब तक उनके स्वामी मुख्तारुद्दौलाको न छोड़ा जावेगा वे अमीरको अपने अधिकारमें रखेंगे। यह समझ कर कि अमीर उनके अधिकारमें है, रात भर आक्रमण करते रहे। उधर अफगान मुख्तारुद्दौलाके सीनेमें तलवार लगाये, बंदी बनाये रहे। अंतमें अमीरके मुंशी राय दाताराम, मुख्तारुद्दौलाके भानजे यारखां और सेठ हीराचंदके गुमाश्ते जवाहरसिंहकी जमानत पर, उसको छोड़नेको उन्हें राजी किया गया। अमीरने रायको बुला कर कहा कि जब तक वह मुख्तारुद्दौलाके धरना देना स्वीकार न करेगा तब तक उन दोनोंको न छोड़ा जावेगा। उसे आशा थी कि इस प्रकार राय उसका (मुख्तारुद्दौलाका) जामिन हो जावेगा। रायने अमीरके लिए यह सब स्वीकार कर लिया। यारखां और जवाहर-सिंहके साथ जमशदखां और अन्य अफगानोंने रायको अपने अधिकारमें रख लिया। इस प्रकार अमीर और मुख्तारुद्दौलाने कठिनाईसे मुक्ति पाई। इसी बीचमें राजा मोहनसिंहकी सेनाके सिपाही भी अपने वेतनके लिए हल्ला मचाने लगे। अमीरके ससुर मुहम्मद अय्याजखांके बहकानेसे अपने सरदार राजाको जयपुरमें टोरड़ीके स्थान पर कैद कर लिया। इसलिए मुंशी भुसावनलालने जो उस समय मोहनसिंहकी सेनामें था, उसके छुटकारेके लिए उद्योग किया। छुटकारेके पश्चात् राजा मोहनसिंहने नौकरी करना उचित न समझ कर त्यागपत्र दे दिया और मुख्तारुद्दौलाके पास चला आया। राजाके त्यागपत्र देने पर उसके दलका नायक मुहम्मद अय्याजखां बनाया गया।

नवाब जमशेदखां, मुहम्मद सईदखां और दूसरे रिसालदार, जिन्होंने राय दाताराम और उसके दो साथियोंको पकड़ रख था, मेवाड़में निंबाहेड़ाकी ओर अग्रसर हुए। अमीरने दाराशाहखां रिसालदारकी अध्यक्षतामें अपनी प्रधान सेना मेवाड़में सेनाव्यय प्राप्ति हेतु भेजी। आप स्वयं थोड़ेसे सिपाहियोंके साथ करीमखां पिंडारीको ले कर टोंक और इंद्रगढ़ होता हुआ कोटा राजराणा जालिमसिंहके पास गया। वहाँ पर चार दिन ठहर कर वह भानपुरा गया, जहाँ हालहीमें जसवंतराव होल्करका निधन हुआ था। वहाँ उसकी विधवा बाईसे मिल कर शोक प्रकट किया और उसके आग्रहसे जसवंतरावके उत्तराधिकारी मल्हाररावकी नाबालगीमें राज्यका प्रबंध करना स्वीकार किया। अमीरखांने करीमखां पिंडारीको वहाँ कुछ दिन ठहरनेको सम्मति दी और उसे समझाया कि नामदारखां और उसके (करीमखांके) साथियों, तथा संबंधियोंको, मेरे साथ भेज दिया जाय, जिन्हें मैं राजा दुर्जनसाल खींचीसे मिला दूंगा जो इस समय दौलतराव सेंधियाके विरुद्ध विद्रोह कर रहा है। ये लोग अच्छी सहायता करेंगे। सेंधियाको उसके कियेका फल चखायेंगे। करीमखांको यह योजना पसंद आ गई और वह भानुपुरा ठहरनेके लिए तैयार हो गया। इस पर अमीरने करीमखांको इफ्तखारुद्दौला और गफूरखांके सिपाहियोंकी नाम मात्रकी चौकसीमें छोड़ दिया और आप नामदारखां, शहामतखां और दूसरे लोगोंके साथ शेरगढ़ आ कर दुर्जनसालसे मिला। पिंडारी सरदारोंको यह कह कर उसके पास छोड़ दिया कि ये लोग तुम्हारी अच्छी मदद करेंगे और इनके सहयोगसे बड़े बड़े कार्य हो सकेंगे। उधर पिंडारोंसे यह कहा कि मैं राजा (दुर्जनसाल)का कार्य तुम्हारे हाथमें देता हूँ तुम अपने और राजाके शत्रुके विरुद्ध मिल कर कार्य करो। इसके अतिरिक्त नामदारखांको वजीर मुहम्मदखां भूपाल वालेके नाम भी एक पत्र दिया जिसमें पिंडारियोंको सहायता देनेको लिखा गया था। इसी समय अमीरखांने मुहम्मद सईदखांको 'शमशुद्दौलाजफरजंग' व शरूरखांको 'सरफराजुद्दौला तेगजंगकी' उपाधियां प्रदान कीं। शरूरखांको मुनव्वरखांके स्थान पर सिरौंजका अधिकारी बना कर भेज दिया।

मुख्तारुद्दौला जो लावाके पास सेना डाले पड़ा हुआ था अपने सिपाहियोंकी विद्रोहात्मक प्रवृत्ति देख कर भयभीत हो चुका था। अतः लावाका घेरा परित्याग कर किशनगढ़की ओर चला गया। अमीरखांने मोहनसिंहके दलको दूसरे सिपाहियोंके साथ अपने ससुर मोहम्मद अय्याजखांकी अध्यक्षतामें जयपुरके राजावाटी भागमें सेनाव्यय एकत्रित करनेको भेजा। जयपुर वालोंने अभी तक निश्चित रकम नहीं दी थी और देनेमें आनाकानी कर रहे थे। अतः मुख्तारुद्दौलाके वकीलसे लोगोंने कहा कि जब तक अमीरके ससुरकी अध्यक्षतामें शहर पर तोपखाना न लगाया जावेगा, तब तक रुपया प्राप्त होना कठिन है। इसलिए नवाब सांभरकी ओर रवाना हुआ और तोपखाना लानेका प्रयत्न करने लगा। मार्गमें ठाकुर चांदसिंहकी अध्यक्षतामें जयपुरकी सेनाने उन पर आक्रमण किया। जब यह समाचार राजा बहादुरलालसिंहने सुने जो इस समय लावाके घेरे पर नियुक्त था और जिसने लावा-

वालोंको इतना दबा दिया था कि उनके नाश होनेमें कोई कमी नहीं थी, तो लावावालोंसे ८० हजार रुपया लेनेकी प्रतिज्ञा पर घेरा तोड़ कर, अमीरके ससुरकी सहायताके लिये शीघ्र पहुँच गया और जयपुरकी सेनाको पीछे हटा दिया। इस प्रकार यह लावेका घेरा कई दिन रह कर समाप्त हुआ। लावाका यह घेरा सन् १८१२ ई.में डाला गया था।

अमीरखां करीमखांको भानपुरा छोड़ कर, घूमता हुआ अजमेर आया, जहाँ उसे मुहम्मद अय्यजखां मिला। मुहम्मद अय्याजखांके सिपाहियोंको अभी तक बाकी रुपया नहीं मिला था, अतः अमीरखांने शीघ्र ही रुपया दिये जानेका उन्हें आश्वासन दिया। आश्वासन दे कर अमीरखां जोधपुर चला गया। इधर मुल्तारुद्दौलाकी जयपुरकी सेनासे फिर मुठभेड़ हो गई जिसमें जयपुर सेनाको पीछे हटना पड़ा और संधि करनी पड़ी। इसी समय सन् १८१३ ई.में जगतसिंहकी बहिनका विवाह मानसिंह जोधपुरके साथ और मानसिंहकी पुत्रीका विवाह जगतसिंह जयपुरके साथ हुआ। संधिके पश्चात् मुल्तारुद्दौला मेड़ता चला आया और अमीरसे मिल कर जोधपुरसे फिर रुपयोंकी मांग की। यहाँ इंद्रराज और महाराज मानसिंहके गुरु देवनाथकी हत्याके पश्चात् अमीरखां शेखावाटीमें आया। यहाँ श्यामसिंह और अभयसिंहके विरुद्ध मोर्चाबंदी की जिन्होंने जमशेदखांको हरा कर भगा दिया था। अमीरने इनसे ३ लाख रुपया तै कर जयपुर आ कर रुपयोंकी फिर मांग की और रुपया प्राप्त न होने पर घेरा डाल दिया। छुटपुट आक्रमणोंके अनन्तर मानसिंहकी पुत्रीके आग्रहसे, जिसका विवाह कुछ दिन पूर्व जगतसिंहके साथ हुआ था—घेरा उठा कर अमीरखां जोधपुरकी ओर चला गया और इधर जोधपुर और बीकानेर रियासतोंमें दस्युता करता हुआ कई महीनों तक घूमता रहा। तत्पश्चात् अमीरखांको माधोराजपुरेके किलेकी ओर आना पड़ा जहाँ लदानेके कंवर भारतसिंहने, अमीरके ससुर मुहम्मद अय्याजखांके बीबी बच्चोंको टोरडीसे ला कर, अमीरखांको अपने ऊपर आक्रमण करनेके लिये विवश कर दिया था।

अमीरखांने जब लावाको घेरा था, उस समय लावाकी सहायताके लिए नरूखंडके सभी नरूके सरदार आये थे। जिनमें लदानेके ठा. मदनसिंहके पुत्र कंवर भारतसिंह भी थे। यह वीर और उत्साही नवयुवक थे। इन्होंने अपने ठिकानेकी 'रेखलां' नामक तोपसे इतने गोले अमीरखांकी सेना पर बरसाये थे कि विवश हो कर अमीरकी सेनाको घेरा उठाना पड़ा था। ऊपरकी पंक्तियोंमें यह लिखा जा चुका है कि लावेका घेरा राजा बहादुर लालसिंहने लावा वालोंके ८० हजार रुपया देनेकी प्रतिज्ञा पर उठा लिया था। यह लेख अमीरखांके वेतन भोगी मुंशी भुसावनलालका है जिसने अमीरके जीवनकालमें ही अमीरकी जीवनी लिखी थी। किन्तु अन्य इतिहासकारोंका कथन है कि भारतसिंहके तोपोंकी मारसे विवश हो कर यह घेरा उठाया गया था।

लावाके घेरेके पश्चात् एक समय नरूकोंमें एक विवाहोत्सव था, जिसमें कंवर भारतसिंह भी अपने साथियों सहित सम्मिलित हुए थे। प्रसंगवश वहाँ पर कई सरदारोंके मध्यमें

जिनमें राठौड़ भी थे, लावामें की गई अपनी वीरताका गर्वभरे शब्दोंमें वर्णन किया जिससे कि ले-देकर जो संधिकी चर्चा चल रही थी, वह स्थगित हो गई और लावाका घेरा उठा लिया गया। प्रसंगवश यह बताना अनुपयुक्त न होगा कि राठौड़ों और कछवाहोंमें आपसमें समधियोंका संबंध था और वे एक दूसरेसे हँसी मजाक भी किया करते थे। किन्तु इस हास्यमें कभी मनोमालिन्य नहीं हो पाता था। अस्तु, भारतसिंहकी उक्त गर्वभरी बातसे एक राठौड़ सरदारने मुँह बना कर कहा कि, "इसमें आपकी वीरता क्या थी आपने तो अपने दीन आतिथेयको और भी कठिनाईमें फँसा दिया था, वह तो भाग्यकी बात थी कि घेरा उठ गया। आपकी वीरता तो तब समझी जाती कि जब आप नवाबको अपने घर पर युद्धार्थ निमंत्रित करते। हमें तो पूर्ण विश्वास है कि यदि ऐसा किया जाता तो आप अपने बालबच्चों सहित ठिकानेको भी खो बैठते।" यह शब्द भारतसिंहको तीरकी तरह लगे। कुछ क्षणके लिए वह स्तब्ध हो गया, किन्तु उसी क्षण एक व्यक्तिसे जल मंगा कर उसे अपने दाहिने हाथमें ले कर प्रतिज्ञा की, "यदि एक वर्षके भीतर मैं नवाबको युद्धार्थ निमंत्रित करके परास्त नहीं करूं तो मैं असल राजपूत नहीं और मुझे अपने वंशका कलंक समझा जावे।" इस पर उपस्थित सब ही व्यक्तियोंने भारतसिंहको अपनी प्रतिज्ञा वापिस लेनेके लिए बाध्य किया, किन्तु उसने उत्तर दिया कि हाथीके दांत एक बार बाहर निकलनेके पश्चात् कभी अन्दर नहीं जा सकते हैं; वैसे ही राजपूतके मुँहसे भी शब्द एक बार कहे जाते हैं। इस हास्यसे आगेकी घटनाका श्रीगणेश हुआ।

जब भारतसिंह अपने स्वामिभक्त, चतुर एवं दूरदर्शी कामदार शंभू धाभाई सहित घर लौट रहे थे, तब मार्गमें कामदारने कुँवर भारतसिंहको उसके इस प्रकार प्रतिज्ञा करने पर बहुत बुरा भला कहा। तुम्हारा इस प्रकार अदूरदर्शितापूर्ण कार्य केवल नरूकोंके नाशके अतिरिक्त कुछ नहीं है। क्या आप अनेक साधन संपन्न अनेक सहायकोंयुक्त एवं अदमनीय, कठोर और भयंकर अमीरखां पर विजयकी आशा करते हैं? क्या राजस्थानमें अमीरके विरुद्ध खड़े होनेकी किसीमें शक्ति है? जयपुर, जोधपुर, उदयपुर भी बराबर भय खाते रहते हैं और समय समय पर उसे सेनाव्ययकी रकम देते रहते हैं। इस पर कुँवरको वास्तवमें होश हुआ और उसे अनुभव होने लगा कि जल्दबाजीमें बड़ी भयंकर भूल हो गयी। फिर भी उसने उत्तर दिया कि आप सब लोग अपने अपने घरोंमें बैठ कर आराम करो। मैं यह जानता हूँ कि आज नवाबका राजस्थानमें विरोध करने वाला कोई नहीं है तो भी नवाब चाहे कितना ही शक्तिशाली क्यों न हो, मैं एकाकी ही नवाबकी सेनाका सामना करूंगा और अंतमें एक वीर योद्धाकी तरह वीरगति प्राप्त करूंगा। इस पर धाभाईने उसे आश्वासन दिया कि आपको किसी प्रकारकी चिन्ता नहीं करनी चाहिये। यद्यपि मैं एक तुच्छ जातिका गूजर हूँ और एक छोटेसे ठिकानेका कामदार हूँ तथापि आप विश्वास रखें और देखें कि मैं किस प्रकार वर्षके अंत तक आपकी प्रतिज्ञापूर्त्तिमें योग देता हूँ। मुझे पूर्ण अधिकार दिया जावे

और आगे मेरा कार्य देखा जावे। इसी तरह वर्षका अंत होनेमें कुछ ही दिन शेष रह गये थे, किन्तु धाभाईने अभी तक कुछ भी नहीं किया था। इस पर कुंवरने एक दिन धाभाईको बुला कर कहा कि तुम तो अपनेको तुच्छ गूजर कह कर अपनी बातसे हट सकते हो, किन्तु मैं राजपूत विना प्रतिज्ञा पूर्ण हुए कैसे मुँह दिखा सकूंगा। इस पर धाभाईने कहा कि आप चिंतित न हों समय अब कार्य करनेका आया ही है। आप मेरी कार्यवाहियोंको चुपचाप देखते रहें।

दूसरे दिन उसने लदानेके हलवाइयोंको बुला कर ५००० व्यक्तियोंके लिए 'हलवा पूरी' तैयार करनेको कहा और साथ ही उसने सम्पूर्ण नरूखंडके नरूका राजपूतोंको स्त्री, बच्चों सहित भोजनका निमंत्रण भेजा। यथा समय सब लोग भोजनके लिए आये, भोजनके पश्चात् धाभाईने सबको एकत्रित कर कहा "ठिकानेमें ऐसा कोई बड़ा कार्य नहीं था, जिसके कारण इतना बड़ा प्रीतिभोज दिया जाता, किन्तु कुंवर वीर और पराक्रमी हैं और नरूओंके टीकाई हैं, अतः आप सबको उन्हें सम्मान देना चाहिये। इसके पश्चात् कुंवर घोड़े पर चढ़े और उपस्थित नरूकोंमें से ५०० चुने हुए पराक्रमी एवं साहसी योद्धागण कुंवरके पीछे पीछे चले और धाभाई पैदल साथ साथ चला। यह सब लोग माधोराजपुरेके किलेकी ओर आये। जयपुरमें यह किला अन्य किलोंसे अधिक सुदृढ़ था। जब यह लोग वहाँ पहुँचे तब, रात्रिके १० बज चुके थे। रस्सेकी सीढ़ियों द्वारा किलेमें प्रवेश कर किलेका दरवाजा खोल कर बाकी बचे हुए साथियोंको किलेके अंदर लिया गया और फिर वहाँके रक्षकोंको बाहर निकाल दिया गया जो जगतसिंहकी राठौड़ रानी (मानसिंहकी पुत्री)के द्वारा वहां नियुक्त थे। इसके पश्चात् रातोंरात सम्पूर्ण नरूकाओंको स्त्रियों बच्चों सहित वहाँ बुला लिया गया। इस प्रकार अपनी रक्षाका प्रबंध कर अमीरसे युद्ध करनेकी तैयारी की जाने लगी।

अमीरखांका ससुर मुहम्मद अय्याजखां उस समय टोरड़ी ठाकुरके यहाँ सपरिवार ठहरा हुआ था, जिससे उसका संबंध पगड़ीबदल भाईका था और उनकी बेगम ठकुराणीकी धर्मबहिन थी। इस बातको धाभाई अच्छी तरह जानता था। अतः उसने २०० चुने हुए पराक्रमी और उत्साही सवारोंको ले कर रात्रीमें टोरडीके जनाने महलों पर आक्रमण किया। उसने गांवमें जा कर बहुतसे बैलोंको एकत्रित कर उनके दोनों सींगों पर मशालें जला कर इधर उधर फैला दिया जिससे यह मालूम हो कि कोई बहुत बड़ा दस्युओंका दल लूटनेको आया है। तब इस प्रकार किसी भी समय लूटमार हो जाना कोई बड़ी बात नहीं थी। अय्याजखां तथा ठाकुरने जब इन लोगोंका हल्ला सुना तो देखनेके लिये अपने स्थानसे बाहर आये। अय्याजखांने यह समझा कि रात्रिके अंधकारके कारण उसीके व्यक्ति लूटमार करने आये होंगे। उन्हें देखनेको कुछ व्यक्तियोंको गांवकी ओर भेज दिया। इधर धाभाईने जनाने महलों पर आक्रमण कर, अय्याजखांके परिवारकी स्त्रियों और बच्चोंको, जिनमें अमीरखांकी स्त्री भी थी, अपने अधिकारमें करके ले चला और पहरेदारोंमेंसे एकको भी समाचार देनेके लिये जीवित नहीं छोड़ा। इधर बैलोंके सींगोंकी मशालें बुझने

लगीं तो उनके साथ जो आदमी थे, उन्हें छोड़ कर चले गये। जब नाच, गाना समाप्त हुआ और मुहम्मद अय्याजखां अपने ठहरनेके स्थान पर मध्य रात्रिको वापिस आया, तब वहां उसे कोई भी व्यक्ति नहीं मिला और हत्याकांडको देख कर तो उसे और भी आश्चर्य हुआ कि इस इतनी बड़ी घटनाका उन्हें जरा भी भान न हुआ। उस ओर धाभाई उन बेगमों आदिको आरामके साथ माधोराजपुराके किलेमें ले गया, जहां उन्हें बड़े ही आरामसे रखा। अब युद्धके लिये रसद आदिका प्रबंध किया गया। जब अमीरखांको इन दुर्घटनाका समाचार मिला तो उसने अपनी बड़ी सेना ले कर माधोराजपुराके किलेको घेर लिया।

घेरा डालनेके पश्चात् अमीरखांने प्रथम भारतसिंहको अपने परिवार वालोंको छोड़ देनेके लिए संदेश भेजा। भारतसिंहने फसल पकने तक अमीरको अपना विचार प्रकट नहीं होने दिया, उसे वस्तुस्थितिसे अंधकारमें ही रखा। जब फसल पक कर तैयार हो गई और खाने पीनेकी सामग्री प्रचुर मात्रामें एकत्रित कर ली गई, तब अपनी इच्छा स्पष्ट रूपसे अमीरको प्रकट कर दी। इस पर अमीरने राणोतकी ओरसे आगे बढ़ कर घेरेको और भी संकुचित कर लिया। इसके साथ ही उसने राजा बहादुरलालसिंह, मियां अकबर, मोहम्मदखां और महमूदखां आदिकी सेनाको बुलवा लिया। इसके अतिरिक्त मुहम्मद जमशेदखां और चेला हिम्मतखांकी घुड़सवार सेनाको भी बुलवा लिया। इन्हें किलेके चारों ओर लगा कर, मार्ग अवरुद्ध कर, शहरसे किलेवालोंका संबंध विच्छेद करनेके पश्चात् आक्रमण कर दिया। इस प्रकार घेरा डाले हुए और आक्रमण करते हुए कई मास व्यतीत हो जाने पर भी अमीरखांको सफलता नहीं मिली, तब उसने अपनी सेनाके सम्पूर्ण अधिकारियोंको एकत्रित करके परामर्श किया, और यह निश्चय किया कि किलेकी एक ओरकी दीवारको तोड़ कर क़िलेमें प्रवेश कर, आक्रमण करना चाहिए। इस योजनाके अनुसार कार्यवाही आरंभ की गई, किन्तु अमीरके काबुली सिपाही—जो हिन्दी नहीं समझ सकते थे—दीवार टूटनेसे पूर्व ही आक्रमण कर बैठे। इससे किलेवालोंने सचेत हो कर ऊपर से जलते हुए छप्परोंके साथ साथ गोलाबारी भी इन लोगों पर की जिससे अमीरकी सेनाके कितने ही व्यक्ति मारे गये और कितने ही झुलस गये और बाकी बचे हुए भाग गये। अमीरने जब यह सुना तो वह बहुत क्रुद्ध हुआ, और विना आज्ञा कार्यवाही करनेके अपराधमें बहुतोंको दंड दिया। उसकी यह योजना असफल हो गई जिसको पुनः कार्यन्वित करना भी असंभव था, क्योंकि यह योजना प्रगट हो चुकी थी।

इस आक्रमणके समयमें कुंवर भारतसिंह और धाभाईने स्थितिको इस वीरता और चतुराईसे संभाला कि अमीर जैसा कठोर एवं पराक्रमी योद्धा भी विचलित हो गया। नवाबके बीवी-बच्चोंको ऐसे प्रेम एवं आदरसे रखा कि वे उसे जीवन पर्यन्त न भूल सके जिससे

उनमें आपसमें सगे भाई बहिनोंका-सा संबंध हो गया था। एक वार फिर नवाबने दीवार तोड़नेका यत्न किया तो उस समय नवाबके बीबी बच्चोंने अमीरसे कहलाया कि यदि आपने किलेकी दीवारें तोड़नेका फिर प्रयत्न किया तो हम उस स्थान पर पहुँच जावेंगे– हमारे मरने पर ही बाबा भारतसिंह व अन्य राजपूतों पर आंच आ सकती है। इस पर अमीरने किलेकी दीवार तोड़नेका विचार त्याग दिया। युद्ध चलते हुए कई मास व्यतीत हो गये थे, उसकी सम्पूर्ण सेना युद्धस्थल पर एकत्रित हो चुकी थी, जिसे वेतन नहीं मिला था। सेना व्यय जहाँ जहाँसे प्राप्त होनेको था वह आया नहीं था। इन परिस्थितियोंने अमीरखांको अत्यन्त चिंतित कर दिया था। अतः मुहम्मद ऊमरखां, राय दाताराम और मुहम्मद अय्याज-खांने लाख रुपया कुंवर चतुरसिंहसे ला कर दिया, जिसे अमीरखांने अपनी सेनामें बांट दिया। इसके पश्चात् किले पर फिर आक्रमणकी तैयारी की जिसका संचालन स्वयंने लिया। उसने सब सेनानायकोंको सूचित कर दिया कि इस वार उसकी आज्ञाका पूर्णरूपसे पालन किया जावे और संकेत पाते ही तत्काल किले पर आक्रमण कर दिया जावे। किन्तु इस बार भी हवाके विपरीत होनेके कारण अमीरने जो संकेत तोप चला कर किया था वह दूसरी ओर न पहुँच सका और उसकी सेनाके पड़ावमें पहुँचा। इसलिए इस ओर वाली सेनाने यह समझ कर कि उनके अन्य साथियोंने (दूसरी ओरवालोंने) किलेको तोड़ दिया है – आक्रमण कर दिया किन्तु दूसरी ओरवालोंको इसका कुछ भी ज्ञान नहीं था, इसलिए वे जहाँके तहाँ रहे। किलेवालोंके सजग हो जानेसे अमीरकी यह योजना भी सफल न हो सकी और उसे अत्यन्त हानि उठानी पड़ी। अंतमें उसने घेरेको ओर भी संकुचित करके किलेवालोंको भूख प्याससे विवश करना चाहा। समय अत्यधिक हो चला था। १२ मास होने पर आये थे। क्योंकि यह घेरा २१ नवम्बर सन् १८१६ ई.में आरंभ हुआ था और सन् १८१७ ई.का नवम्बर मास आरंभ हो चुका था। अब घेराके संकुचित हो जानेके कारण किलेवाले भी विशेष चिन्तित हुए। किन्तु किलेवालोंके सौभाग्यसे उन्हीं दिनों अंग्रेजी सरकारने अपनी सेनायें चारों ओरसे एकत्रित कर उन स्थानोंकी ओर रवाना की जो अमीरखां द्वारा लूटे जा रहे थे। दूसरी ओर अंग्रेज सरकारने अमीरखांके देहलीवाले प्रतिनिधि मुंशी निरंजनलालसे समझौतेकी बातचीत की जो इस समय चार्लस् टी. मेटकाफ रेजीडेण्टके पास था। उससे (निरंजनलालसे) यह कहा गया कि यदि अमीर हमारी शर्तोंको स्वीकार कर लेगा तो उसे दक्षिणकी कुछ जमीन और दे दी जावेगी। इस प्रकार संधिकी बातचीत करके एक डोल (ड्राफ्ट) अमीरकी स्वीकृति हेतु भेजा गया। इस डोलमें अंग्रेजोंके लाभकी बातें अधिक थीं और अमीरकी आशाओंके अनुसार बहुत कम थीं। इसी समय आगरेसे जनरल डंकिन और देहलीसे जनरल आक्टलोनी अपनी अपनी सेनाओंके साथ जयपुरकी ओर बढ़ा। साथ ही अमीरखांको जो कुछ सहायता मरहट्टे सरदारोंसे मिल सकती थी, उस पर पहिलेसे ही रोक लगा दी। इससे अमीर किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गया और अंतमें विवश हो कर और संधि करनेमें ही अपना हित समझ कर उस डोल पर उसने हस्ताक्षर कर दिये। और

भारतसिंहको रुपया आदि दे कर अपने ससुरके परिवारको छुडा कर घेरा उठा लिया * । इस प्रकार भारतसिंहका प्रण पूर्ण हुआ। माधोराज पुरे की लड़ाई के पश्चात् इस विजय की खुशीमें महाराज जगतसिंह ने माह सुद ७ वि. मं. १८६९ के दिन प्रीतम निवासमें दरबार किया और लदानाके मदनसिंह, पीपलाके चतुर्भुजोत महतापसिंह, कायमसिंह नरूका, कुंवर भारतसिंह नरूका, रामबंक्स गुमास्ता और बोहरा दीनारामको सिरोपाव दिये और इनकी प्रशंसा की। संधिके पश्चात् अमीर अपनी सेनाका अधिकांश भाग तोड़ कर अपनी अधिकृत भूमिके प्रमुख शहर टोंकको आ गया और उसने इसे ही अपनी राजधानी बना कर जनहितके कई कार्य किये। ६७ वर्षकी अवस्थामें जमादीउत्सानीकी ता. २५ सन् १२५० हिजरीको तदनुसार सन् १८३४ ई.में उसका स्वर्गवास हो गया। वह मोतीबागके किनारे तालाब और मस्जिदके निकट दफना दिया गया।

अमीरखांकी मृत्युके बाद उसका बड़ा पुत्र वजीरुद्दौला २८ वर्षकी अवस्थामें हिजरी सन् १२५० के जम्मदीउस्सानीकी २७वीं तारीखको सिंहासनासीन हुआ। इसको अंग्रेजी सरकारकी ओरसे खिल्लत दी गई। हिजरी सन् १२६१ तदनुसार १८४५ ई० में अलीगढ़ के गाड़ोली गांवकी सीमाको ले कर उणियारे वालोंसे युद्ध हुआ। अंतमें करनल जान सदरलेण्ड रेजिडेण्ट, राजस्थानने उणियारे और अलीगढ़की सीमाका फैसला किया। इसके अनन्तर सन् १२६७ हि० में फिर उणियारे वालोंने टोंकके एक ग्राम पर अधिकार कर लिया। नवाबने ४ तोपों के साथ सरदार अब्दुर्रहमानको भेजा। युद्धके पश्चात् करनल जालबिन साहब रेजिडेंटने सीमाका फैसला कर दिया। दूसरे वर्ष सन् १२६८ हिजरीमें (१८५२ ई०में) नवाब वजीरुद्दौलाने लावा पर आक्रमण किया। इस आक्रमणमें नवाबके साथ प्रमुख व्यक्ति ये थे– अहमदअलीखां, मुहम्मदबक्स, बलन्दखां, मुनीरखां, अकरमखां (भाई), फैजमुहम्मदखां, मुहम्मदअलीखां, अब्दुल्लाखां (बेटे), अहमदयारखां, किफायतउल्लाखां, अहमदअलीखां कप्तान, शाहआजमखां नूरइलाहीखां, मुहम्मद फैजउल्लाखां, मसूदउद्दीन, हिम्मतखां, कलंदरबक्स, सैयद-अब्दुलअजीज, शेख फरहतउल्ला, मुहम्मद हुसेन, सैयद अलीहुसेन, अब्दुलरहमान रिसालदार, मुहिबुल्ला रिसालदार, सैयद जफर अली रिसालदार और मिश्रीखां। लावा की ओरसे प्रमुख व्यक्ति हनुमतसिंह, सरजनसिंह, (कर्णसिंहके भाई) रामसिंह, श्यामसिंह (हनुमंतसिंहके भाई), रैवतसिंह, हरनाथसिंह, ठाकुर लदाना, प्रतापसिंहके छोटे भाई गोरधनसिंह, स्योराके हनुमंतसिंह, बख्तावरसिंह, रणजीतसिंह और सुजानसिंह, इस युद्धमें सम्मिलित हुए। नवाबकी ओरसे पहिले पहिल सितमखां मारा गया तथा अन्य प्रमुख व्यक्ति जो वीरगतिको प्राप्त हुए उनके नाम ये हैं–मिश्रीखां रिसालदार, रुस्तमखां जमादार, गोहरखां, जहांगीरखां जमादार और सैयद रोशनअली मेजर। और लावाकी ओरसे महरूके रेवतसिंह नरूका और भवाना धाभाई, आंवाके किलेदारका पुत्र गिदिया, सोडेका हनुवंतसिंह, उणियाराके संग्रामसिंह, ठाकुर गोविन्द-

* इस स्थान पर 'अमीर नामा'के लेखकने लिखा है कि जैसे-तैसे अमीरने भारतसिंहसे बातचीत तय, कर अपने ससुरके परिवारको छुड़ा कर और घेरा उठा कर, नीमेडाकी ओर प्रयाण किया।

सिंहका सेवक लछमनसिंह दरोगा, रतना धाभाई, सुक्खा दरोगा लालसिंह किलेदार आदि कितने ही प्रमुख वीर वीरगतिको प्राप्त हुए। × इस युद्धके पश्चात् बजीरुद्दौला ५९ वर्षकी अवस्थामें सन् १२८१ हिजरी तदनुसार १८६५ ई.में स्वर्गस्थ हुआ।

यह पहिले लिखा जा चुका है कि ये युद्ध अमीरखां और कछावाहोंकी नरूका शाखाके राजपूतोंके मध्य हुए थे। अमीरखां और उसके कार्य-कलापोंका वर्णन ऊपर लिखा जा चुका है। अब नरूकाओंकी उत्पत्ति, प्रसार तथा उनके ठिकानों आदिके विषयमें ज्ञातव्य बातें दी जाती हैं।

संवत १४२३ वि. में आमेरके सिंहासन पर उदयकर्णका उदय हुआ। इसके जेष्ठ पुत्र वरसिंह थे, जिनके विवाहके लिए खंडेलाके निर्वाण (चौहान) वंशी राजा राव वीसलदेवने (अपनी पुत्रीके विवाहार्थ) टीका भेजा। इस अवसर पर वृद्ध राजा उदयकर्णने हास्यमें कहा कि यदि हमारी अवस्था भी कुंवर साहबकी-सी होती तो आज हमारे लिये भी ब्याहका टीका आता। यह सुन तत्काल कुंवर वरसिंह उठ गये और उस कन्याको हृदयमें माता अनुमान कर पितासे विवाह करनेका आग्रह करने लगे और खंडेलाके अतिथियोंसे कहा कि मांग हमारी हो चुकी है अतएव अन्य स्थान पर ब्याह करोगे तो भयंकर युद्धका सामना करना पड़ेगा। जब वीसलदेवको यह ज्ञात हुआ तो उसने वरसिंहसे प्रतिज्ञापत्र लिखवा लिया "मैं राज्याधिकार प्राप्त नहीं करूंगा, नई माताके पुत्रको ही स्वामी मानूंगा।" अंततोगत्वा राजा उदयकर्णको वृद्धावस्थामें तीसरा विवाह करना पड़ा। इस कन्यासे उसके दो पुत्र हुए। जेष्ठका नाम नृसिंह और कनिष्ठका बालोजी था।

सं. १४४५ वि.में राजा उदयकर्णका स्वर्गवास हो जाने पर वरसिंहने अपनी प्रतिज्ञानुसार अपने भाई नृसिंहको सिंहासनारूढ़ कराया। आमेरमें बालक राजा जान कर कलाधर झाला राजपूतने आमेर हड़पनेके लिए एक बड़ी सेना ले कर ईशरदाके निकट सरसके नाकेके पास पड़ाव डाला। जब यह सूचना वरसिंहको मिली तो वह भी शत्रुको बीच हीमें रोकनेके लिए बड़ी सजधजके साथ निवाईमें आकर ठहरा। वरसिंहका ऐसा उत्साह देख, झाला कलाधरने कुटिल नीतिका अनुसरण करते हुए उसे (वरसिंहको) कहलाया कि, "व्यर्थहीमें क्षत्रिय परस्पर लड़ कर मारे जावेंगे, अतएव आप निसंकोच अकेले पधारें, मैं भी इसी प्रकार उपस्थित होऊंगा। संधि करली जावेगी।" सीधे सीधे वरसिंह झालाकी कुटिलताको न समझ कर, उसकी सूचनानुसार केवल एक सईसको साथ ले कर, सरसके नाके पर पहुँचे

× अमीरखांकी मृत्युके पश्चात् वृत्त विस्तार-पूर्वक नहीं मिलता है। जो कुछ प्राप्त होता है वह "तवारिखे महमूदाबाद में" है। नवाव वजीरुद्दौलाका वृत्त इसी पुस्तकके आधारपर लिखा गया है। उसमें न तो "लावाके" युद्धका कारण लिखा है न परिणाम ही। संबंधित ठिकानोंसे जो वृत्त प्राप्त हुआ है, उससे कविके वृत्तकी पुष्टि होती है। वह यथास्थान आगे दिया जावेगा।

जहाँ झाला कलाधर एकाकी, जाजम पर बैठा हुआ, उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। बातें करते करते विश्वास उत्पन्न कर और वरसिंहको असावधान देख, झपट कर उसकी छाती पर चढ़ बैठा और दोनों हाथ पकड़ कर वरसिंहको विवश कर दिया। अब तो वरसिंह बहुत ही घबराया और झालाकी चालाकी भी उसकी समझमें आ गई। किन्तु विवशतासे कुछ कर नहीं सका, फिर भी साहस कर छुटकारेका प्रयत्न करने लगा। अंतमें नीचे चित्त पड़े हुए वरसिंहकी दृष्टि उस नग्न कटार पर पड़ी, जिसको झालाने अपनी पटलीमें छिपा रखा था। वरसिंहने नीचे पड़े पड़े ही, एक पैरके अँगूठेसे उसको ऐसी शीघ्रतासे खींचकर, दूसरे पांवसे पूरी शक्तिके साथ ठोकर मारी कि जिससे वह कटार कलाधरका पेट फाड़ कर पीठके बाहर निकल आई और तत्काल ही कलाधरका प्राणान्त हो गया। इसी अवसरका किसी कविका यह दोहा प्रसिद्ध है !

पगसे लीधी पारधी, पगसे कीधी पार।
झाला कलाधर मारियो, कूरम वाहि कटार॥

झालाके मारे जाने पर उसकी सेना स्वतः ही भाग खड़ी हुई। झालाकी सेनाके भाग जाने पर वरसिंह आमेर आए। सब लोगोंकी सम्मतिसे आमेर राज्यके तीन भाग किये गये। उस समय आमेरकी आय केवल २७ लाख वार्षिक की ही थी। इस कारण नौ लाखमें भैराणाकी ८४ गांवोंकी जागीर वरसिंहको और नौ लाखमें अमरसरकी जागीर बालोजीको दी गई। शेष आमेरके स्वामी नृसिह रहे।

भैराणाके स्वामी वरसिंहके पुत्र मेहराज हुए। इन्हींके पुत्र नरूसिंह बहुत प्रसिद्ध हुए, जिनकी संतान नरूका कहलाईं। नरूसिंहके दो पुत्र थे। राव दासा और राव लाला। राव दासाके सात पुत्र थे। चन्दनदास, जयमल, रतनसिंह, पूर्णमल, रायसल, कपूरचंद और करमचंद। राव दासाके इन सातों पुत्रोंका परिवार बहुत बढ़ा। ये लोग जहाँ जहाँ बसे वहॆ सब 'नरूखंड'के नामसे प्रसिद्ध हो गया। उस समय इनका मुख्य स्थान मोजमाबाद था। जयपुर राज्यमें इनके ३६ ठिकाने प्रसिद्ध हैं, जिनमें ४ ताजीमी हैं। चंदनदासकी संतानोंनें 'लदाना' और 'लावा' प्राप्त किया और करमचंदकी संतानोंको उणियारा स्थापनका अवसर प्राप्त हुआ। राव लालाकी संतानोंने अलवर राज्यकी नींव डाली। नरूसिंहका पौत्र और दासाका पुत्र करमचंद बड़ा बलिष्ठ, दीर्घकाय एवं प्रभावशाली था। इसके पास जमइय्यत भी बहुत थी। उसके पास अच्छे अच्छे चुने हुए अनेक सुभट थे, जिनको वह ६२ प्रकारसे प्रसन्न रखता था। उसके विरुद्ध आवाज उठानेका आमेर राज्यमें किसीमें भी साहस नहीं था। आमेरके राजा इन्द्रसेनने, जिसका समय सं. १५२४ से १५५९ तक था, मांडूके बादशाह नासिरुद्दिनको, जो आमेर पर चढ़ाई कर आया था, भांडारेजके समीप, करमचंदकी सहायतासे युद्धमें परास्त किया। करमचंदने आमेरके राजा रतनसिंहके समयमें (सं. १५९ से १६०४) आंमेर राज्यके ४० गांव

दबा लिये थे। यह रतनसिंह अत्यन्त शराबी और व्यभिचारी प्रसिद्ध था। इसके राज्यका प्रबंध नीच प्रवृत्तिके लोगोंके हाथमें था। इस कारण शेखावतों और नरूकोंको अपनी अपनी सीमा बढ़ानेका अवसर प्राप्त हो गया था। राज्यके कुप्रबंधके कारण अन्य भाई बेटे सब ही अप्रसन्न थे। राजा रतनसिंहने अपने चचेरे भाई तेजसिंह रायमलोतको अपना दीवान नियुक्त किया था। इससे अप्रसन्न हो कर उसका चाचा सांगा, आमेरके राजा पृथ्वीराजका, पुत्र, अपनी ननिहाल बीकानेर चला गया था। उसके चले जानेके पश्चात् छोटे दर्जेके नौकरोंको जो राजाके बड़े कृपापात्र और मुँहलगे थे, अपनी मनमानी करनेका अच्छा अवसर प्राप्त हो गया था, जिसका परिणाम आमेरकी राज्य-क्षीणताका द्योतक हुआ। सांगा पृथ्वीराजोतको अपनी ननिहालमें, आमेर राज्यके कुप्रबंध और क्षीणताके समाचार बराबर मिलते रहते थे। अंतमें उसने इन समाचारोंसे क्षुब्ध हो कर बीकानेरके राजा राव जेतसी लूणकरणोतसे, जो उसके मामा थे, सहायताकी प्रार्थना की। राव जेतसीने १५ हजार सेना सांगाको दी, जिसमें चेचावादका वजीर वाघावत, महाजनका लूणकरणोत रतनसिंह, राजासरका काँधलोत कृष्णसिंह, द्रोणपुरका संसारचंद्रोत खेतसिंह, सारूंडाका मण्डलावत महेशदास, भेलूका सद्दावत भोजराज, घडसीसरका बीकावत देवीदास, पुंगलका भाटी राव बेरीसिंह, चिरणोतका धनराज शेखावत, खाखाका बाघावत भाटी कृष्णसिंह, मिलकका जोइया होसा, सिंहागाका महता अमरा, बछावत मुहता सांगा, पुरोहित लक्ष्मीदास, और नापा सांखलाका भाई लाल सांखला प्रधान थे। इस सेनाको ले कर सांगा अमरसर पहुँचा। यहाँ रायमल शेखावतने उसकी अगवानी कर घोड़े भेंट किये, सांगाने ये घोड़े वापिस कर दिये। सांगाका इस प्रकारका व्यवहार देख कर रायमलने राजा रतनसिंहके दीवान तेजसी रायमलोतको सूचित किया कि ढंग देखनेसे ज्ञात होता है कि सांगा आमेरका राजा हो जावेगा। अतः इसके साथ अभीसे संधि कर लेनी उचित होगी। इस पर तेजसी आमेरकी सेना ले कर रास्तेमें ही सांगासे मिला। मिलते समय ही सांगाने उपालंभ देते हुए तेजसीसे कहा, "शाबास तेजसी; तुमने निकटके हो कर आमेर को खूब आबाद किया।" तेजसीने उत्तर दिया कि "राजा तो शराब और व्यभिचारका दास बना हुआ है, ऐसी स्थितिमें वह तो प्रबंधकी ओर तनिक भी ध्यान देता नहीं है। यदि आप राजा हो जावें तो सब कार्य सरल हो जावें। नरूकों द्वारा दबायी हुई भूमि सहज ही वापिस हस्तगत की जा सकती है।" इस पर सांगाने उत्तर दिया कि नरूका करमचंदके रहते हुए हमारा अधिकार नहीं हो सकता है। अंतमें तेजसीने सांगाको मुअज्जमाबादकी ओर प्रयाण करनेके लिए कहा। ये सब लोग वहाँ आये। तेजसीने करमचंद नरूकाके कनिष्ठ भाई जयमलको, जो उसके पास रहता था, बुला कर कहा कि, "तू जा कर करमचंदको बुला ला। वह भी यहाँ आ कर सांगासे अपनी सफाई कर ले। क्यों कि आगे-पीछे राज्यका मालिक सांगा ही होता दिखाई देता है।" जयमलने इसका उत्तर यह दिया कि "आज दस वर्षसे करमचंद राज्यके इलाके दबा कर भोग रहा है, तब तो किसीने कुछ नहीं कहा है। अब यदि उससे कुछ कहा जायगा तो वह जवाब तो कुछ देगा नहीं और व्यर्थमें रक्तपात

हो जावेगा।" इस पर तेजसीने उसे समझाया कि "मुझे भी लोग इसी तरह कहा करते थे, किन्तु जब मैं सांगासे मिला तो मेरे सब अपराध क्षमा कर दिये।" करमचंदको बुलाने जयमलके चले जानेके बाद तेजसीने सांगासे कहा कि "आपकी इस सेनामें मुझे तो, भीम समान वलिष्ठ एवं दीर्घकाय करमचंदके ऊपर कोई खड्ग प्रहार करने वाला दिखाई नहीं पड़ता है। सांगाने इस कार्यके लिए लालू सांखलेको चुना। तेजसीने इसे ठिंगना बता कर विरोध प्रकट किया। फिर भी सांगाने उसे वीर समझ कर इस कार्यके लिये नियत कर दिया। तब तेजसीने सांखलेको कहा कि "जब मैं 'गाँवोंका' नाम लूं तब तू खडग प्रहार करना। यदि तेरा प्रहार चूक गया तो समझ लेना यहां जितने व्यक्ति बैठे हुए हैं उनमेंसे एक भी जीवित नहीं बच सकेगा।" इतने हीमें करमचंदको साथ ले कर जयमल आ पहुँचा। करमचंदने सांगाके चरण स्पर्श कर प्रणाम किया। करमचंदके बैठ जाने पर तेजसीने उससे कहा कि "आपने राज्यको बहुत हानि पहुँचाई है। यह राज्यके स्वामी आपसे दबाये हुए गांवों का हिसाब पूछते हैं।" लालू सांखलाने, जो पासमें ही खड़ा हुआ था, "गांवों" शब्दको सुनते ही करमचंद पर इस वेग और शक्तिसे खड्ग प्रहार किया कि वह वहीं ढेर हो गया। यह देख करमचंदके लघु भ्राता जयमलने, जो पास ही खड़ा था, कटार निकाल कर तेजसीका अंत कर दिया और फिर सीधा सांगाकी ओर झपटा। यह देख राजा पृथ्वीराजका पुत्र भारमल जो, सांगाका छोटा भाई था, बीचमें आगया। इस पर जयमलने यह कह कर कटार छतरीके एक खंभेमें दे मारी—जिसका चिन्ह आज तक भी विद्यमान है,—कि तुम छोकरेको क्या मारूं? उसे धक्का दे, जयमलने लालू सांखला पर और लालू सांखलाने जयमल पर, एक साथ ही तलवारके प्रहार किये जिससे दोनों ही समाप्त हो गये। सांगाने इतने थोड़ेसे रक्तपातसे ही दोनों शत्रुओंका नाश देख, और अपना टीकाई रतनसिंहको समझ, आमेर पर अधिकार न कर, मोजमाबादसे आमेर तकके सब प्रदेश पर अपना अधिकार कर अपने नामसे * सांगानेर बसा कर वहीं शासन करने लगा। सांगाके इस कार्यका सभी भाई—बेटों और जागीरदारोंने स्वागत किया। इस प्रकार सांगाने अधिकार कर, रतनसिंह लूणकरणोतको अपने पास रख कर, अपने मामा राव जैतसीकी सम्पूर्ण सेना बीकानेर वापिस भेज दी। इधर करमचंदकी जमइय्यत-मेंसे किसीका भी साहस उसका बैर लेनेका नहीं हुआ, किन्तु एक चारण कान्हा आढ़ाने, जो करमचंदका विशेष स्नेही एवं स्वामिभक्त था, सांगाको मारकर उसका प्रतिशोध लिया। किन्तु वह भी उसी दिन लोगोंके हाथों पत्थरसे मारा गया। *

---

* सांमानेर जयपुरसे दक्षिणकी ओर ८ मील और आमेरसे १३ मील दूरी पर एक ऐतिहासिक प्राचीन बस्ती है। यहांके छपे हुए साफे, दुपट्टे, छींट और हाथका बना कागज बहुत प्रसिद्ध है। यहांका एक जैन मंदिर प्राचीन कलाकी कलाका उत्तम उदाहरण हैं। 'सांगाबाबा'का एक प्रसिद्ध मंदिर भी यहां है।

* स्वामीभक्त वीर कान्हा आढ़ाके इस कृत्यसे नरूके उसके वंशजोंको बड़े भाईके समान मान देते हैं। आज भी कान्हा आढाका अमल [अफीम] लेते समय स्मरण कर यह कह कर रंग दिया जाता है—

मार्‌यो सांगो महिपति. बैर करमचंद बोड। अमलांरा रंग आपने, कान्हा आढ़ा कोढ ॥ १ ॥
बैर कमचंद वालियो, सांगो भजड संहार, अमल पियंता आपने, रंग कान्हा रिझवार ॥ ॥

करमचंदके पश्चात् उसके पौत्र जैतसीका पुत्र चंद्रभाण बड़ा पराक्रमी एवं प्रभावशाली हुआ। उसने मुगल-सम्राट शाहजहाँकी ओरसे सं. १६५२ में बलख, बदखशां और कंधारमें अपनी वीरता और पराक्रमका अच्छा परिचय दिया। इससे प्रसन्न हो कर सम्राटने चार हजारीका मंसब, खिताब और शाहीमुरातब* दे कर चंद्रभाणको सम्मानित किया। चंद्रभाणके पुत्र फतेहसिंहने शाहजहाँका पक्ष ले कर शुजाके साथ युद्धमें बहुत वीरता दिखाई। महाराज सवाई जयसिंहकी सहातार्थ इस वंशके संग्रामसिंहने सांभरके युद्धमें हुसेनअली और अब्दुला सैयद बंधुओंके विरुद्ध युद्ध कर पराजयको विजयश्रीमें परिणित किया था। सं. १७८५ वि.में महराज सवाई जयसिंहके साथ मांडूके युद्धमें अजीतसिंहने अपना अद्‌भुत युद्ध कौशल प्रदर्शित किया, जिसके उपलक्षमें महाराजने वंशपरंपराके लिए "राव"की उपाधि दे सम्मानित किया था। इसी वंशमें महाराज सवाई प्रतापसिंहके समयमें बिशनसिंह हुआ जिसने महाराजकी ओरसे सिंधियाके विरुद्ध तुंगाके युद्धमें अपूर्व पराक्रम दिखाया, जिसके उपलक्षमें महाराजने सं. १८४३ इ. वि. में उणियाराका स्वतंत्र शासन तंत्र चलानेके अधिकारके साथ साथ "राजा"की वंशगत उपाधि और ५ तोपोंकी सलामीका सम्मान दिया। तबसे इस वंशके प्रधान "रावराजा" कहालाने लगे और राजस्थानके एकीकरण तक दीवानी और फौजदारी अधिकारयुक्त शासक रहे। आजकल इस वंशमें रावराजा सरदारसिंह हैं, जो अपनी उदारता एवं लोकप्रियताके लिए प्रसिद्ध हैं।

राव दासाके एक पुत्र चंदनदास थे, जिसकी संतानको "लदाना" पाप्त हुआ। इस वंशमें भी उत्तमोत्तम वीर हुए जिन्होंने यथासमय आमेर और जयपुर राज्यकी अच्छी सेवा की थी। विशेषकर मदनसिंहका पुत्र भरतसिंह बहुत विख्यात हुआ है, जिसने अमीरखां जैसे दुर्दमनीय शत्रुको अपने साहस, पराक्रम एवं कौशलसे युद्ध मोल ले कर नीचा दिखाया। इसी वंशके ठाकुर नाहरसिंहने 'लावा' प्राप्त किया। उस समय 'लावा' एक छोटासा ग्राम मात्र था और जयपुर राज्यके अधीन टोंक तहसीलके अंतर्गत था। जब टोंक अमीरखांको दे दिया गया तब लावा टोंकके नीचे आ गया। तबसे ही लावा इन पठानकी आँखका शूल हो गया। इन्होंने लावाको छीन लेनेके प्रयत्न किये किन्तु नरूके राजपूतोंके संगठन एवं वीरतासे असफल रहे। ठाकुर नाहरसिंहकी तीसरी पीढ़ीमें ठा. देवीसिंह और

---

* ईरानके बादशाह नौशीरवांका पौत्र खुसरो राज्यच्युत हो कर निकल गया था। वह रूमकी शीरीको व्याहा था। फिर सैनिक शक्ति बढ़ जाने पर उसे फिर राज्यलाभ हो गया। जिस दिन राज्यलाभ हुआ उस दिन ज्योतिषके हिसाबसे चंद्रमा मीन राशीमें था। मीनका स्वरूप मछली जैसा माना गया है। ऐसी स्थितिको अच्छा शकुन समझ कर खुसरोने मच्छी और चांदसे मिले हुए चिन्हको "शाहीमुरातब" नामसे प्रसिद्ध किया। खुसरोने ऐसे चिन्हके चांदी सोनेके झण्डे बनवा कर उन सरदारोंको दिये जिनका आदर सत्कार सर्वोच्च श्रेणीका था। खुसरोके पीछे देहलीके मुगल बादशाहोंने भी उसका अनुकरण किया।

यह वृत्त श्री शिवनारायणजी सक्सेना बी. ए भूतपूर्व सब जज जयपुर राज्य द्वारा प्राप्त हुआ है। सक्सेनाजी कुछ दिन लावामें भी कार्य कर चुके हैं।

विजयसिंह हुए। ठिकानेका स्वामी देवीसिंह हुआ। एक समय शिवजीके मंदिरमें ठा. विजयसिंह ध्यान कर रहा था। टोंकसे दो सरकारी मुसलमान कर्मचारी आ कर जूते पहने मंदिर के चबूतरे पर चढ़ गये, मना करने पर भी नहीं माने और खानेको वहीं बैठ गये। तब ठा. विजयसिंहने अपनी तलवारसे एक मियाँका काम समाप्त कर दिया और दूसरा भाग कर टोंक पहुँचा जिसने इस कांडकी सूचना नवाबको दी। नवाबने अपने चुने हुए सिपाहियोंकी एक टुकड़ी सेना लावा पर आक्रमण करनेको भेजी, किन्तु वह सेना लावाका मार्ग भूल कर लावासे ४ मील उत्तरकी ओर टोंक हीके एक बगड़ी नामक गांवमें पहुँच गई, जहाँ छोटासा लावा जैसाही एक किला था, उसको तोपोंसे ढाह दिया। दूसरे दिन ज्ञात होने पर बहुत पश्चात्ताप किया गया। कुछ समय पश्चात् लड़ाई रुक गई। विक्रम सं. १९२३ तक ३ लड़ाइयाँ टोंक वालोंके साथ हुई, परन्तु टोंक वालोंको हर समय मुँहकी खानी पड़ी। जब टोंकका नवाब लावाको विजय नहीं कर सका तो संधिके लिए नवाबने ठा. देवीसिंहको एक पत्र लिख कर भेजा। लावासे कुछ व्यक्ति टोंक गये और 'लावा हाऊस' टोंकमें ठहरे। यह २३ व्यक्तियोंका एक समुदाय था जिसमें ठा. देवीसिंह और विजयसिंहजी थे। नवाबसे मिलने ठा. विजयसिंह गया, जिसके साथ ११ व्यक्ति थे। ठा. देवीसिंहको भी बातचीतके लिए बुलाया गया था, किन्तु वह गया नहीं। भेंट करनेके लिए जो महल चुना गया था उसके चारों ओर बारूद बिछा दी गई थी। जो दो व्यक्ति भेंटके लिए बुलाने गये थे उनमेंसे एक व्यक्ति नवाबको सूचना देनेके लिए इन लोगोंको उस महलमें छोड़ कर चला आया। बहुत समय व्यतीत हो जाने पर भी नवाब भेंटके लिए नहीं आया तब वह दूसरा व्यक्ति भी कुछ बहाना कर जाने लगा तो ठा. विजयसिंहने उसे जाने नहीं दिया क्योंकि उसे इस षड्यन्त्रका कुछ कुछ आभास हो गया था। अतः ठा. विजयसिंहने उस व्यक्तिको तलवारसे वहीं समाप्त कर दिया। इतनेमें बारूदमें आग लगा दी गई। वह महल उड़ गया और १० व्यक्ति ठाकुरके समुदायके मारे गये, एक मीना बचा, जिसने दौड़ कर लावा हाउसमें समाचार दिये। वहाँसे ठाकुर देवीसिंह रातोंरात पैदल भाग कर लावा आये। आते ही देवलीके पोलीटिकल ऐजेण्टको सब समाचार लिखे। पोलीटिकल ऐजेण्ट, देवलीने जांच की और लावा वालोंका उसे कोई दोष दिखाई नहीं पड़ा। उसने नवाबको इस अपराधमें सजा दी और अमीरखांके पौत्रको नवाब बनाया। साथ ही सं. १९२३ वि. में 'लावा'को टोंकसे अलग कर 'चीफशिप' नियत की। तबसे लावा भारतके स्वतंत्र होनेसे पूर्व तक सीधा ब्रिटिश गवर्नमेण्टसे संबंधित रहा। देवीसिंहके पश्चात् लावाके स्वामी ठा. धीरतसिंह, इसके बाद रावबहादुर राजा मंगलसिंह, इसके पश्चात् राजा रघुवीरसिंह और आजकल वंशप्रदीपसिंह हैं।

ऊपर लिखा जा चुका है कि नरूसिंहके दूसरे पुत्र राव लाला थे। राव लालाके ऊदा (उदयसिंह), ऊदाके लाड़सिंह, लाड़सिंहके फतहसिंह, फतहसिंहके कल्याणसिंह और कल्याणसिंहके तीन पुत्र हुए; रणसिंह, आनंदसिंह और अजबसिंह। कल्याणसिंह मिर्जा राजा जयसिंह

(आमेर)के पुत्र कीर्तिसिंहके पास रहते थे। सम्राट औरंगजेबके समयमें कुंवर कीर्तिसिंहके साथ कई युद्धोंमें कल्याणसिंहने अपने पराक्रमका अच्छा परिचय दिया, जिससे प्रसन्न हो कर सम्राट औरंगजेबने इनको 'राजा'का पद और कुछ गाँव जागीरमें दिये। कुंवर कीर्तिसिंहके परलोकगमनके पश्चात् निःसहाय और दुर्दशाग्रस्त हो कर आमेर आये। यहाँ इनको रावकी उपाधिके साथ मांचेड़ी नामक ग्राम जागीरमें मिला, इसके साथ ही डेढ़ ग्राम और मिला। इस प्रकार कुल ढाई ग्रामकी जागीर मिली। कल्याणसिंहके पश्चात् इसका उत्तराधिकारी आनंदसिंह हुआ। आनंदसिंहका तेजसिंह, तेजसिंहका मुहब्बतसिंह, और मुहब्बतसिंहका उत्तराधिकारी प्रलयसिंह हुआ। यह प्रलयसिंह बड़ा पराक्रमी, कुशल, साहसी एवं महत्वाकांक्षी था। इसने ही अलवर राज्य स्थापित किया। इसका वृत्त इस प्रकार है कि जयपुरके तत्कालीन महाराजा सवाई माधवसिंह प्रथमसे इनकी किसी बातमें अनबन हो गई। यह अपनी ढाई ग्रामकी जागीर मांचेड़ी छोड़ कर भरतपुरमें जवाहरसिंह जाटके पास चले गये। वहाँ कुछ समय रह पाये थे कि जयपुरकी सीमामें बिना पहिले सूचना दिये चले आनेके कारण जवाहरसिंह जाट और सवाई माधवसिंह प्रथममें मांवडेके मैदानमें घोर युद्ध हुआ। इस युद्धमें प्रतापसिंहने अपनी सेना सहित जयपुरका साथ दे कर बड़ा पराक्रम प्रदर्शित किया, जिससे महाराजने प्रसन्न हो कर मांचेड़ीकी जागीर वापिस दे दी। महाराज सवाई प्रतापसिंहसे फिर इसका मनमुटाव होगया। इस कारण महाराजने फिर मांचेड़ीसे निकाल दिया। अब यह सीधा देहलीके बादशाह शाहआलम द्वितीयकी शरणमें गया। शाहआलमने इसका अच्छा आदर-सत्कार किया। उसने सं. १८२७ वि.में महाराव राजाकी पदवी, पंच हजारी मनसब और शाहीमरातबके साथ मांचेड़ीकी सनद कर दी। जिससे जयपुरसे स्वतंत्र होनेका अवसर प्राप्त हो गया। फिर इसने समय पा कर जयपुर और भरतपुरके परगने दबा लिये, और सं. १८३२ वि.में भरतपुरसे युद्ध कर अलवरका प्रसिद्ध और परगना भी छीन लिया, इसके पश्चात् अपनी राजधानी मांचेड़ीसे अलवरमें बनाली। यह सं. १८४७ वि.में निःसंतान मरे, अतः थाना ठाकुरके पुत्र बख्तावरसिंह गोद आकर उत्तराधिकारी हुए। राज्यासीन होनेके पश्चात् बख्तावरसिंह तत्कालीन जयपुर नरेश सवाई प्रतापसिंहके पास जयपुर आए और जयपुर राजके दवाए हुए ग्रामोंको महाराजको भेंट कर दिया जिससे महाराज बहुत प्रसन्न हुए। सं. १८६०में अंग्रेजोंको युद्धमें सहायता देनेके उपलक्षमें अंग्रेजोंसे कई परगने राजा बख्तावरसिंहको प्राप्त हुए और इनके समयमें अंग्रेजोंसे सन् १८०३ ई.में संधि हुई थी जिसमें वार्षिक करका बन्धन नहीं रखा गया। इनके पश्चात् सं. १८६१ वि.में इनके पुत्र विनयसिंह सिंहासनासीन हुए, जिन्होंने द्वितीय लावा युद्धमें सहायता भेजी और सन् ५७ के गदरमें अंग्रेजोंकी अच्छी सहायता की। इनके स्वर्गवासी होने पर इनके पुत्र शिवदानसिंह सं. १९१४ वि. में सिंहासनारूढ़ हुए। इनके पश्चात् सं. १९३१ वि.में मंगलसिंह राजा हुए। मंगलसिंहके पश्चात् सं. १९५९ में प्रसिद्ध जयसिंह गद्दी पर बैठे। ये बड़े विद्वान्, प्रभावशाली एवं राजनीतिज्ञ थे। सन् १९३१ ई.की गोलमेज परिषदमें इन्होंने निर्भीकता-पूर्वक अपने विचार रक्खे, जिसके कारण अंग्रेज सरकार इनसे नाराज हो गई और यह अलवर

छोड़ कर यूरोप चले गये, जहाँ पेरिसमें इनका देहान्त हो गया। इनकी मृत्यु पर अंग्रेज सरकारने महाराज तेजसिंहको इनका उत्तराधिकारी नियत किया, जो वर्तमान हैं।

इस पुस्तक 'लावारासा'से संबंधित नरूकावंशीयोंका परिचय उक्त पंक्तियोंमें दिया गया है। जयपुर और अलवर प्रान्तमें कई नरूके कई ठिकानेदार और भोमियाँ हैं। ये स्वभावसे हीं राजपूत गौरवानुकूल, शूरवीर, दृढ़प्रतिज्ञ, पराक्रमी एवं उदार हुए हैं। इनकी कीर्तिपताका आज भी इनके कार्यकलापोंके कारण फहरा रही है। यहाँ तक कि नरूकोंका बच्चा बच्चा भी "पद्धरका बादशाह" और "तीसरे तख्तका स्वामी" कहलाता है। यह प्रसिद्धि क्यों हुई इसकी अभी शोध ठीक ठीक नहीं हो पाई है। कोई इन्हें 'पारधके' कोई 'पाधरके' और कोई 'पद्धरके बादशाह' कहते हैं। मुझे चारणों आदि कई व्यक्तियोंसे जानकारी हुई है वह इस प्रकार है। कितने ही कहते हैं कि बरसिंहने कलाधर झालाको उसकी ही कटारीसे मारा था, अतः ये "पारधके बादशाह" कहे जाते हैं। 'पारध' का अर्थ डिंगलमें तरवार है, पारधी छुरी, कटारीको कहते हैं। निहत्थे और विवश बरसिंहने अपनी प्रत्युत्पन्न बुद्धि और कटारी चलानेकी कुशलतासे यह प्रसिद्धि प्राप्त की हो तो निःसंदेह 'पारधके बादशाह' कहलाने योग्य उनका यह कार्य था। कुछ यह कहते हैं कि बरसिंहने निर्वाण चौहान बीसलदेवकी पुत्रीसे—जिसका संबंध बरसिंहके साथ करनेके लिए टीका आया था और पिता राजा उदयकर्णसिंहके यह कहने पर कि यदि हम भी जवान होते तो टीका हमारे लिए भी आता, उस कन्याको मन ही मन माता मान कर पितासे विवाह करा कर उस कन्याकी संतानोंके लिए राजसिंहासनका परित्याग कर अपनी पत-मर्यादाका पालन किया। इसलिए वह पद्धरका बादशाह कहलाने लगा। 'तीसरे तख्तके स्वामी'के लिए यह कहा जाता है कि निर्वाण चौहान बीसल देवकी पुत्रीसे राजा उदयकर्णसिंहके दो पुत्र थे। बड़े नृसिंह और छोटे बालोजी। नृसिंह आमेरके स्वामी हुए। वे बच्चे ही थे। कलाधर झालाके मारे जानेके पश्चात् आमेरराज्यके भाई बेटोंने (बरसिंहके अतिरिक्त) आमेर राज्यके तीन बराबर विभाग कर तीनों भाइयोंमें बटवा दिये। आमेरके स्वामी नृसिंह रहे, बालोजी अमरसरके और तीसरे विभागके स्वामी बरसिंह हुए। तबसे तीसरे तख्तके स्वामीका संबंध इनके और इनकी संतानोंके साथ किया जाता है। कुछ लोग यह कहते हैं कि किसी मुगल सम्राटने किसी नरूका सरदारसे प्रसन्न होकर "पद्धरके बादशाह और तीसरे तख्त" की उपाधि दी थी। एक सज्जनसे यह भी सुना कि सम्राट अकबर एक बार महाराणा प्रतापसे जंगलमें एक एकान्तमें पत्थर पर बैठे हुए बातचीत कर रहे थ, उस समय कोई नरूका सरदार उधरसे आ निकले। वह बड़े निर्भीक, वीर और तरवार चलानेमें बहुत कुशल थे। सम्राट अकबरने उनका यह कहकर स्वागत किया "आओ 'पारध के पादशाह,' विराजो", नरूका सरदारने कहा कि आप दोनों सम्राट तो अपने अपने तख्त पर विराजमान हैं मेरे लिए स्थान कहाँ है। इस पर सम्राट अकबरने उसे एक पत्थरकी ओर इशारा करते हुए कहा कि आपके लिए भी यह तख्त है। इन बातोंको देखते हुए कुछ कहा नहीं जा सकता कि सत्य क्या है? यह विषय

शोधकी अपेक्षा रखता है। अस्तु, कुछ भी हो यह प्रसिद्धि तो इन नरूकोंके साथ है ही।

नरूका वंशीय राजपूत, राजपूतोंमें प्रसिद्ध वीर, पराक्रमी एवं साहसी हैं। इनके सत्साहस व वीरतापूर्ण कार्योंके कारण कई कहावतें इनकी प्रशंसामें प्रचलित हो गई हैं। उनमेंसे ये दो अत्यन्त उच्च कोटिकी हैं —

(१) "नरूकैको नरूका मारै, और कै मारै करतार।"

(२) "नरूको कटारी न्याय बांधे, तखतका धणीसूं तोड सांधै।"

वास्तवमें इन नरूकोंके यशका वर्णन कई कवियोंने कई प्रकारसे कर मां भारतीकी सेवा की है। प्रस्तुत ग्रंथ "लावारासा" में वर्णित प्रसंगोंके समय पिंडारी व पठान दस्युओंके आतंकसे राजस्थान बड़ी ही डांवाडोल स्थितिमें हो गया था। स्थान स्थान पर राजस्थानीय जनताके जानमालकी बहुत ही हानि हुई थी। इन दस्युओंका दमन करनेकी शक्ति उस समय किसी भी राजस्थानीय रियासतमें नहीं थी। ऐसे विकट अवसर पर इन नरूकाओंने स्थान स्थान पर, केवल अपने बाहुबलसे, इन क्रूर दस्युओंसे मुकाबला कर जो वीरत्व प्रदर्शित किया है, वह प्रशंसनीय एवं गौरवयुक्त कैसे नहीं कहा जा सकता ? उस वीरत्वने कवियोंकी वाणीको जनताकी ओरसे कृतज्ञता ज्ञापन करनके लिए बाध्य कर दिया। परिणामस्वरूप नरूकोंकी प्रशंसामें स्फुट छंदों और प्रबंध ग्रंथोंका निर्माण हुआ। 'लदाना' (माधोराजपुराका घेरा) और द्वितीय लावा युद्ध विषयक वर्णन अन्य कवियोंके भी प्राप्त हुए हैं, जिनका संक्षिप्त परिचय दे देना अप्रासंगिक न होगा।

संवत १८७४ वि०में (लदाना युद्धकी समाप्तिका वर्ष) महाकवि श्रीकृष्ण भट्टके प्रपौत्र महाकवि. मंडनन २१५ छंदोंमें (दोहा, सवैया, कवित्त, चौपैया, झूलना, अड़िल्ल, पादाकुलक और सारंग) "भारतचरित्र"का निर्माण किया था। इसमें सर्वप्रथम चौपैया छंदम जगदम्बाकी स्तुति की गई है। फिर रवि कुलके वंशक्रममें प्रसिद्ध प्रसिद्ध रघुवंशियोंके नाम देते हुए, इस कुलमें नरूसिंहका जन्मवर्णन दे कर भारतसिंहके पूर्वजोंके नाम प्रशंसा सहित दिये गये हैं। कविके अनुसार उनका क्रम इस प्रकार है — नरूसिंह, दासा, करमचंद, संसमल, कान्हासिंह, केशवदास, उग्रसिंह, रघुनाथ, अजबसिंह, मुकुंदसिंह, केसरीसिंह, सांवतसिंह, मदनसिंह, और भारतसिंह। भारतसिंहकी प्रशंसाके पश्चात्, लावा युद्धमें जो भारतसिंहन पराक्रम दिखाया था उसका वर्णन दिया गया है। इसके पश्चात् क्रमसे भारतसिंहका माधोराजपुराके किलेको, महाराज स. जगतसिंहकी महारानीसे, जो महाराज मानसिंहकी पुत्री थी, छीन कर अपने अधिकारमें करना, महाराज मानसिंहका अमीरखांको किला वापिस दिलानेके लिए लिखना, अमीरखांका भारतसिंहको किला वापिस दे देनके लिए लिखना, भारतसिंहका अवसर पा कर अमीरखांके बीबी बच्चोंको पकड़ कर माधोराजपुरेके किलेमें ला कर

रखना, अमीरखांकी चढ़ाई और किलेको घरना, नरूके राजपूतोंका स्थान स्थान से आ कर इस युद्धमें सम्मिलित होने आदिका वर्णन दे कर कविने युद्धवर्णन, अरि पलायन वर्णन, प्रतापवर्णन, सुयशवर्णन, हयवर्णन, गयवर्णन, तरवार वर्णन, दानवर्णन, दिनचर्या वर्णन, आशिर्वाद और ग्रंथ निर्माण वर्णन दे कर, ग्रंथ समाप्त किया है। पाठकोंके रसास्वादके लिए इस ग्रंथके कुछ उद्धरण देना अनुपयुक्त न होगा।

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

अथ भारत चरित लिख्यते। तहाँ प्रथम मंगलाचरण।

छंद चौपैया

जगदम्व भवानी, सब जग जानी, रंगभरी सरसानी ;
नित सुखसों सानी, रहत अमानी, ब्रह्मबखानी, रानी।
सवकी है कारन, दीखत पार न, बैरिन फारन गानी ;
सुख संपति सरसै, सब गुन बरसै, देवनने मन आनी॥
मुंडलकी माला, सोहत आला, सिंघ बिसाला चढ्ढी ;
देवनके तारन, रक्कस मारन, तरल तेग जिहिं कढ्ढी।
हाथिनकी छाला, वसन रसाला, नैन महा मद मढ्ढी ;
सेवकको सुंदर, करन पुरंदर, दैंन अभय वर पढ्ढी॥
नैननमें ज्वाला, रहत उजाला, तीन भवन प्रतिपाला ;
आनंदकी साला, प्रगट विलाला, जगमगात ससि भाला।
सुंदर मुख सोहे, मनकूं मोहे, हार मुकत भरि थाला ;
सांपन के गहने, अंगन रहने, भगत इच्छकों ढाला॥
जा बिन कोई, पहिले होई, महाकालकी प्यारी ;
अंगनकी सोभा, मनकी लोभा, कोटिन ससि उनिहारी।
मौंसनके परवत, खात सु सरवत, पिवत रुधिर रस भारी ;
वेदनमें राजे, सब गुन छाजै, कोटिन रवि छवि धारी॥
ऐसी यह बानी, चरित अगांनी, कवि 'मंडन' मुख आई ;
पारथ सम भारत, को भरि आरथ, चरित सुभग वनवाई।
रसमय धरि बातें, जीति सुनाते, छंदवंद छवि छाई ;
भल आफताब, महताब प्रतापहि, सुजस जगत सरसाई॥१॥
संग रजा महमंद अकब्बर औ महताब फजल्लहि गायो;
सेर महा जमसेर, आखूंनहि आदि जमैयतसों सरसायो।
तोबनकी दिय मार, धमाधम केते दिनान लों बंब बजायो;

भारथ तेग नचाइके 'लावा' सो वीर-खांमीरखां मारि चलायो ॥५४॥
जासों सदा अंगरेज डर्यो करे, मीरखांसों निज सेन सजाई;
घेरा दियो चढि आइके लावाके गोलनकी बरछार देखाई।
'मंडन' हल्ले किये कितने जहाँ भारथने तहाँ तेग नचाई;
काटि पठाननके गन संभुको मुंडकी माल गरे पहराई ॥५५॥
कोइ न जिनके लखे न नख नैननसों, तिनको मिले न अब पैन्हनकों तनियां।
सोती सुख सेजनपै सदा अब भूखी भई, फिरत हैं देखती दुकाननमें बनियां।
'मंडन' महीन्द्र राव मदनके भारतने, कीनी है कितेकनको हूर हूर कनियां।
दुखनसों छाय घर जाय जाय दुनियाँके, पनियां भरन लागी सबै तुरकनियां ॥१५२॥
यह भारतको चरित में, कीनो मति अनुसार। भूलचूक जो होय सो, लीजौ सुकबि सुधार ॥२०७॥
राजकाज सगरो लिख्यो, सबै जुद्धकी रीति। जंग जीति 'मंडन' कही, भरथसों कर प्रीति ॥२०८॥
कह्यो अरिनको नास यहाँ, कह्यो तेगको ताव। जस प्रतापके संग सब, कह्यो रैनको भाव ॥२०९॥
कही फौज सब गढ़ कहे, मृगिया कही उदार। हाथी हय हाजर कहे, कह्यो नाच रंगधार ॥२१०॥
दसरथ नृप सुत रामसिय, दोउनको रँगरूप। 'मंडन' कविने सब कह्यो, लिखिकै छंद अनूप ॥२११॥
नोऊँ रस यामें धरे, लखि हैं रसिक सुजान। नखसिखसों ईहि ग्रंथमें, लिखि भारथके गान ॥२१२॥
सब विधिसों सगरे चरित कहे ग्रंथ बधि जाय। ताते यह संछेपसों लीनो ग्रंथ बनाय ॥२१३॥

आशिर्वादवर्णन कवित्त

आगे को हमेस वेस जंगनके जीतिबेके, हाथिनके सीसपे निसान चढिवो करो।
कंचनसों मोती मनि मानिककी संपत्तिसौं, मुलक औ मवास मढ़िवो करो।
"मंडन" असीस दैकै मानी मानि मोज लैकै, गढ़ि गढ़ि छंदनके बंध पढ़िबो करो।
गंगा सम सुजस समेत राव भरथको, रैन दिन प्रबल प्रताप बढ़िवो करो ॥२१४॥
संवत दस सत आठ सत, चोहोतर सावन मास। सुदि तृतियाके दिन कियो पूरन चरित प्रकास॥२१५॥
इति श्रीमद्विद्वत्कुल चूडामणि कविकलानिध्यपरनाम श्रीकृष्णमहात्मज कवि सरस्वत्यन्याभिधेय द्वारिकानाथ सूनू कवि व्रजपाल तनय देवर्षि वर मंडन कवि विरचित भारत चरित्र सम्पूर्णम्।

दूसरे ग्रंथमें लावाके द्वितीय युद्धका वर्णन लावानरेश मंगलसिंहके समयमें अलवर रियासतके गूजूकीके निवासी बालाबक्स कविने 'नरूकुल सुयश' नामसे १३४ झमाल छंदमें किया है। इस छोटेसे ग्रंथमें कवि, मंगलसिंहका यशवर्णन करनेके हेतु जगदम्बाकी प्रार्थना करता है। तत्पश्चात् लावाके बाहर तलाबके किनारे शिव मंदिरका वर्णन, करणसिंहकी पूजा, एक मुसलमानका मंदिरमें जूते पहिने आने, करणसिंहका उस पर कटारीसे आक्रमण करने, मुसलमानका करणसिंहकी तलवारसे मारेजाने, इस घटनाके समाचारका लावा पहुँचने, और वहांसे कुछ सुभटोंके आने और मुसलमानोंको मार डालने, एक बालकका बचकर टोंक जा कर वजीरुद्दोलाको पुकारने, और उसके लावा पर चढ़ाई करनेका कविने वर्णन किया है। इसके बाद कविने टोंकके हाथी, घोड़े और सेनाका, लावाके वीरोंका,

इस युद्धमें सहायताके लिए जो आये उनके नाम, उणियारे और अलवरकी सहायताका और उनका युद्धवर्णन दे कर अंतमें मंगलसिंहकी प्रशंसामें ग्रंथ समाप्त किया है।

अब अंतमें यह सूचित कर देना उत्तम होगा कि इस ग्रंथके पृ० ६ के छन्द संख्या ३४ में, पृ० १३ के छंद संख्या ४३ में, और पृ० २३ के छंद संख्या ३५ में जो स्थान रिक्त दिखाये जा कर पदोंकी अप्राप्ति दिखाई गई है वह ठीक नहीं है। वास्तवमें मेरे पास जो हस्तलिखित प्रति थी उसमें दोहा, सोरठा, और छप्पय छंदके अक्तिरिक्त पद्धरि, मोतीदाम, भुजंगप्रयात आदि छंदोंके दो दो पदों पर ही छंद संख्या दी गई है। यह मुझे ठीक मालूम न होनेके कारण छंदशास्त्रानुसार छंदके चार चार चरण ले कर मैंने पदों पद छंदकी संख्या दी। इस प्रकार करनेसे इन छंदोंमें कहीं बाद एक चरण कम हो गया, मैंने यह समझा कि प्रतिलिपिकारकी भूलसे यह चरण लिखनेसे रह गये हैं, अतः भविष्यमें दूसरी प्रति मिलने पर ठीक कर सकने के लिए रिक्त स्थान दिखला कर पद कमीकी सूचना दी। किन्तु पुस्तक प्रेस में चले जाने और मुद्रित हो जाने पर श्रद्धेय मुनि श्री जिनविजयजी महाराजको, लावारासाकी एक अन्य प्रति श्रीयुत ठा० सौभाग्यसिंह जी, भगतपुराके सौजन्यसे प्राप्त हुई, उसे देखने पर सब समझमें आ गया। कविने मोतीदाम, पद्धरि, भुजंगी, निसाणी आदि छंदोंके १०–१२–१४ जितने भी पद बनाये उनकी एक ही छंद संख्या दी है। अतः अन्य प्रतिके अभावमें यह जो भूल हो गई उसके लिए पाठक क्षमा करेंगे।

इस ग्रंथ 'लावारासा'में शब्दार्थ व टिप्पणियोंके देनेमें मुझे स्वर्गीय श्रद्धेय हिंगलाजदानजी सेवापुरा वालों तथा श्रद्धेय बारैठ मुरारीदानजीसे पूर्ण सहायता प्राप्त हुई है। दूसरे शब्दोंमें यह कहा जाय कि यह कार्य इन्हीं दोनों महानुभावोंका है तो भी कुछ अत्युक्ति नहीं होगी। मैं तो आप दोनों महानुभावोंकी कृपाके लिए सदा ही कृतज्ञ रहूँगा। इसके अतिरिक्त ग्रंथ की भूमिका लिखनेमें श्री हेनरी टी. प्रिंसेप साहबके अमीरनामेके अंग्रेजी अनुवाद, ठा. नरेन्द्रसिंहजीके Thirty decisive Battles, मुन्शी देवीप्रसादजीके "आमेरके राजा" श्रीहनुमान शर्मा चौमूके "नाथावतोंका इतिहास" श्री नामनाथ रत्नूके "इतिहास राजस्थान," और श्री असगरअली आवरूके "तवारिखे महमूदाबाद"से सहायता ली गई है। अतः इन महानुभावोंका अत्यन्त कृतज्ञ हूँ। भूमिकाके संशोधनमें श्रद्धेय श्री मुनि जिनविजयजी महाराजका पूर्ण हाथ रहा है तथा पुस्तकके प्रुफ संशोधन और संपादन कार्यमें उचित परामर्शके लिये श्री पुरुषोत्तम लालजी मेनारीया, साहित्यरत्न और श्री गोपालनारायणजी पारीक एम. ए. का पूर्ण आभारी हूं।

वास्तव में, प्रस्तुत ग्रन्थको, इस रूपमें प्रकाशित करने-कराने का सब श्रेय श्रद्धेय मुनिजी महाराज श्री जिनविजयजी को है जिनने राजस्थान पुरातत्त्व ग्रन्थावलि द्वारा इसका प्रकाशन करना स्वीकार कर, और समय समय पर कई प्रकारकी प्रेरणाएं दे-कर, मुझे प्रोत्साहित किया। मैं इसके लिये, अन्तमें पुनः मुनिजी महाराजके प्रति अपना अनन्य कृतज्ञभाव प्रकट करता हूं।

–महताब चंद्र खारैड़

कविया गोपालदान विरचित

कूर्म वंश यश प्रकाश

अपर नाम

ला वा रा सा

—०—

दोहा

अलिक इंदु कुंजर तुचा, मुंडमाल वपु छारि ।
अहि भूषन बिजया भखी, जय जय जय त्रिपुरारि ।।१।।
किये नरूकन किलम भिरि, किते जुद्ध उन्मत्त ।
प्रथम 'मान' 'जगतेश'की, कहूं केलि कलहंत ।।२।।
जग प्रसिद्ध 'जयसाह' नृप, तिनके 'मधव' नरेश ।
'माधव'के 'परताप' नृप, पातिलके जगतेश ।।३।।
उठी 'मान' पति जोधपुर, जैपुर-पति 'जगतेश' ।
पर्‍यो बेध नृप दुहुन उर, हिय कंपिय दुहु देश ।।४।।

---

१. अलिक = अलीक, निश्कलंक । कुंजर = हाथी । तुचा = त्वचा, चमड़ा । छारि = राख । बिजया = भंग । भखी = खाने वाले ।

२. नरुकन = नरुके राजपूत । किलम = कलमा पढ़ने वाले मुसलमान । भिरि = भिड कर । मान = जोधपुर नरेश मानसिंह राठौड़ जिन्होंने सं० १८६० से १९०० तक राज्य किया । जगतेश = जयपुरेश जगतसिंह कछावाह जिन्होंने सं० १८५८ से १८७४ तक राज्य किया । कलहंत = युद्ध ।

३. जयसाह = सवाई जयसिंह जिन्होंने जयपुर बसाया और अनेक स्थानों पर ज्योतिष यन्त्रालय बनाए । मधव = महाराजा माधवसिंह प्रथम जिन्होंने सन् १८०७ से १८२४ तक राज्य किया । पातिल = महाराजा प्रतापसिंह ब्रिजनिधि कवि ।

४. उठी = उस तरफ । बेध = शत्रुता ।

चाँपावत पोकरण-पति, प्रबल 'सवाई' खिज्ज ।
बदल चढ़्यो नृप मानसों, बह्यो कलहको बिज्ज ।।५।।
कलह बिज्ज ता दिन बह्यो, लारां 'धूंकल' लाय ।
आनि मिल्यो 'जगतेश'सूँ, यम जुध करिय उपाय ।।६।।
साम दाम छल-छिद्र करि, नृप हिय रुचि उपजाय ।
मनहु मेघ बसि बात मंडि, चढ़्यो कच्छ-कुलराय ।।७।।
चढ़्यो सुनत 'जगतेश'कों कही 'मान' यह बत्त ।
हय फेरहि कछवाह धर, जीति करहि अपदत्त ।।८।।

छंद नाराच

चढ़यो नरिन्द मानयं, उदै दिशा प्रयानयं ।
मनो समुद्र ऊझले, रठौर आनि के मिले ।।९।।
बजे निशान नद्दवं, मनो कि घोर भद्दवं ।
उछाह जुद्धको बढ़्यो, कनोज-ईश लों चढ़्यो ।।१०।।
सुभट्ट सख्ख सक्खरं, लसंग लक्ख पक्खरं ।
धरा अडोल डुल्लयं, गजूं निशान खुल्लयं ।।११।।

---

५. पोकरणपति = पोकरण (मारवाड़) के स्वामी सवाईसिंह । खिज्ज = क्रोधित होकर । बदल = खिलाफ होकर । बह्यो = बोया गया । बिज्ज = बीज ।

६. लारां = पीछे । धूंकल = धोंकलसिंह जिनको जोधपुरकी गद्दीका हकदार बनाकर युद्ध हुआ । यम = इस प्रकार ।

७. बात = हवा ।

८. बत्त = बात । हय = घोड़ा । अपदत्त = अपदस्थ, अपमानित ।

९. उदै दिशा = पूर्व दिशा । ऊझले = उझलना, उफणना, मर्यादा छोड़ना ।

१०. नद्दवं = नाद, शब्द । भद्दवं = भादपदके मेघ । लों = इस प्रकार । कनौज ईश = राठौर पति मानसिंह ।

११. सख्ख, सक्खर = श्रेष्ठ शाखाके । लक्ख = देख कर । पक्खरं = पाखर । गजूं = हाथियोंके ।

रजीनि भान रुक्कयो, मनुंऽधकार मुक्कयो।
बिछोह चक्क चक्कयं, अनेक बीर बक्कयं ॥१२॥
बिमान व्योमतैं झुरैं, अनेक रंभ उत्तरैं।
महेस मुंडमालको, चल्यो करीनि खालको ॥१३॥
असोम जंत्र लै मुनी, अलापि बीरकी धुनी।
मनूंक बालकों गुडी, अनेक ग्रद्धनी उडी ॥१४॥
सरब्बतं चमूं जुरे, परब्बतं सरं परे।
उडीक मान कै पती, चढ्यो न क्यों जगत्पती ॥१५॥

दोहा

यम आगम सुनि 'मान'को, 'परबतसर' जुध थप्प।
त्रेपन तुड कछवाह-कुल, मिले आनि अप अप्प ॥१६॥
'अभयसिंह' नृप खेतडी, चढे जु दलको सज्जि।
'लिछमण' चढियो 'महणसर', पूर नगारे बज्जि ॥१७॥

छप्पय

'रायचंद' दीवान, 'रावचंदह' गोगावत।
'लछो' फतैपुर नाथ, रावराजा शेखावत ॥
राजापति 'खंडपुर,' 'नवल' 'दांतां,' पति निट्ठुर।

---

१२. रजीनि = रजसे। भान = भानु, सूर्य। मुनंऽधकार = मानो अंधकार। मुक्कयो = छूट गया हो, फैल गया हो। बिछोह = वियोग। चक्क = चकवा। चक्कयं = चकवी। बक्कयं = बोलने लगे।

१३. रंभ = अप्सराएँ। करीनि = हथनियोंकी। खालको = चमड़ेके लिए।

१४. असोम = अशांत, नारदकी वीणाका नाम। बाल = बालक। गुडी = पतंग।

१५. सरब्बतं = सब। चमूं = फौज। परब्बतं = पर्वतसर गांव। उडीक = उडीकना, इन्तजार करना। यती = इतनी।

१६. यम = इस प्रकार। थप्प = स्थापित करके। त्रेपन तुड = तरेपन शाखाओंके। अप अप्प = अपने आप।

१७. खेतडी = राजपूतानेमें शेखावाटी प्रांतका एक प्रसिद्ध नगर जिसके शासक राजा कहलाते हैं। महणसर = शेखावाटीमें ठिकानेका एक गांव।

पद्धरको पति साह 'भीम' 'उनियारे' अड्डुर ।।
'धूलो' 'झिलाय' राजावता, 'नाथावत' खांगा मिले ।
जोधपुर कवन दिल्ली तखत, एक पहर बिच उत्थलै ।।१८।।
त्रेपन तुड कछवाह, साख साखारां सुभट्टां ।
हैदल पैदल मिले, यवन हिन्दु गज थट्टां ।।
'बीकां' पति 'सुरतेश' आनि मिलियो मधि जैपुर ।
रहे आनि हकदार, किते गजबंध नरेसुर ।।
हैदराबाद सिंधी हुलखि, सबल जांनि सरनो गह्यो ।
हुय दीन तदिन जगतेशके, मीरखान चाकर रह्यो ।।१९।।

दोहा

मीरखान चाकर रह्यो, जदन भूपके सत्थ ।
तदन बध्यो बट बीज लों, कहूंस आगम कत्थ ।।२०।।

छन्द त्रोटक

जगतेश फवज्ज प्रबंधु करे, भुव कंपित भार दिगीश डरे ।
मन आन महीपनके प्रजरे, किनपै बसधा-पति कोप करे ।।२१।।

---

१८. लछो = लछमणसिंह सीकरके राव राजा । खंडपुर = खण्डेलेके स्वामी । नवल = नवलगढ़के स्वामी । दांता पति = दांतां नामक ठिकाणेके स्वामी, यह जयपुरसे पश्चिम में है । निड्डर = निडर । पद्धरपतिसाह = नरुके राजपूतोंको पाधरके बादशाह कहते हैं । उनियारे = जयपुरसे दक्षिणपूर्वमें है । धूलो = यह जयपुरसे पूर्वमें है । झिलाय = यह जयपुरसे दक्षिणमें है । ये सब जयपुरके ठिकाणोंके नाम हैं । उत्थलै = उथलना, विजय करना ।

१९. हैदल = घुड़सवार फौज । थट्टां = समूह । बीकांपति सुरतेश = बीकानेरके स्वामी सुरतसिंहजी जिन्होंने सं० १८४६ से १८८५ तक राज्य किया । मीरखान = अमीर-खां पठान, जिसको अंग्रेजोंने इस युद्धके पश्चात् टोंक आदि इलाका दिलवाकर नवाब बनाया । चाकर = नौकर । हैदराबादी सिंधी = हैदराबादी रिसाला नामक सेना दल जो रुपयेके प्रलोभनसे लड़ा करता था और लूटमार करता था ।

२० जदन = जिस दिन । सत्थ = साथ । तदन = उस दिनसे । बध्यो = बढा । बट बीजलों = बड वृक्षके बीजकी तरह ।

२१. फवज्ज = फौज, सेना । आन = अन्य । प्रजरे = प्रज्वलित हुए ।

सब शत्रुनके उर शोक बढ्यो, करि कोप कठी कछवाह चढ्यो ।
अप अप्प उकीलन खत्त लिखे, जयनग्र मंडोवर ईश धखे ॥२२॥
धखि लोयन कोयन खून भरे, दहुंघां उन्मत्त मतंग अरे ।
करि कोप चढ्यो नृप मान उठी, उमड्यो घनलों कछवाह अठी ॥२३॥
सुनि ठोर परी सदनद्दनके, परि ढिल्लिय सोर रवद्दनके ।
सब सूर सनाहनि टोप सजै, लखि आतुर कातर प्रान तजै ॥२४॥
सत पंच करीगन कोर बने, मनु कज्जल कूट धरागमने ।
लख तीन हयं सपतासनती, रथ पंक्तिनकी न भई गिनती ॥२५॥
अयुतं शर ऊंटन सोर भरे, शत षोडश तोप तयार करे ।
जकरे शत जोम जवान भुजां, करि मंजन धूपि नवीन धुजां ॥२६॥
द्विज आनि लिखे जय जंत्र जिते, पढ़ि के शत चंडिय जाप किते ।
मुख मंडि सिंदूरनि रत्त किये, अज एड महिष्षन भक्ख दिये ॥२७॥
जरदोजनि हेम ध्वजा सरफैं, तडिता घन बीच मनो तरफैं ।
ललकार मुखाँ सत जुट्टि लगी, इभ भष्षनि वाघनि सी उमंगी ॥२८॥

---

२२. कठी = कहां, किस पर । उकीलन = वकीलोंको । खत्त = ख़त, पत्र । धखे = क्रोधित हुए ।

२३. धखि = क्रोध करके । मतंग = हाथी । उठी = उस तरफ । अठी = इस तरफ । दुहुघां = दोनों तरफ ।

२४. सदनद्दनके = युद्धके नगारे । ढिल्लय = दिल्ली । रवद्दनके = मुसलमानोंके । सूर = शूरवीर । सनाह = बख्तर । कातर = कायर । ठोर = चोट ।

२५. सतपंच = पांच सौ । करीगन = हथियोंकी । कोर = किनार, पंक्ति । लखतीन = तीन लाख । सपतासनती = सप्ताश्वोंके संबंधी ।

२६. अयुतं शर = पंद्रह हजार । जकरे = पकड़े हुए । जोम = जोश । धूपि = धूप खेकर सोर = बारूद ।

२७. अज = बकरे । ऐड = मेंडा । महिषन = भैंसे । भक्ख दिये = बलि दी ।

२८. सरफै = सर सरावै उड़ै, हिलैं । तडिता = बिजली । इभ = हाथी ।

भरि पेटिय सोर महोरह की, मछ शूकर बाघ मुखी मलकी ।
मग दीरध तोप किती मचलैं , उन्मत्त करीगन लागि टलैं ।।२९।।
भिरि पाहन नालन आगि झरै, हय-पौरन भूमि दरार परैं ।
सर वापिय कुप्पन सुक्क परैं, थल बित्थुल नीर थलो निकरे ।।३०।।
मुनि सिंधुनि तोय ततो उछरे, डुलि दीरघ अद्रिन अंग भिरे ।
सिर सेस हजार मनी सरकी, भर पीठ कमठ्ठहुकी थरकी ।।३१।।
गजराजनि पिठ्ठि निसान खुलें, बर्षा ऋतु मानहुं सांझ फुलें ।
अनु पाय पताक किते उरझे, उडि बात समूह मतै सुरझे ।।३२।।
भुव जन्तु मृगादि थके पकरैं, नभ जन्तु परूं थकि भूमि परैं ।
उडि रज्ज धरा असमान गई, मनु भूमि पुकारन भार मई ।।३३।।
... ...
पचरंग रठौरनि दिठ्ठिरियं किय आनि मुकामहि मिठ्ठरियं ।।३४।।

दोहा

किये मुकामहि मिठ्ठरिय, लूटन लग्गे देश ।
'मानसिंह' 'जगतेश' दुहूँ, जुध कज चढे नरेश ।।३५।।

छँद त्रोटक

कछवाह रठोरनि कोप बढे, दुहूं ओर तुरंगन पिठ्ठि चढे ।
दुहुं ओर गाजों सिर ढाल खरी, चहुं ओर नगारन ठोर परी ।।३६।।

---

२९. सोर = बारूद । महोरह की = आगे की । मछ शूकर बाघ मुखी = मच्छी, सुअर और बाघके मुंहवाली तोपें । मग......टलै = मार्गमें बड़ी २ कितनी ही तोप चल रही हैं जो मस्त हाथियोंके धक्कोंसे आगे बढ़ाई जाती है ।

३०. पाहन = पत्थर । नालन = घोड़ोंकी टापमें लगा लोहा । पौरन = घोड़ेका खुर । वापिय = बावडियें । कुप्पन = कुअे । सुक्क परे = सूख गये । थल बित्थुल नीर थलो निकले = थलके स्थानपर पानी, और पानीके स्थान पर स्थल निकल आया ।

३१. मुनि = सात । उछरे = उछलने लगा । अद्रिन = पहाड़ । ततो = तति, समूह ।

३२. निसान = पताका, ध्वजा । अनुपाय = बिना उपायके । मतै = अपने आप ।

३३. परूं = परोंसे, पंखोंसे । मिठ्ठरियं = मीठडी नामक गांव ।

३६. नगारन ठोर परी = नक्कारों पर चोट पड़ने लगी ।

दुहुं ओर बनी चतुरंग अनी, दुहुं ओर करीनकि कोर बनी ।
दुहुं ओर पताकनि पंक्ति खुली, दुहुं ओर हलाहल कोर हली ।।३७।।
दुहुं, ओर उदग्गनि खग्ग किये, दुहुं ओर तुरंगन वग्ग लिये ।
ठननं किय कुंजर घंट सुनि, घननं किय पक्खर अंट घनि ।। ३८ ।।
हननं किय आतुर होय हयं, भननं किय भेरि भयान भयं ।
खननं किय खापन खग्ग तजी, सननं किय गिद्दनि पंख सजी ।।३९।।
झननं किय झांझर रंभ झुरे, रननं किय तत्थ रठोर मुरे ।
तिह ठोर रठोर अनी बदले, जगतेश नरेशहु आंनि मिले ।।४०।।

दोहा

मानहु कुलटा आनरत, निज पति निबल निहारि ।
सकल मिले जगतेशसूं, एक कुचामनि टारि ।।४१।।

छंद पद्धरी

जुट्टे न मान राजान जंग, नच्चे न भूत बैताल संग ।
बज्जी न तेग तुट्टे न बाढ़, गज्जे न तोप मानहु अषाढ़ ।।४२।।
बक्के न बीर आरान आय, छक्के न श्रोन जोगनि अघाय ।
खांपन उखारि बाही न खग्ग, झोकी न तेग ताजी न बग्ग ।।४३।।
बज्जे न जंत्र मुनि मेक तार, अच्छर अनेक गई निराधार ।
घायल असाद्धि डोले न घुम्मि, सानीन श्रोनतें रंग भूम्मि, ।।४४।।

---

३७. अनी = फौज । कोर = पंक्ति ।
३८, उदग्गनि = ऊँचे । खग्ग = खड्ग । बग्ग = बाग, लगाम । अंट = आंटिये, कड़ियें ।
३९. खापन = तलवारका म्यान ।
४०. तत्थ = वहाँ । मुरे = मुड गये, बदल गये ।
४१. कुचामनि = कुचामन वाले, कुचामन जोधपुरमें एक ठिकाना है ।
४२. बाढ़ = तलवारकी धार ।
४३. आरान = युद्धमें । छक्के = तृप्त होना । बाही = चलाई । ताजीन = घोड़े ।
४४. मेक = एक । असाद्धि = असाध्य । सानी = सानना, भीगोना, गीला करना ।

दोहा

तत्ती तोप न 'मान' किय, लिय न खग्ग जमदढ्ढ ।
पूगो मुसकल जोधपुर, गढ़ चढ़ पकरयो गढ्ढ ।।४५।।
लगो लैर कूरम कटक, मानुह सिंधु हिलोर ।
किय 'धूंकल' नागोरपति, दियो जोधपुर जोर ।।४६।।

छप्पय

मास त्रिगुन मोरचे, जगैं मंडोरहि मंडिय ।
करि मुरधरा विरान,'मान' भुव हुकम उचंडिय ।
दे 'धूंकलं' नागोर, थान थाना अप थप्पिय ।
मानव पगां मिलाय, पहुमि राठोरन अप्पिय ।
नृप मान रह्यो तप बल तदन, धर्म रठोरन हारियो ।
जोधपुर हूंत जगतो नृपति, फिरि जयनग्र पधारियो ।।४७।।
तोरन कलश पताक, तानि वित्तान घरोघर ।
राजा द्वार उद्दार, इंद्र आगार सरोभर ।।
हाटकमय आवास, जटित मानिक मोताहल ।
दर परदे जरदोज, सयन अतलस्सां मुखमल ।।
खुलि यंत्र यंत्र धारा चलित, मिलि कपूर केशर मलय ।
शीतल सुगंध आनंदमय, मंद मंद मारुत चलय ।।४८।।
भूपति चित भामनी देह दामनि धरि दंभनि ।
मानहु कामनि काम, रंभ लाखि होत अचंभनि ।।
मिलि समूह गायनी, गमन उनमत्त करीसम ।
खरी भूप बसिकरन, आनि सब इंद्र परी सम ।

---

४५. तत्ती = गर्म । जमदढ्ढ = कटारी ।
४७. उचंडिय = हटाकर । अप = अपने ।
४८. यंत्र यंत्र = फंवारे, फंवारे ।

बीणादि मधुर इत्यादि वर, सुखद लाय ध्वनि सुर्च्छना ।
पंचम निषाद संगीत मिलि, ग्राम ताल सुर मुर्च्छना ॥४९॥
लंक लचकि कुच उचकि, नृत्य गति वक्र सरल चलि ।
डुलि कुंडल चख चलित, उरझि कुंत्तल हारावलि ॥
अंग उलटि पट पलटि, कंबु ग्रीवा करि बंकित ।
थूंग थूंग ततथेय, बजत मंजीरनि संकित ॥
मुर पंच अष्ट बय भेद तिय, पंच भावदश हाव युत ।
दंपति प्रवीन रति कोक विधि, दिन छिनदा संभोग रत ॥५०॥
नहि मंडै दरवार, रहत भूपति अंतहपुर ।
कूरम दल वित्थुरिथ, गमन अप अप्प घरोघर ॥
मद आसव उनमत्त, कमठ-कुलपति कामासय ।
'रसकपूर' बस भयो, एक रस उर अभ्यासय ॥
यम सुनिय बत्त पति जोधपुर, जैपुर पति नन सज्जियो ।
नृप मान तदन अवनिय अदन, मीरखांन मंत्री कियो ॥५१॥
कपट द्रोह करि किलम, प्रथम मारुस्थल लुट्टिय ।
बहुरि आन नागौर दगै 'स्वाई' सिर कट्टिय ।
तज 'धूंकल' नागोर, मान-भय मानत भग्गो ।
भयो तदन दमजोर म्लेच्छ असमानह लग्गो ॥
नृप 'मान' बंधु हुई मानकथ, किलम कुप्पि कींनो कहर ।
करि बद्ध प्रबल चतुरंगनै, फिर लूट्टिय ढूंढार धर ॥५२॥

इतिश्री कूर्मयश म्लेच्छविध्वंस कलहकेलिवर्णन नाम सुकवि गोपाल दान विरचिता मान जगतेश विरुद्ध प्रथम प्रसंग समाप्त ।

—o—

५०. मुर पंच अष्ट वय = तीन पांच आठकी ऊमर वाली, षोडषवर्षीय वाला ।
५१. रसकपूर = जगतसिंहकी वेश्याका नाम । अवनिय = पृथ्वी, राजधानी । अदन = अदिन, बुरे दिन ।
५२. कथ = बात । कहर = गज़ब ।

लावा युद्ध

दोहा

एम मान जगतेशको, बरन्यो सुगम बिरुद्ध ।
लर्‌यो प्रथम लावै किलम, जिहि बिधि बरनूं जुद्ध ।।१।।

छन्द पद्धरी

जगतेश भूप रनवास रत्त, दल जोरि किलम आयोऽनुमत्त ।
प्रज्जानि दयो दुख एक साथ, सब लूटि लिये रिपु करि अनाथ ।।२।।

उतपात असुर किन्ने अपार, सम करी भूमि प्रज्जारि छार ।
लघुपुर निवास रहबें न पाय, सब दीन बसे गिरि दरिन जाय ।।३।।

द्विज संत बनिक वृत कियो छीन, सुरभी समहू रिपु घेरि लीन ।
हिरनाक्ष जेम कीनी हैरान, बहबे न दई भू भइ बिरान ।। ४ ।।

प्राकार ईश तज कै गुमान, भर दंड मिले सब आनि आन ।
कामांध भूप किय बधिर कान, सब देश भयो चल दल समान ।। ५ ।।

निज थान थान थाना जमाय, अपनाय भूमि दृढ़ करत पाय ।
यम करत उपद्रव खलकुलीक, आयो निशंक 'लावा' नजीक ।।६।।

दोहा

संग प्रबल चतुरंगनी, तुपक तोप तम्माम ।
येम असुर 'लावा' निकट, किनूं आनि मुकाम ।।७।।

---

४. बहबे = कृषि करना, खेत जोतना ।

५. चल दल = पीपलके पत्ते ।

६. खल कुलीक = दुष्ट वंशवाला । नजीक = नजदीक, पास ।

दवावैत

जिस बखत मीरखान, अहलंकार दिल मालीक बुलवाये, बड़े बड़े मीरजादे, अपने डेंरूसे चलि आये। कमर्दीखान; जाफरीखान, मीरजहान मीर, असमानखान, यकतारखान, तत्तार कर्नल जमसेर, बांई दस्त बांई फिर दाहनी दस्त समसेर। उसके बीच मीर मन्नु अरज गुजराई, इस किल्लेमें बहुत सी मालियत बतलाई। अपनी फौजका भय मान, इन रजपूतोंको जबरदस्त जान इन गाऊंके वकाल, जिसके ये हाल हवाल। तमाम इस किल्लेमें आया, जिससे अपना है दाया। हुक्म हौ इससे मामला ठहिरावैं, हुकम होय फजर किल्ले गरदावैं। जिसवक्त बोले मीर मुल्ला नवाबके चच्चा, बहुत सच्चा, मामले ठहिरायबेकी बात सच्ची, किल्ले गदरायबेकी बात कच्ची, ये हिन्दु कछवाहे कौम नरुके, देग तेगके मुद्देमें साबत कहूं न चूके, कल्लके रोज नारनोलके चाले द्वादस हजार सैयद* सांभरके खेत आये जिसपैं आमेर वा जोधपुरके महाराज दोऊ सल्लाह करि जंग करिबेको चलाये। हिन्दु मुसलमानके तीन पहर तलवार चल्ली, आफताबका तेज मंद हुआ बारूदकी धूमसे रात

दवावैत = यह एक गद्यका प्रकार है, इसमें अन्त्यानुप्रास मध्यानुप्रासका प्रयोग किया जाता है। यह दो प्रकारकी होती हैं। प्रथममें तो मात्राका कुछ नियम नहीं होता है और दूसरीमें २४ मात्राओंका एक पद बनाया जाता है। विशेष जाननेके लिए "रघुनाथरूपक" पुस्तक देखनी चाहिए। यह पुस्तक "काशी नागरी प्रचारिणी सभा, काशी" द्वारा प्रकाशित हुई है।

बकाल = बनिये। दाया = बैर। गरदावैं = घेरा देना। देग तेग = दान देनेमें और तलवार चलानेमें। साबत = सम्पूर्ण।

*मुगल सम्राट औरंगजेबकी मृत्युके पश्चात् शाहजादा आज़म और शाहजादा आलममें शाही तख्तके लिये युद्ध हुआ। इस युद्धमें शाहजादा आज़म उसका पुत्र बेदारबख्त मारे गये। अतः शाहजादा आलम "बहादुर शाह"के नामसे शाही तख्तका अधिकारी होकर बादशाह हुआ। इस युद्धमें महाराजा आमेर, जोधपुर, कोटा और नरवर, शाहजादा आज़मकी ओर थे। इस कारण बादशाहने नाराज होकर आमेर और जोधपुरको खालसे कर लिया था। और वहाँके प्रबन्धार्थ महारायखां फौजदार और सैयद हुसेनखां फौजदार को नियुक्त किया। दोनों नरेशों (जोधपुर और

मिल्ली। सैयदकी फौज सिरजोर जानी, राठौर कछवाहोंकी फौजने हार मानी। हिन्दूकी फौज सिकिस्त खाई, यह बात नरुकोने सुन पाई। उनियाराके संग्रामसिंह चोरुके हरनाथ, लदानाके केसरीसिंह तीनों एक साथ। द्वादस हजार सैयदकी फौजपै सात हज्जार तौखार पटका, सद रहमत उस सैयदको एक पहर फेर भी अटका। फिर सैयद तो भागे, सैयदूके पीछे ये नरुके लागे। बादशाहोंके माही मुरातब, फील सुद्दे निशान सिलैखानां सब। उस सैयदका असबाब छीना, आमेरके महाराज जयसाहको लाय दीना। सब हिन्दुस्तानमे सराह पाया, जयसाहने कायदा बधाया। करावीन, खंजर कटार फरी पिस्तोल तलवार, तमाम आयुधों सुद्दे सलाम की परवानगी पाई। जलेब चौक सिरे ड्योढी तलग इसके नगारों पर परै घाई। ऐसे 'उनियारा'के राजा जिसके तोर, तैसे ही 'लदाना',के पाटवी सबके सिरमौर। 'लदाना'के 'मदनसिंह' जिसका जाया, कंवर 'भारथसिंह' बहुत तेज बतलाया। 'लदाना','लावा','चोरू','पचाला','महरचो','झाक, सेरोंका आला। लावासे जंग जुरोगे, ये बेड़ा बरबाद करोगे।

आमेर)ने महाराणा उदयपुरसे सहायता प्राप्त कर पहिले जोधपुरको अपने हस्तगत किया। इसके पश्चात् आमेरको हस्तगत करनेके लिये चढ़ाई की। इस युद्धमें हुसेनखां का पुत्र मारा गया और वह स्वयं भाग गया। इसके पश्चात् दोनों नरेश अजमेरकी ओर बढ़े और सांभरके निकट मुगल फौजदारोंसे इनकी मुठभेड़ हुई। इस स्थान पर मेवातका फौजदार बड़ा हुसेनखां अपने दोनों पुत्रों सहित मेड़ताके फौजदार अहमद सैयदखां और नारनोलके फौजदार ग़ारतखां सहित मुक़ाबलेके लिए आ डटे। इस युद्धमें राठौर और कछवाहोंकी सेना परास्त हो गई। और सैयदोंकी सेना खुशियाँ मनाने लगी। इधर उणियाराके राव संग्रामसिंह अपने नरूका बंधुओं सहित एक टीलेके पीछे दूसरे दिन युद्धमें सम्मिलित होनेके लिये डेरा डाले हुए थे। रावजी शिकारके बहुत शौकीन थे। अतः इनके साथ ५०० शिकारी योद्धा और ५०० सधे हुए शिकारी कुत्ते हर समय साथ रहा करते थे। इस समय भी वे साथ थे। इसके अतिरिक्त १५०० छटे हुए वीर योद्धा और थे। दूसरे दिन प्रातः काल युद्धमें सम्मिलित होनेके लिए टीले पर चढ़कर नीचे उतरने लगे, वैसे ही सैयदोंकी सेना दिखाई पड़ी। रावजीने ५०० शिकारी कुत्तों और अपने वीर बन्धुओं सहित सैयदों पर आक्रमण कर दिया और एक भी शत्रुको जीवित नहीं छोड़ा। इस प्रकार राठोड़ और कछवाहोंकी प्रथम दिनकी पराजयको विजयमें परिणित कर दिया। आमेर नरेश सवाई जयसिंहने जब इस विजयके समाचार सुने तब एकाएक उन्हें विश्वास ही नहीं हुआ। जब रावजीकी बातें उन्हें ज्ञात हुई तब वे अत्यन्त ही प्रसन्न हुए। और रावजीके निर्णयानुसार आधी सांभर पर जोधपुरका अधिकार स्वीकार कर लिया। यह युद्ध सन् १७०८ ई० ता० ३ अक्टूबरको हुआ था।

दोहा

वरज्यो मीर मुलाह तब, असुर न मानी एक ।
जंग जुरिबा 'लावै' जदन, ऊठे असुर अनेक ।।८।।

छंद पद्धरी

यम सुनत वत्त प्रजरयो नवाब, परि तप्त तेल जनु बूंद आब ।
किय रक्त नैन भ्रकुटी करूर, कहि जुरहु जंग 'लावा' जरूर ।।९।।
यम सुनत मात्र बोले जवान, सब करहि कोटि भूमी समान ।
कहि 'गोशखान' लरि करहि बाट, उन्मत्त फील तोरहि कपाट ।।१०।।
'करनैलखान' यम कहिय आय, दे सुरंग कोट देहैं उड़ाय ।
'जमशेर' कही चहुँ कोर रुद्दि, फिर लाय नसैनी परहि कुद्दि ।।११।।
'ममरेजखांन' बोल्यो रिसाय, गढ़ करहुं सफा तोपन लगाय ।
'असमानखांन' कहै सुनहु इक्क, सब चलहु फोज किल्ले नजिक्क ।।१२।।
'मुलतानखांन' यम कही बात, हो जाय सेन सब तूल पात ।
'आखून' कही रजपूत ठाढ, वीराधि वीर गढ बहुत गाढ ।।१३।।
बहु तोप कंगूरन करत केल, सब रंध्र रंध्र जम्बूर मेल ।
बारूद बहुत सीसा समेत, करिहैं निसंक रनवीर खेत ।।१४।।
फिरि कर्‌यो गाढ़ संगर लगाय, जो मर्‌यो चहत सो निकट जाय ।
उन्नत सफील परिखा अथाह, मरि, भूमि देत रजपूत-राह ।।१५।।

---

(६) तोखार=घोड़े। सुद्दे=सहित, साथ । सराह पाया=प्रशंसित हुए। कराबीन=कड़ाबीन, एक प्रकारकी बंदूक । फरी=डांड पटा। ड्योडी तलग=ड्योडी तक। घाइ=चोट। महरच्यों, झाक=गावोंके नाम। सेरोंका आला=शेर(सिंहों)के स्थान। वरज्यो=मना किया।

(१३) तूल=रुई। पात=पत्ते।

(१४) जम्बूर=एक प्रकारकी छोटी ताप।

(१५) संगर=संगठन करके। सफील=कोट। परिखा=खाई।

'आखून' कही मानी न एक, कोप्यो नवाब नही तजी टेक।
ललकारि तोप जूटी लगाय, गढ़ घेरि लयो चहूँ फेर आय ।।१६।।

छप्पय

यम 'खुमान' उच्चर्यो, येम 'सलसाह' उचारे।
यम अक्खी 'बलवंत', येम 'सादूल' बकारे ।।
यम बुल्ल्यो 'हनुमंत', ईस महुकमं यम बुल्ले।
मार-मार उच्चार सार, सिप्फर कर झल्ले ।।
सरमीरखांन आगन्तु हम, अरिगन बारन खुट्टि है।
तुट्टे न कोट मृगराज थहि, सार-धार सिर तुट्टि हैं ।।१७।।
कवन भूमि उत्थलहि, कवन सर नीर मथावैं।
कवन कालनि गहौं, कवन गिरि मेरु उचावैं ।।
कवन उरग मनि लेत, कवन असमान उचंडैं।
कवन बात कर गहैं, कवन "लावै" जुद्ध मंडैं ।।
परलोक जाय आवै कवन, कवन मीच-आलै गवन।
कंठीर कंठ हिम कंठ लौं, कर पसारि घल्लै कवन ।।१८।।

दोहा

सुनि 'सलसाह' 'खुमानसी', करो विलंब न काय।
कहि ठाकुर धर अप्पनी, ऊभां पगां न जाय ।।१९।।
सिर साटै धर लेत हैं, ठाकुर रहो न चीत।
फिर धर साटैं सिर दिये, रजपूतों यह रीत ।।२०।।

---

(१६) टेक=जिद्द।
(१७) सार=तलवार। सिप्फर=सिफ़र, बड़ी तलवार। सलसाह=नाम विशेष।
(१८) उचावै=मस्तक पर रखना। आलै=आलय,स्थान। कंठीर=सिंह। हिमकंठ=सोनेका कठला।
(१९) उभां पगां=यह एक मुहावरा है, पैरों पर खड़े हुए।
(२०) साटै=एवजमें। नचीत=निश्चिंत।

छंद त्रोटक

इतने लुकमान डकार लयं, उडि धूम धरा असमान गयं ।
चहुँ ओर नरुकनके दलयं, उलटे मनु सिन्धु हिलोर लयं ।।२१।।
चतुरंगनि ठेलि रवद्दनकी, जुद संगरची अपसद्दनकी ।
जुध भार भुजानि 'खुमान' लयं, विजयी मनु भारतके समयं ।।२२।।
बलवंत भयो बलि भद्र बली, हथनापुर लों सब सेन हली ।
'हनुमंत' बली हनुमंत भये, कर तोल उदग्गिनि खग्ग लये ।।२३।।
अरिको दल देखि 'सदूल' उठ्यो, मनु केहरि सीस करीनि रुठ्यो ।
न सहें अरि तोप अवाज 'सलो', जनु बंधि लयो अपु कंध किलो ।।२४।।
बहु बंधु बरातिय संग लये, सिर सेहर केहर साज किये ।
निकसे गढ़ बाहरको लरिबा, अरि-सेन-कँवारियको बरिबा ।।२५।।
रसबीर हुलस्य हिये उलहो, दुलही चतुरंगनिको दुलहो ।
कसि हल्लय फौज किलंमनकी, बनि सिल्लिय टोय झिल्लंमनकी ।।२६।।
किलमी चतुरंगनि येम चली, कि हलाहलकी सरिता उझली ।
त्रहिके नद पानिप तुंबुरयं, चहिके चहुँ ओरनि जंबुरयं ।।२७।।

---

(२१) लुकमान=ऐसा कहते हैं कि 'तोप'की ईजाद हकीम लुकमानने सर्व प्रथम की थी इसलिए यहां इसका अर्थ तोप है ।

(२२) अपसद्दनकी=नीचोंकी, अधमोंकी ।

(२४) सलो=सलहसिंह । सदूल=शार्दूलसिंह । (२५) लरिवा=लड़नेको । अरि-सेन-कँवारिय=शत्रुसेना रूपी कुंवारी कन्याको । बारिबा=विवाह करनेके लिए ।

(२६) उलहो=उमंग ।

(२७) त्रहिके=बजे । पानिप=प्रसंगानुसार इस शब्दका अर्थ ढोल, अथवा नगाडा होना चाहिए । मेरी सम्मतिमें यहां 'पानिघ' शब्द होना उपयुक्त है जिसका अर्थ "हाथसे मारे जाने वाला" होता है । "त्रहिके" शब्द नगाड़े व ढोलके बजनेके अर्थमें प्रयुक्त होता है अतः यहां "पानिघ" का अर्थ भी हाथसे मारे जाने वाला, बजाया जाने वाला वाद्ययन्त्र-ढोल व नगाड़ा होना उपयुक्त है । यदि 'पानिप'का अर्थ "हाथसे पिटने वाला" लें तो भी यही अर्थ निकलता है । इसी ग्रंथके पांचवें प्रसंगके छन्द सं १६७ में भी यह शब्द प्रयुक्त हुआ है । "पानिप तासे भेरि नद वीरा रस बग्गो ।" वहां भी इसका यही अर्थ होगा ।

बहिके सब कातर फट्टि हियं, ढहके उर मेच्छनि घट्टि जियं ।
सहिके भुव भार फनी फनयं, गहके नभ गिद्धनके गनयं ।।२८।।
अवली गुन चट्टिय तीरनकी, कर कट्टिय खग्ग उमीरनकी ।
खग धारनते सिर तुट्टि परैं, बिनु मत्थनि हत्थनि वत्थ भरैं ।।२९।।
न हलैं न चलैं कहु भूमि खरे, बलके सम ज्यों दोऊ मल्ल अरे ।
मिलि हिन्दुव म्लेच्छिहि येम चले, चहुवान बनाफर ज्यों न चले ।।३०।।
कर खंजर पंजर पार करैं, उरझैं पग अंतनि भूमि गिरैं ।
कितने लरि घायली भूमि गिरैं, मदिरा उन्मत्त मनो बिहरैं ।।३१।।
लखि बावन बीर बकैं विकसैं, मुनि जंत्र असोम बजाय हँसैं ।
भख आमिख गिद्धनि उद्र भरैं, मिलि हूर अपच्छर सूर बरैं ।।३२।।
सब जोगनि श्रोणित खप्र भरैं, ततथेयव भैरव नृत्य करैं ।
छननं किय पक्खर अंट झरैं, खननं किय खग्गन बाढ खिरैं ।।३३।।
झननं किय पायल रंभनकी, उपमा यक ओर अचभंनकी ।
बरसैं गलबाह कियां बिहरैं, अरधांग मनू हरि नृत्य करैं ।।३४।।
यम झूझि 'सलो' रन भूमि पर्‌यो, बरमाल अपच्छर डारि बर्‌यो ।
सिर झेलि महेश सुमेर कियो, रथ बैठि अपच्छर लोक गयो ।।३५।।

दोहा

येम किलो धारे सदृढ़, मारे किते उमीर ।
झूझि 'सलो' रन भुव परचो, हल्लो कर्‌यो तगीर ।।३६।।

---

(२८) ढहके=धंसक गये, ढह गये । घट्टि जियं=घड़ेकी तरह । सहिके=सहम गये । गहके=प्रसन्न हुए ।
(२९) अवली···तीरनकी=तीरोंके लगातार चलनेसे प्रत्यंचा चटक (बज) उठी ।
(३०) चहुवान=चौहान राजपूत । बनाफर=क्षत्रियोंकी एक जाति विशेष ।
(३१) पंजर=शरीर । अंतनि=आतें । (३२) मुनि=नारद । जंत्र असोम=असोम नामक नारदकी वीणा । उद्र=उदर, पेट ।
(३६) तगीर=बिदा करना, रवाना करना ।

'महुकम'की दिन प्रतिसधी, बधी किलम उर धेंख ।
येंम लरे खट मास लग, बाढ़व ग्रंथ विशेंख ।।३७।।

छंद मोतियदाम

'सलो' रन झूझि परद्यो जुध जुट्टि, लयो जस बास प्रत्थमिय लुट्टि ।
परे सत पद्धरकें पतसाह, करे जिनु अच्छरि लोक उछाह ।।३८।।
परे धर एक हजार किल्लम, परे बिथुरे जिमि टोप झिल्लम ।
परे कमनेंत बसू बल अंध, परे सर मीर नगारन बंध ।।३९।।
परे दल घायल एक हजार, कराहत अंगनि घाव सुमार ।
परे गज मेंक रवद्दनि घूमि, परे सत दोय तुरंगह भूमि ।।४०।।
करें मुनि नारद येंम सराह, कहै जुद्ध जीति गयें कछवाह ।
गयें कयलास मृडानि महीस, कहें जुध जीतिय पद्धरईस ।।४१।।
भई सब जोगनि श्रोन त्रपत्ति, गई यम अक्खि नरुकन जित्ति ।
गयें बकि बावन बीर विसुद्ध, भई जय हिन्दुनकी यहि जुद्ध ।।४२।।
... ...
उडी पल धप्पय गिद्धनि संग, कहे जुध जीतिय मोकमसिंग ।।४३।।

दोहा

यम जुट्टें खट मास जुध, हुए किलम हैरान ।
मनहु काम-चतुरंगनी, करी ईश बेंरान ।।४४।।

छप्पय

कितें झूझि धर परे, कितें घायल धर घुम्मिय ।
कबर घोर चहुँ कोर, करी कितनी खनि भूम्मिय ।।

---

३७. धेख=द्वेष ।
३९. बसू=पृथ्वी । नगारन बंध=जिनके आगे नगारे बजते हैं ।
४१. मृडानि महीस=पार्वती शिव ।
४४. बेरान=वीरान ।

केंतें संग ताबूत, कितें घायलों मिलायति ।
कितें करि कफनी, गयें अप्पनी बिलायति ।।
यम कियो जुद्धम हुकम प्रबल ।
धीठ किलम उर धक्खियो ।।
सिर शेंष रह्यो "लावो" सुद्रढ़, तब नवाब यम अक्खियो ।।४५।।
करहु तुच्छ मामले, कच्छु हम टेक रहावैं ।
यश लावैं गढ़ लरन, जियत हम फेर न आवैं ।।
करि बेड़े बरबाद, बाद बारूद उड़ायें ।
हम तुम जुट्टे तदन, अदन अहिमति उर छाये ।।
यम कहि बुलाय बतराय कछु, कपट द्रोह उर धारियो ।
करि दगो पकरि 'हनुमंत'को, आसुर कटक उपारियो ।।४६।।

इति श्री कूर्मयश म्लेच्छविध्वंश कलहकेलिवर्णन नाम सुकवि गोपाल्दान विरचित प्रथम लावा युद्ध द्वितीय प्रसंग समाप्त ।

——०——

४५. घोर=गोर, कबर । ताबूत=मुर्दा रखनेका बक्स, अर्थी ।
४६. अदन=खोटे दिन । अहिमति=घमंड, जोश । बाद=व्यर्थ । अदन=अदना, तुच्छ ।

लद्दाना युद्ध

छंद बेताल

करि दंभ गहि हनुमंतको भय मानि लावातें भग्यो ।
करि दुष्टता चहुं ओरते फिर देशको लुट्टन लग्यो ॥१॥
बर बीर धीर खुमानके, बहु रोस अंग उमंगयो ।
हनुमंतको छुटवाय हूं, यह थप्प 'लद्दाने' गयो ॥२॥
तिह पाट थान खुमानसों, मिलि कंवर भारथ बुल्लयो ।
हनुमंतको छुटवायके, मदिरा पीवें पन झल्लियो ॥३॥
हम जियत ही हनुमंतसी पर, हत्थ म्लेच्छनको पर्‌यो ।
यह बत्त हुव अनरत्थ सीं, सादूल सिंकुलतें जर्‌यो ॥४॥
करि सीस उन्नत अप्पनो, धर जोर लावातें लर्‌यो ।
हिन्दुवान ओ तुरकानके, तिह ठोर पावक वित्थर्‌यो ॥५॥
सल्लाह थट्टिय शहिरको, यह लरन लायक गढ्ढयं ।
लय संग हैदल पैदलं, तिन काल भारथ चढ्ढयं ॥६॥
निशि अर्द्ध माधव नग्रते, राजाधि अमल उत्थपियो ।
अनमेल कढ्ढिय कोटतें, निजराज पद्धर थप्पियो ॥७॥
प्राकार उन्नत आभलों, सामान पूरन सज्जयं ।
धमजग्र तोप उछाहकी, तम्बूर त्रम्बक बज्जयं ॥८॥
यम शद्द नद्दिनके सुने, जरिगे रवद्दनके हिये ।
चहुं ओर चल्लिय बत्त यों लरि कोट भारथसी लिये ॥९॥
निशि बीति भानू प्रकासियो, जिह भोर धीरज नठ्ठयो ।
लिखि मीरखान नवाबको, यह तोर कग्गल पठ्ठयो ॥१०॥

---

४. सिंकुल = सांकल, जंजीर ।
७. अनमेल = शत्रु ।
८. धमजग्र = झगड़ा, युद्ध । तम्बूर = एक वाद्ययन्त्र । त्रम्बक = नगारे, तासे ।
९. शद्द = शब्द । नद्दिन = शब्द करने वाले ।
१०. नठ्ठयो = नाश हुआ ।

दोहा

यम खत भारथ लिक्खियो, मीरखान यह मान।
कै छोड़ो हनुमंतको, कै झल्लो केवान ॥११॥

छंद पद्धरी

लावैं निकाम तुम कियऊ जुद्ध, तिह ठौर बध्यौं हम तुम विरुद्ध।
जुट्टे निसंक बे खून रार, तुट्टे न कोट तुम गये हार ॥१२॥
फिर एक बत्त बिनु उचित कीन, हनुमंत दगो करि पकरि लीन।
तुम करिय बत्त यह ठोर ठोर, करि दगो हन्यो स्वाई रठौर ॥१३॥
आमेरनाथको लून खाय, लीनो हरामखोरो उठाय।
जो करहि चेत जगतेश राय, तब काढि खाल भूसी भराय ॥१४॥
तें लूटि लये रिपु च्यार देश, मैं करू तोहि दरवेश भेश।
अब मान मूढ़ हनुमंत छंडि, हनुमंत न छंडहि रारि मँडि ॥१५॥

दोहा

लिखि कग्गल कछवाह दिय, लय धावन निज हत्थ।
आतुर धावन आनि के, दिय नवाबके हत्थ ॥१६॥
ले कग्गल बोले किलम, किसके भारथ नाम।
हैं उसके असमानतें, केतो उन्नत धाम ॥१७॥
पति 'लदाना'के कंवर, भारथ नाम कहाय।
नवां शहरको गढ़ लियो, अर्द्ध घरीमें आय ॥१८॥
भारथ हमसें जुध करैं, येंता क्या मकदूर।
पाव घरीमें हम करैं, उसके गढ़ चकचूर ॥१९॥

---

११. केवान = कृपाण।
१४. लून = नमक।
१६. कग्गल = कागज, पत्र। धावन = दूत।
१९. येता क्या मकदूर = इतनी क्या मजाल है।

हमसे जुध करि जीति हैं, क्या उसमें है जोर।
यम अक्खहु कासीद मुख, है भारत किह तोर ॥२०॥
धर पद्धरको पातस्या, ढूँढाहरकी ढाल।
आन महीपतके मुकट, शत्रुनको नटसाल ॥२१॥
अय बल, तप बल, बाहुबल, बलधनको बलराज।
भारथसे भारथ करै, से नहि दीसत आज ॥२२॥
को हिन्दु तुरकानको, को फिरँगान समाज।
भारथसे भारथ करै, से नहि दीसै आज ॥२३॥

छंद पद्धरि

कासीद आनि इम कहिय बत्त, सुनि मीरखान परगह समस्त।
को करहि कालसे चाल कोपि, को जात सिंधु पर तीर लोपि ॥२४॥
को लेत पानि उर्बी उचाय, को चलत पंथ कर पद कटाय।
को लेंत नागकी मनि हकारि, को जुरत सिंह सूतो बकारि ॥२५॥
को बैठि सोर पर आगि देत, जमदूत हूंतको करहि जैत।
को करत सर्व, अध्येंय ग्रंथ, को लेत पार उतराद पंथ ॥२६॥
गहि लेत कोन कर चलत पोन, पच्चास कोटि भुव भ्रमत कोन।
जिय चहत, हलाहल कवन खाय, को लेत मेरु परबत उठाय ॥२७॥
को 'लरत' मीचसे बीर बंक, असमान कोन झेलै असंक।
को लेत सीस पर काल दंड, को इंद्र वज्र झेलत अखंड ॥२८॥
बहनी बिछाय सुख कवन सोय, फल कवन खाय विष बीज बोय।
को मस्त नागसें करहि केलि, को लेत भूमि पब्बय धकेलि ॥२९॥

---

२१. नटसाल=तीरका शरीरमें फँसकर खटकना।
२२. अय बल=शस्त्र बल। दीसत=दिखाई देता है।
२४. परगह=परिकर, अनुयायी दल।
२४. उर्बी=पृथ्वी। बकारि=पुकार कर, दकाल कर।
२६. सोर=बारूद। जैत=विजय। बहनी=बह्नी, अग्नि।

को बीरभद्रको करहि खूंन, भारथसे भारथ लरहि कूंन ।।३०।।

दोहा

सुनिय बत्त कासीद, मुख बांच्यो खत्त जवाब ।
मनहु अग्निमें घ्रत परे, प्रजरचो येम नवाब ।।३१।।

छंद निसानी

सुनि खत भारथसिंहको पीछा लिखवाया,
हम 'लावै' दो लक्ख रुपये बरबाद गुमाया ।
उस रुपयोमें ओल यक ये हमको पाया,
इस 'लावा'दी ओलसे जीऊदा दाया ।।३२।।
उस लावाके ठाकरुं तुमको बहकाया,
के तुम किसके बादिस्याह फुरमान चलाया ।
के तुम किसके मामले चाहत सुरझाया,
के तुम किसके पील हो अरजी गुजराया ।। ३३ ।।
के तुम ऊँचे होयके हमसे बतराया,
के तुम दायेंदार हो कर तेग समाया ।
के तुम उसके मामलें बिच फैल मचाया,
तुजे पराई क्या परी अपनी निमराया ।। ३४ ।।
इस हम चारों देशको लूटे करि दाया,
सद रहमत तुजको सलाम मुझको बुलवाया ।

---

(२६) बह्नी = बह्नी, अग्नि ।
(३०) कूँन = कौन । भारथ = भारथसिंह, 'लदाने'के स्वामी मदनसिंहके पुत्र, युद्ध ।
(३२) ओल = गिरवीकी वस्तु । लावादी = लावैका ।
(३३) पीलहो = जिसकी हिमायत (पक्ष) की जावै, हिमायतदार ।
(३४) फैल मचाया = उधम किया, दंगा किया, तोफान किया । निमराया = नमेड़ना, निपटान तै करना । दायेंदार = बराबर ।

मैं भी सच्चा खान तो तुज ऊपर आया,
... ... ॥३५॥

दोहा

बड़े बिरादर खानके, सुने निरादर खत्त ।
किलम एक असमानखां, उन अक्खी यह बत्त ॥३६॥

छंद निसानी

ये खत भारथसिंह बांचिके रोस भरेगा,
मुझको आया ख्वाब कल वो ही निमरेगा ।
मेरो सच्चो ख्वाब है टारै न टरैगा,
जिसका आह्वय भारथा वो खून करेगा ॥३७॥
इस्दी औरत वालदा खाला पकरेगा,
ताई चच्ची आदि ले सब बंद करेगा ।
गढ़के अंदर कैद करि पग लोह भरेगा,
यें गल्लों सुन मीरखान अंदर प्रजरेगा ॥३८॥
किसका कह्या न मानि हैदल जोरि लरेगा,
त्रणसे भारत होयगा गज बंधु गुरेगा ।
उस 'लावा'से चौगना रनखेत परेगा,
औ पद्धरका पातसाह जुध खूब करेगा ॥३९॥
वो जाया मदनेसका मारचा न मरेगा,
ये बेडा नव्बावदा बरबाद करेगा ।
अल्ला जानै फोजमें बिरला उबरेगा,
यूं अक्खै असमानखां असमान गिरेगा ॥४०॥

---

३७. आह्वय=नाम । जिसका आह्वय भारथा=जो भारतके नामसे पुकारा (बुलाया) जाता है ।

३९. त्रणसे=तिनसे, उनसे । गज बंधु गुरेगा=हाथियोंके दलके दल गिर जायेंगे ।

छंद पद्धरी

असमानखान अक्खी अनेक, तउ मीरखान मानी न एक ।
बोल्यो रिसाय निज बल बखानि, कर तोलि तेग कर मूँछ तानि ।।४१।।
गढ़ बैठि गर्व कीनूँ गंवार, सम करो ढाहि प्रज्जारि छार ।
पाहन उखारि सर्बङ्ग मूल, देऊं भ्रमाय ज्यों पत्र तूल ।।४२।।
मम कोम सत्य पितु मात सैद, हनुमंत संग गहि करों कैद ।
मम रोस ज्वाल पावक प्रचंड, छंडहु नवाय भरवाय दंड ।।४३।।
यम कहहु बत्त कासीद जाय, तुम भरहु दंड मम परहु पाय ।
यम सुनत बत्त कासीद आनि, दय सीघ्र खत्त भारत्थ पानि ।।४४।।

दोहा

कहे दूत समझाय के, समाचार यह बिद्धि ।
तदन कवीले असुरके, रहत 'टोरडी' मद्धि ।।४५।।
चढे सहिरतें रोस धरि, लीनी पकरि खुमान ।
मानहुं रावनकी त्रिया, गही आनि हनुमांन ।।४६।।
तदन गही रावन तिया, परयो झूझि करि जंग ।
बीबी जियत नवाबकी, पकरी भारतसिंह ।।४७।।
हाव भाव रस गुन भरी, सोहत परी समान ।
किधूं कामकी कामिनी, को कवि करत बखान ।।४८।।

छंद त्रोटक

यवनी तिय हूर किधों उतरी, पनगी नग काम किधूं पुतरी ।
कच स्याम सचिक्कन सीस लसै, ससि पूरणको मन राह ग्रसै ।।४९।।
मृगयामदको सरि बिन्दु दियो, शशिके मनु मध्य शनी उदयो ।
उपमा यक ओर चुभी चितमें, ससि रोहनि अंक धरी हितमें ।।५०।।

---

४५. टोरडी = एक ग्रामका नाम है जो मालपुराके पास जयपुरसे दक्षिणकी ओर है यहां पर एक बड़ा जलबंध है ।

भुव बंक मनो युग अंग अरे, कुसुमायुध ज्यों धनु तानि धरे।
श्रुति कुंडल हाटिक हीर जरे, मुख मीन मनो मुकतानि भरे ॥५१॥
मुकता गनि बेसर नाक बनी, मनुकीर चुगंत अनार कली।
श्रम स्वेद कपोलनमें झलकैं, अलकैं दुहु नागिन सी तलकैं ॥५२॥

अधरायुग विम्ब पके फलसे,
मनु लाल प्रवालन पंक्ति लसे।
अधरानि बिचै दुति दंत बनी,
बिचि मानिक मानहु हीर कनी ॥५३॥
मृदुहास हुलास हिये न रुक्यो,
भरिके मनु कंज सुधा ढरक्यो।
दुति कंठ कपोलनकी झलकी,
उन कंठनते धुनि कोकिलकी ॥५४॥
मधुरी सुनिके धुनि काम बढै,
मुखते मनु मंत्र मनोज पढै।
कर चंपक डार सुगंध भरे,
मनु कंजसे नाल दुहूँ पसरे ॥५५॥
चुरियां मुकरावलि पानि हरी,
गुरु गेह मनु बुध संज परी।
गजरे मुकतानिके पानि लसे,
मनु दामिनिमें ऋषि पंक्ति बसै ॥५६॥
अँगुरी तिन हेम सलाकिनि सी,
मुँदरी जरि मानिक मद्धि बसी।
तिनकी उपमा कबि हेरि दयं,
गुरु भोन अंगार मनो उदयं ॥५७॥

....

५२. तलकैं = तलकना, हिलना, रपटके चलना।
५६. गजरे = एक जेवर विशेष, जो हाथमें पहिना जाता है। संज परी = सज्जित हो गया।

मँहदी कर कोमल बूंद धरी,
मनु कंजमें इन्द्रबधू बिथुरी ।
उर बीचि उरोज स्वयंभु लसे,
तटनी तट मानहु कोक बसै ॥५८॥
उमगी सुरखीं कुच कोर कढी,
मनु बूडनि कंज कलीनि चढ़ी ।
त्रबली तन रोम तरंगनि सी,
मधु सिंधुमें नाभिय कंज लसी ॥५९॥
भर श्रोणित पीठि विभाग नयो,
कटिको वित लूटि नितंब लयो ।
रुचि रूप जराव जरी रसना,
मुकता हिम नीलम हीर पनां ॥६०॥
बुध शुक्र बृहस्पति भोम शनी,
मनु तोरन कामके भोम तनी ।
उपमा यक ओर अचंभनकी,
युघ जंग बनी हिम रंभनकी ॥६१॥
अरुनाई महाउरकी दरसे,
तरवे मनु पावक से परसे ।
चटककी पट मेचक मोजनकी,
पनही मुकता जरदोजनकी ॥६२॥
सुरखी बनि सूथनि भारनकी,
लरकी लर श्याम यजारनकी ।

५८. स्वयंभु=शिव, महादेव । तटनी=नदी ।
५९. बूडनि=बीर बधूटी, वीर बहूटी ।
६०. श्रोणित=लाल । रसना=किंकिनी, करधनी, कणकती ।
६२. तरवे=पैरके तलवे । पट मेचक=काला रेशम । यजारन=इजारबंद, नाड़ा ।

कुरती कचिया मखतूलनकी,
उर माल चमेलिय फूलनकी ॥६३॥
सिर सारिय स्याम विदेशनिकी,
तिनपै हिम कोर सुवेशनकी ।
जिनकी उपमा यक ओर थटी,
बिजरी ससि कोंर मनूं लपटी ॥६४॥
झर लागि सुगंध मनो झपटी,
अलियावलि अंगनकी लपटी ।
तनकी सुकमार बयं तरनी,
लखि धीरजको न धरै धरनी ॥६५॥
मुनि देवनको मनहूं बिचल्यो,
चित भारथको तिनपै न चल्यो ॥६६॥

दोहा

नागरि गुन आगरि नई, सुंदरि तन सुकुमारि ।
गहि भारथ निज बस करी, लखी न द्रष्टि पसारि ॥६७॥
दान वीर तन प्रबलता, जुद्ध बुद्ध तप देश ।
क्यों बिगरै तिहं नृपतिको, लखै न पर तिय लेश ॥६८॥
कूक फजर कटकों परी, धरी न किलमूं धीर ।
सब दिन रोजे सम गयो, बढ़ी विषम कल पीर ॥६९॥
समाचार अनुक्रम सहित, सुने गही तिय तेम ।
पनग पिटारेके परे, अरि सिर धूनत येम ॥७०॥

छंद भुजंगी

पर्यो भीमको पूत ज्यों सक्ति मार्यो,
मनु मच्छिको तोयते हीन डार्यो ।

६७. कूक=हल्ला ।

मनु कांच सीसी सुरा हीन नंखी,
परचो पंख हीनू धरा जानि पंखी ॥७१॥
परचो नाग भूमी मनू भीम कुटचो,
परचो भूमि तारो मनूँ गैन तुट्यो ।
मनू आब हीनं गुर्‌यो कुंभ रीतो,
भई झंफ खाली पर्‌यो जानि चीतो ॥७२॥
पर्‌यो ब्याल ज्यों कीलनी बज्र किल्लो,
मनू भक्खि तारक्ष पीछे उगल्ल्यो ।
बटू बायके बेग मांनू उखार्‌यो,
पर्‌यो छाग भूमी मनू तेग मार्‌यो ॥७३॥
पर्‌यो म्लेच्छ भूमी बसु याम लोट्यो,
जर्‌यो अंग जाको मनू आगि ओट्यो ।
अला, पीर पैकंबरोंको पुकारैं,
जरी देहको रोषते फेर जारैं ॥७४॥
बके दीनताके किते बैन टेरे,
कबीले परे काफरों हत्थ मेरे ।
परे बित्थुरे भूमि जाके खिलूना,
कहा कैद जाने हमारे ललूना ॥७५॥
करी कोटमें कैद बीबी हमारी,
रमी आजलों रंगकी चत्रसारी ।
पर्‌यो त्रासतें जीव संताप ताके,
जर्‌यो लोह जंजीरकी ठोर जाके ॥७६॥
बिछूना बिना सोवना क्यों सहेगी,
हवा बंदके फंदमें क्यों रहेगी ।

(७२) झंफ=छलांग। चीतो=चीता, सिंहकी जातिका एक शिकारी पशु विशेष।
(७३) तारक्ष=गरुड। छाग=बकरा।
(७५) ललूना=ललनाएँ, स्त्रियां।

सुरा मांस हीनी रही ना कदे ही,
बिना खान पानं भई क्षीन देही ॥७७॥
सुनै हिन्दुके बैन सीना धरक्कै,
चिरी पिंजरैकी परी त्यों फरक्कै ।
बडे हिन्दुके बंधसे वो डरेगी,
निराधार किल्लों सफीलों गिरेगी ॥७८॥
उसीको लखै धीरता ना धरेंगे,
कही जाय ना हिन्दु कैसी करेंगे ॥७९॥

दोहा

करि साहस ऊठे किलम, झिलम टोय तनु झल्लि ।
पूरनागरन ठोर परि, चले प्रबल दल मिल्लि ॥८०॥

छप्पय

चढ़ि चल्लिय मेच्छान, भान गरदावलि भिल्लिय ।
हल चल्लिय हिन्दवान, खखड जुग्गनि खिल खिल्लिय ॥
धर डुल्लिय परिभार, पहुमि बसवान उचल्लिय ।
हल मिल्लिय परि जोर, शेष अहि फन पर सल्लिय ॥
लखि जोर सोर दिल्लिय सदन, तदन तोर दरसावियो ।
कर अली अली माधव नगर, येम सजी कर आवियो ॥८१॥
रंचे प्रबल मोरचे, करि मेच्छन वन कट्टिय ।
दीनी भूमि दरार, ओट संगर थिर थट्टिय ॥
कराबीन जम्बूर, तुपक पिसतोल तयारिय ।
ठोर ठोर नद घोर, यते लुकमान डकारिय ॥
झर तुट्टि-तुट्टि धरनी परत, लाय अवनी मनु लग्गई ।
घन घोर तोप आषाढ़ लों, दुहूं ओर यम दग्गई ॥८२॥
धरा धूम बित्थुरे, तोय ऊछरे सरोवर ।
गिरे शृंग नग तुट्टि, ताम प्रज्जरे तरोवर ॥

---

८१. बसवान=बसने वाले ।

नदी कूप नद सूकि, कूक कातर उर फट्टिय ।
आवट्टिय जल जोर, सोर दुहुं ओर उपट्टिय ।।
सर धून धून दिगपाल डरि, कसकि कमठ्ठनि पिठ्ठि भर ।
धर धुज्जि तलातल तल बितल, शेष सलस्सल छड्डि धर ।।८३।।

मेक मास वारूद हिन्दु तुरकान हुचक्किय ।
हल्लो करि फिरि हल्लि, देख भुवलोक भचक्किय ।।
मीरखान भाराथ करत, भारथ दहुं निभ्रत ।
दैत्य देव मिलि दुहूं करत मनु काल प्रलय कृत ।।
भरि बत्थ बत्थ गलबांह करि, येम असुर हिन्दुव भिलत ।
मानहु अनेक दिन बिच्छरे, उर मिलाय बंधव मिलत ।।८४।।

धर अम्बर घन धूम, सोर-झर बिज्जुर धक्खिय ।
तोप-सब्द घन-घोर तुपक-भख असनि वरक्खिय ।।
नाचत सूर मयूर सस्त्र-खद्योत भलक्किय ।
जरि कातर जैवास, भूमि रुहिराल खलक्किय ।।
किल्ले नजीक भिल्लै किलम, जिते सोर झर पर जरत ।
आषाढ़ मनहु बरषा समय, संमुख आनि सलभा गिरत ।।८५।।

छंद दीरघ नाराच

घटा घुमंडी घोरिके आषाढ़ अभ्र लों घिर्‌यो,
प्रकाश भानु को रुक्यो अकाश धूंम धूंधर्‌यो ।

---

८३. तरोवर=तरुवर, पेड़ । आवट्टिय=ओटना, उबलना । उपट्टिय=उत्पन्न हुआ । घर=स्थान ।

८४. हुचक्किय=हो चुकी, समाप्त हो गई । भचक्किय=अचंभित हो गये । भाराथ= युद्ध ।

८५. सोर झर=बारूदकी झल । असनि=ओले । सलभा=टिड्डी ।

कबान जाल तोपके नवाल कोटपै भवै,
जम्बूर रंध्र रंध्रके गिरेन्द्रसे रसै लवै ॥८६॥
अनेक मेक तोरकी दुरूह तोप धाहुरैं,
उडै दुरंगकी सफील फील फोजके गुरैं।
हकारि आत सांमुहैं मुसल्ल हल्ल बुल्लिकैं,
यते बकारि हिन्दु सीस आसमान तुल्लिकै ॥८७॥
कितेक लत्थ बत्थ ह्वै अचेत भूमिपै गिरै,
किते कुठार खग्ग धार सेल खंजरू लरैं।
कितेक हाथ पावके विहीन भूमिपै लुटैं,
कितेक सीसके कटे कबंध ऊठिके जुटैं ॥८८॥
कितेक गिद्धनीनको धपाय गूद अप्पने,
कितेक सुद्धिके विहीन मार मार जप्पने।
कितेंक ईस पोय लीन सीस मुंजकी गुनि,
कितेक खप्र खोपरी बनाय जुग्गनी चुनी ॥८९॥
कितेक बीर जुद्धमें अधीर होय बक्कही,
कितेक भूत खेचरी अधाय श्रोन छक्कही।
कितेक हूर अच्छरी बिमान बैठि ऊतरी,
कितेक जात व्योमको मनो अरट्ठकी घरी ॥९०॥

---

८६. तोपके नवाल=तोपके निवाले, गोले। रसे=रसने लगे, चूने लगे, टपकने लगे। लवै=लो, लपट।

८७. अनेक मेक तोरकी=अनेक प्रकारकी। धाहुरे=धहाड़ रही है। दुरंग=किला। सफील=दीवार। फील=हाथी। गुरै=चलै। सामुहै=सन्मुख।

८८. लुटैं=लोट रहे हैं। जुटैं=युद्ध कर रहे है, जुड रहे हैं।

८९. धपाय=तृप्त करके। गूद=मांसल स्थान।

९०. अरट्ठ=रहँट, कुएसे पानी निकालनेका मालाकार यंत्र।

छप्पय

येम नरूके असुर मास मुर त्रगुन घुमंडिय।
मीरखान अप्पनी जीयन आशा उर छंडिय॥
लोह बोह बारूद जुद्ध हल्ले करि हारे।
पैदल हैदल परे मीर कितने रन मारे॥
कबीले छुट्टिनिके अरथ कपट कत्थ केते करे।
ननु परे हत्थ किल्ले तदपि अरध मत्थ अवनि परै॥६१॥

येम असुर धर उद्ध पर्‌यो अनुचित अप्पन घन।
मनहु चाप गुन तुट्टि किधू किरवान मुठ्ठि बिन॥
स्वास ताप उर कंप मुख बेबरन फैन जुत।
रौष प्रलापहु दुःख मगन संताप नारि सुत॥
करनैलखान असमानखां दुहूं आनि धीरज दयो।
कबीले फजर छुटवाय है, तब नवाब अंजल लयो॥६२॥

चर चलाय बुल्लयो मीर असमान बुद्धिवर।
कुटिल नरूके कोम बहुत हुशियार जुद्ध पर॥
अति उन्नत प्राकार भरत सामान आन अत।
सीसे सोर अपार पंच हज्जार जुद्ध क्रत॥
जुट्टे अनेक दिन आज लौं, अब अनेक दिन जुट्टि हैं।
हनुमंत छड्डि पायन परो, तदन कबीले छुट्टि है॥६३॥

आनी चित मीरखां मीर असमान कही बत।
सर्वोपम श्रव सिद्धि सरब श्रीजुत लिक्खे खत॥
मिट्‌यो बैर अप्पनो रारि हमसे मत मंडहु।
हम छंडै हनुमंत नारि हमरी तुम छंडहु॥

[illegible] मास मुर त्रगुन=नौ महीने तक। बोह=प्रहार।
[illegible] [illegible]र उद्ध=पृथ्वी पर। अंजल=अन्नजल।
[illegible] [illegible]र=दूत।

तुम कहो कंवर सोही करै, ज्यान् माल कछु चित चही ।
यह बत्त निरंतर जानियो हम तुम अंतर है नही ॥९४॥
बंचि खत्त भारत्थ, कत्थ पिच्छी यम लिक्खिय ।
तुम बेगम हम पकरि कैदखाना बिचि नक्खिय ॥
तुम छंडो हनुमंत कैदखाने मत रक्खहु ।
एक लक्ख भरि दंड नारि छुट्टनकी अक्खहु ॥
नन होय बत्त मंजूर यह जुध हम तुम फिर जुट्टि हैं ।
भरि दंड आनि पायन परो, तदन कबीले छुट्टि हैं ॥९५॥
कै दारुन अहि किल्लि कालबेलिन बसि किन्हो ।
मनहु मुसाफिर बित्त ठगन मादिक ठग दिन्हो ॥
किधू प्रेत बक्करयो ताप मंत्रादिक तच्यो ।
परयो प्रपंचय हत्थ मनहु साखामृग नच्यो ॥
उच्चर्यो खांन सोही कर्यो, यों मति कीमत मानखां ।
मीरखां दारु-योषित भयो, तार गह्यो असमानखां ॥९६॥
करी एक उन्मत्त अस्व ईरान बिलायत ।
पाटम्बर जर तार भार मेवा सोखयत ॥
पेटी भरि मोकले एक लक्ख रुप्ये हाली ।
परसी खड्ग कटार जूट्टि पिसतोल दुनाली ॥
चुकुमार धनुष तुन्नीर शर, सार टोप पक्खर झिलम ।
करि मित्र भाव हनुमंतको बैर छंड्डि भेजे किलम ॥९७॥

सोरठा डिंगल

यम अक्खी असमाँण, पारख झूठी नहि पडी ।
तें राखी तुडताए, रजपूती हिंदवाणरी ॥९८॥

९५. पिच्छी=पाछी, वापिस ।
९६. कालबेलिन=सांपको पालने वाली जाति विशेष । दारु योषित=कठपुतली ।
९७. सोखायत=सौगात, उपहार, तोहफा । मोकले=भेजे, बहुत । हाली=उसी सन् सम्वतके ।

हिंदुवाणो तुरकाण, राह दुहूं जस उच्चरैं।
पारथ ज्यूं भुज पाण, भारथ मंड्यो भारथा ॥९९॥

हटियो बल हिंदवाण, ऊपटियो बल आसुरां।
मिटियो देख प्रमाण, थटियो भारथ भारथैं ॥१००॥

सबला पण साबूत, रहियो भारथ भारथो।
तुरकारां ताबूत, लागां मग्ग बिलायतां ॥१०१॥

कंपै घाव कराहि, निशि दिन चख झंपै नहीं।
मेछारां घट माँहि, भाय लगाई भारथैं ॥१०२॥

ठहरै जीव न ठाहि, आहि पुकारै ओदकैं।
मेछारां घट माँहि, भाय लग्गई भारथैं ॥१०३॥

करडी निजर कृसाण, थारी कूरम भारथा।
मेछारै अप्रमाण, लग्गी लाय बिलायता ॥१०४॥

खाय तडच्छा खान, थारा भयसों भारथा।
असुंराणी आधान, अवधि बिहूणां ऊगलै ॥१०५॥

किलमा वालै काय, के चालै लागो कंवर।
आलै-नाहर आय, भालै फेर न भारथा ॥१०६॥

---

९९. पारख=परीक्षा। तुडताण=यहां पर 'तुरतांण' पाठ होना चाहिए, जिसका अर्थ होगा तुरत (शीघ्र, वर्त्तमान समय) के अन्त तक अर्थात् अब तक।

१००. ऊपटियो=उन्नत हुआ। थटियो=किया।

१०१. साबूत=सम्पूर्ण।

१०३. ओदकै=चमक कर, चौंक कर। आहिं=हाय हाय। भाय=भय।

१०४. करडी=कठोर। कृसाण=अग्नि। लग्गी लाय=अग्नि लग गई।

१०५. आधान=गर्भ। ऊगलै=उगलना, निकालना, अर्थात् बिना समय ही गर्भ गिर जाते हैं।

१०६. के चाले=क्या धंधे लगा। आलै नाहर=सिंहका स्थान, माँद। भालै=देखै।

सारो खोय सवाब, पडि फीटो पावां पड़्यो ।
निहुरा खाय नवाब, नारि छुडाई निठ्ठसैं ॥१०७॥
तुरकांरै मुख तोय, रती न राख्यो भारथा ।
हुवो न कोई होय, आलम आखै आपनै ॥१०८॥
जुटै दुहू दल जंग, आहूटै हिन्दु असुर ।
रंग हो भारथ रंग, उण बेला दै आपनै ॥१०९॥
सूर अपच्छर संग, हूर खद्दाहू मिलै ।
रंग हो भारथ रंग, उण बेला दै आपनै ॥११०॥
ईश उमा अरधंग, भर प्यालो ले भंगरो ।
रंग हो भारथ रंग, उण बेला दै आपनै ॥१११॥
अमलांरा उछरंग, गलियां थलिया चोगणा ।
रंग हो भारथ रंग, उण बेला दै आपनै ॥११२॥
गोष्ठि बिरादर संग, प्याला मद पावै पिवै ।
रंग हो भारथ रंग, उण बेला दै आपनै ॥११३॥

छप्पय

चिमन सेख धर पर्‌यो, पर्‌यो धर सेख यनायत ।
पर्‌यो विलायत खान, ल्हास पूगी बिल्लायत ॥
पर्‌यो खान मुलतान, खान असमान सरोभर ।
जूटि जंग जमसेर, बाहि समसेर पर्‌यो धर ॥
इकावन मीर ठाये परे, पंच हजार लरायते ।
कमनेत नेत बंधी अयुत, असि समेत आपायते ॥११४॥

---

१०७. पडि फीटो=लज्जित होकर । निहुरा खाय=खुशामद करके, अनुरोध करके । निठ्ठसैं=मुशकिल से ।
१०९. आहूटैं=जोशमें भरना । रंग हो भारथ रंग=हे भारतसिंह तुमको धन्य है । उण बेला=उस समय ।
११०. खद्दाहू=म्लेच्छ ।
११४. ल्हास=लाश । ठाये=मुख्य । लरायते=लड़ने वाले, सिपाही । आपायते=आपा रखने वाले; अपनापन रखनेवाले, निकट संबंधी ।

येम नारि छुटवाय, मेछ्छ अपने मग लग्गिय।
मनु डाहल सिसपाल, खोय धनको खल भग्गिय।।
सकल होय बलहीन, सबल भारथ लगि टक्कर।
जात मनहू अजमेर, पीर जारतिकों फक्कर।।
मद मुक्कि सुक्कि बैबरन तन, जीव सरक सीना धरक।
परि काल फंद मानहु कढ़े, हुय तग्गा तग्गा तुरत।।११५।।

दोहा

नर हैमर दमने सकल, येम असुर मग जाय।
मनहु बनिक घर अप्पनै, गमने मूल गमाय।।११६।।

इति श्री कूर्मयश म्लेच्छविध्वंस कलहकेलिवर्णन नाम सुकवि गोपालदान विरचित लदाना युद्ध तृतीय प्रसंग समाप्त।

———०———

११५. डाहल=डाह करने वाला, ईर्ष्यालु, डाइल जाति विशेष। जारति=जियारत, धार्मिक-यात्रा। बैबरन=वैवर्ण्य; रंग फीका पड़ना। हुय तग्गा तग्गा=तागे तागे हो गया, छिन्न-भिन्न हो गया।

उणियारा युद्ध

दोहा

येम 'लदानै' सुकवि जुध, बरन्यो विविध प्रकार।
अब 'उनियारय'को कहूं, जिहि विधि बग्गो सार ॥१॥
होय निबल बलहीन खल, द्रुम पल्लव अनुहारि।
कुच्च कुच्च दर कुच्च फिरि, संभर लई संभार ॥२॥

छप्पय

करि मुकाम पुर घेरि, सोर चहु ओर प्रजारिय।
गहि दुरूह सिकदार, हाटि पट्टन संभारिय ॥
हेरिय संभरि माल, लुट्टि संभर पुर लिन्हिय ॥
निमक दरिवनि रुद्धि, दाव दब्बन उर दिन्हिय।
गोलक निशान फुरमान अप, बिकल सोच च्यारों बरन।
तुरकान तोर बग्गो बहुरि, खल अनीति लग्गो करन ॥३॥

दोहा

तुरक तोर बग्गो तदिन, फिर संभरपुर आय।
अब आगम अंगरेजको, बरनै सुकवि बनाय ॥४॥

छंद पद्धरी

यम सुनिय बत्त अंगरेज कान, मानो कि तीर मुक्यो कमान।
मातंग हेरि मानहु मृगीश, मानहु पनग्ग लखि खगाधीश ॥५
असमान भ्रमत मानहु अचान, लखि भुव बटेर तुट्यो सिचान।
मृग हेरि मनहु चीता मलंग, झंप्योक बाज चंप्यो कुलंग ॥६

---

१. बग्गो सार=लोहा बजा, तलवार चली।
२. संभर=सांभर झील।
३. दुरूह=दोनों तरफके। सिकदार=चौकीदारोंको। दरीब=क्षेत्र, मोहल्ले।
४. मातंग=हाथी। खगाधीश=गरुड़।
५. अचान=अचानक। सिचान=शिकरा, एक प्रकारकी शिकारी चिड़िया। मलंग=पुष्ट, मोटा, झंप्योक=झपट कर। चंप्यो=पकड़ लिया। कुलंग=पक्षी विशेष, एक

अंगरेज येम जरएैल साब, आयौ अचंक रुद्ध्यो नवाब ।
लखि भयो ताहि संगराम लोप, खल करी नैंक ताती न तोप ॥७॥
दिय लोह कील अंगरेज आय, सब दियऊ तोप ठाठनि गिराय ।
गिरवाय शस्त्र सब किये दीन, सुरभी समान रिपु घेरि लीन ॥८॥
करि आब हीन बोले निसंक, उद्दित नवाबके भाल अंक ।
नव लाख रेख दिय 'टूंक' थान, मालव समेत दुगनी बखान ॥९॥
द्रढ़ भयो म्लेच्छ फिर टूंक आय, धरि शीश छत्र चामर चलाय ।
यम रच्यो थान तुरकान आन, घरियार द्वार नोवत निसान ॥१०॥
उन्नत अवास प्राकार धारि, बाजार हाट पट्टन संवारि ।
चहुँ ओर कूप आराम कीन, महजीत गुमज कव्वर नवीन ॥११॥
करि येम राज फिर मरयो मीर, तिहि ठोर बैठि दवलाउजीर ।
उन्नत गरूर पोरष अपार, सब लयो देश हय गय संभार ॥१२॥

दोहा

मीरखान जा दिन मरे, धरे न किलमूं धीर ।
ता दिन कछु समता परी, वैठे दरलउजीर ॥१३॥
यम कहि रोवत कित गये, सब हिन्दुनके साल ।
असुर धरनि सब नारि नर, परे धरनि बेहाल ॥१४॥
यम बोले आसुर तनय, रक्खहु मनमें धीर ।
मुझको जानू मीरखां, अक्खे दवल उजीर ॥१५॥

प्रकारकी बतख जो काले रंगकी व सफेद रंग व जो गया रंगकी होतीहै जिसको कुरजां भी कहते हैं। यह पत्ती आकाशमें एक कतारमें होकर झुण्डके झुण्ड उड़ते हैं। डिंगल कोषमें कुलंगका अर्थ 'चटक' लिखा है। मेरे विचारसे यहां कविका आशय चटक ही होना चाहिए। बाज=एक शिकारी पक्षी।

७. अचंक=अचानक। ताती=तप्त।
८. दिय लोह कील=कील ठोक दी, वशमें कर लिया।
९. उदित नवाबके भाल अंक=नवाबका भाग्योदय समझ कर।
११. महजीत=मसजिद। कव्वर=कब्र।

दिन छिनदा उत्पात चित, रोष तरुनता रत्त ।
त्रगुन तोर भ्रूकुटी त्रसर, भयो असुर उन्मत्त ॥१६॥
उनियारय भीमो नृपति, वीर पराक्रम बंक ।
ता भयतें आसुर तनय, रहत मानि उर संक ॥१७॥

छप्पय

देश कोश प्राकार कूप, आराम नदी नद ।
धवल धाम हिमकलश, छार बारन मत्ते मद ॥
हय मज्जहि धरखूर, सेन चतुरँगनि सज्जहि ।
बज्जहि नद्द निहाव, मनहु भद्दव घन गज्जहि ॥
तज्जहि अवास गिरि दरिन गहि, अरिगन भज्जहि मानि भय ।
यह तोर भीम रज्जहि अवनि, लखि सुरेश लज्जहि बिभय ॥१८॥
मेघाडंबर मंडि, सूर सज्जें सन्नाहनि ।
फीलों फरकि निसान, गरक ताजी गज गाहनि ॥
धुनि तोपन संभरिय, अरी उर होय थरत्थर ।
नयनं रोस बित्थुरे, असुर प्रज्जरे घराघर ॥
नर सूर बीर घन दल प्रबल, प्रबल पराक्रम खल दमन ।
करि येम राज भीमो नृपति, स्वर्ग मग्ग कीनो गमन ॥१९॥

दोहा

भीमो सुरपुर भिल्लयो, 'उनियारै' नरनाह ।
फतयसिंह बैठें तखत, धर पद्धर पतस्याह ॥२०॥

---

१६. त्रगुन=तिगनी । तोर=तेवर, त्यौरी, टेढ़ी नजर । त्रसर=त्रसल तीन सलवट ।

१८. बारन=हाथी । निहाव=प्रतिध्वनि, नोबत, निहाई । रज्जहि=राज करता है । बिभय=वैभव ।

छंद पादाकुल पराकृत भाषा

सो रीति क्वं भीम गेहा, तत्थे पुत दिग्घ सनेहा ।
अप्पे गढ्ढां गढ्ढां घोरा, थप्पे पुत्रं धूम भंभोरा ॥२१॥

दोहा

हल्ले तोपन लग्गहि, सोर सुरंगन जाय ।
किल्ले धूमं भंभोरके, लगै न आन उपाय ॥२१॥

ते किल्लो भीमो नृपति, कियक पूतके हत्थ ।
तिहिं सुरेतके पूत फिरि, मिलि कीनू पर हत्थ ॥२३॥

फतयसिंहको मानि भय, मिले असुरसों जाय ।
किल्ले मध्य मलेच्छको दीन्हो अमल कराय ॥२४॥

इत उनियांरो टूंक उत, मेर मिलत दहुं राज ।
तदपि असुरको चित बध्यो, फिर धर दब्बन काज ॥२५॥

आये चढ़ि नृपके नगर, आसुर करन अकाज ।
फतयसिंह पठये सुभट, तिहि पुर रक्खन काज ॥२६॥

सुभट नृपतिके दोय शत, आसुरके शत चार ।
कढी कुबत मुखतें किलम; कर कढ्ढी तरवार ॥२७॥

कुबत तेग कढ्ढी किलम, जिनों प्रथम लिय मार ।
बहुरि नरूकनि आसुरनि, पुरतें दिये निकार ॥२८॥

तदपि नरूकन आसुरन, चार घरी जुध मंडि ।
बीस असुर धरनी परे, अवर गये रन छंडि ॥२९॥

---

२१. गेहा=घर। तत्थे=वहां। पुत=पुत्र। दिग्घ=दीर्घ। अप्पे=दिये। थप्पे=स्थापित किये।

२३. सुरेत=सुरतसिंह।

२४. दीन्हो अमल कराय=हुकूमत करा दी।

२५. मेर=सरहद, सीमा।

फतयसिंहकी करि फतह, बहुरे सुभट समाज ।
मनु गयंदनि युत्थ हनि, आये थहि मृगराज ॥३०॥
मीरख़ान सुत संभरे, जरे करेजनि लुक्क ।
आसुरके अंतहपुरनि, परी अचानक कुक्क ॥३१॥
कूक फजर सुनि मीरखां, आसुर दवल उजीर ।
करी बंध चतुरंगनी, धरी न उरमें धीर ॥३२॥

छंद पद्धरी

खिजि चढ़्यो खान दवलाउजीर, गज वाजि तोप रथ पंक्ति भीर ।
यतमाम फील नोवत निशान, जंगी सबाब सब सावधान ॥३३॥
कमनेत नेत बंधी सिपाह, सब सिलह पूर विंट्टे सनाह ।
चवगान जान रनबीर खेत, ताजी तमाम पक्खर समेत ॥३४॥
करि गमन अस्त रवि संधि काल, कुल काक स्वान कूके कराल ।
समसान समुख कीनो पयान, बेताल भूत भूखे भयान ॥३५॥
दक्षन दिशमें बोल्यो उलूक, बिपरीत संमुख फ्योकर कूक ।
विकराल सद्ध श्रंगाल आन, कूके कराल दक्खिन भुजान ॥३६॥
वामांग डक्कनिय पत्ति अस्व दक्खिन भुजान हूंक्यो अनस्व ।
जंगल विडाल किय रुदन पृष्टि, पशुकाल जन्तु मग परयो द्रष्टि ॥३७॥
कुलहीन अंग चर्मा वितुंड, बंबील उर्द्ध सिर महिष मुंड ।
रंडाल बाल बिथुरे असुभ्र, लज्या विहीन सिर रिक्त कुंभ ॥३८॥

---

३०. बहुरे=वापिस लौटे । थहि= मांद ।
३३. यतमाम=यह सब । सबाब=असबाब, सामान ।
३४. विंट्टे=वेष्ठित, पहिने हुए ।
३५; भयान=भयोत्पादक ।
३६. फ्योकार=शृगालिनी ।
३६. डक्कनिय पत्ति अस्व=डाकनीके स्वामीका घोड़ा, अर्थात् कुत्ता । अनस्व=गधा । पशुकाल जन्तु=सर्प ।
३८. अंग चर्मा वितुंड=हाथीके समान चमड़ा है अंग पर जिसके । बंबील=सर्प । रंडाल=विधवा ।

सर्बंगि सीस मुंडित बिहाल, मग लोपि जात बामांग व्याल ।
भ्रत पात्र रोम चर्मा निहार, क्रम हीन रजक द्विज हेमकार ।।३९।।
मग जटिल सीस लिय संग स्वान, कर श्याम पात्र बर्जित उपान ।
अपशकुन भयेउ आद्यांत एक, अपजोग पराजयके अनेक ।।४०।।
उद्दय प्रभात गत भई राति, जारत नरेशकी पुर जराति ।
बहु किये अनीति खल करन जंग, यह सुनिय बत्त नृप फतयसिंह ।।४१।।

दोहा

सुनत कोपि किरवान लिय, फतयसिंह महाराज ।
मनहु इंद्र कर कुलिस लिय, गिरि-पर कट्टन काज ।।४२।।

छंद त्रोटक

सुनके नृप के उर कोप बढ्यो, मघवा मनु दानव सीस चढ्यो ।
ठठुरीनि जुटी जुरि तोप हकी, भरि पेटिय संमिल सोरनकी ।।४३।।
गमने मनु सिंधुर स्याम गिरं, हय पक्खर बिंटि सनाह नरं ।
गजराजनि घंटनि घंट बजै, सुनि आतुर कातर प्रान तजै ।।४४।।
सब सूर सनाहनि अंट जरी, हय हींस नगारनि ठोर परी ।
झरि बिज्जुर सी कर तेग लसैं, तिनको लखि ईश मुनीश हँसै ।।४५।।
लखि सेन लिये कर खप्र खिली, मिलि जुग्गनि एक ही संग चली ।
भुव जंतुनखी मख लेन चले, पत्रधार पल्लचर संग हले ।।४६।।

---

३९. सर्वंगि=सब, एक जाति विशेष । रोमचर्मा=सीधडा, ऊँटके चमड़ेका बरतन । हेमकार=स्वर्णकार, सुनार ।

४०. मग...उपान=रास्तेमें जटाधारी मनुष्य कुत्तेके साथ, काली हांडी लिए हुए जूते रहित मिला ।

४१. जराति=खेती ।

४२. ठठुरीनि=तोपका ठाठा । जुटी=बैलोंकी जोड़ी । जुरि=जुत कर, लग कर । संमिल=साथ । सोरनि=बारूद ।

४६. पत्रधार=पक्षी । पलच्चर=माँसाहारी ।

सब सूरनके तनु रोष तचे, तिनको लखि बावन वीर नचे ।
उडि खेह खुरों रवि मंद भये, नभ हूर विमाननि छाय लये ॥४७॥
रज डंबर अम्बर मग्ग चढे, श्रम कोक विभावरि शोक बढे ।
नभ देव विमाननकी अवली, उडि गिद्धनिके गन संग चली ॥४८॥
दल येम नरुकन के उमडे, धुरवा मनु भद्दवके घुमडे ॥४९॥

दोहा

अचल नरूकनि आसुरनि, जुटे सुभट दुहुँ ओर ।
मार मार मुख उच्चरे, परी नगारनि ठोर ॥५०॥

छंद मोतीदाम

मिले दुहुँ ओरनि हिंदु मलिच्छ, मनो शिव सेन प्रजापति दच्छ ।
पनंकिय मेछ भजो नन मूर, ठनंकिय तेज हुतासन सूर ॥५१॥
हनंकिय बाजि मिले दुहुँ ओर, धुनंकिय तोप धुनी उडि सोर ।
गनंकिय तोप तुपक्कनि-भक्ख, मनंकिय आमिख-हारन लक्ख ॥५२॥
भनंकिय तीर कबाननि ओक, सनंकिय पंखनि गिद्धनि सोक ।
ठनंकिय मत्त मतंगनि घंट, घनंकिय घूघर पक्खर अंट ॥५३॥
मनंकिय जंत्र असोम अलाप, बनंकिय कातर सद्ध कलाप ।
थनंकिय नाटिक भैरव थाप, दनंकिय गिद्धनि आमिख खाय ॥५४॥

---

४७. विभावरी = रात्रि ।

४८. धुरवा = मेघ । भद्दव = भाद्रपद ।

५१. पनंकिय = प्रण किया । नन = नहीं । मूर = मूल निश्चय । ठनंकिय = झलका, उभरा ऊपर आया, पक्का हुआ, दृढ़ हुआ, टनटन आवाज हुई ।

५२. हनंकिय हिनहिना कर । धुनंकिय = ध्वनिकी, आवाजकी चली । गनंकिय = गरणाई, तेजीसे आवाज फैली । तुपक्कनि भक्ख = तोपोंकी खुराक, बारूद । मनंकिय = मन किया, इच्छा की, आमिषहारन = मांसाहारी ।

५३. भनंकिय = भन भन शब्द किया । ओक = स्थान । सनंकिय = सन सन शब्द किया । सोक = वेगकी उड़ान । घनंकिय = बजी ।

५४. बनंकिय = किया । थनंकिय = थिरकना, नाचना । दनंकिय = धोंकी, गर्जना की ।

खनंकिय सायक धार करूर, झनंकिय झांझर रंभनि भूर।
छनंकिय तीर बरच्छनि छोह, ननंकिय बोह बिलंबनि लोह, ॥५५॥
फनंकिय शेष पर्‌यो सिर भार, चुनंकिय शंकर मुंड निहार।
किनंकिय जात सराह सनेम, रनंकिय बीर नरूकनि येम ॥५६॥

दोहा

खिज्यो खान आयुध अली, कर कढ्ढी तरवार।
पद्धर पतिकी सेन पर, आयो किलम हकारि ॥५७॥
पक्खर टोप सनाह युत, पानि उदग्गन खग्ग।
संग बीर ले पंच सत, लई तुरंग्गनि बग्ग ॥५८॥

छन्द पद्धरी

हय खूर धूर लग्गी अकास, उडि गये पलच्चर मानि त्रास।
दुहुँ ओंर तोप दग्गी कराल, जंगी असाध्य मनु जेठ ज्वाल ॥५९॥
मिलि सोर-धूम तम अंधकार, मारुत प्रचंड पंखनि प्रचार।
पर अप्प नैकनन परत जान, जुध करत बोल बंधव पिछान ॥६०॥
यह तोर हिन्दु तुरकान जुट्टि, किरवान पान इभ कुंभ तुट्टि।
उपमान आन कवि मति अमंत, घन मद्धि मनहु बिज्जुरि खिमंत ॥६१॥
कछवाह मेच्छ गलबांह कीन, करि दाव घाव पोरस प्रवीन।
हय पीठि हुते धर परत आय, जुध करत देव दानव सुभाय ॥६२॥
खंजर कटार चुकुमार मार, नटसाल घाव पंजर दुसार।
गिरि परत भूमि पग उरझि अंत, मादिक असाध्य मानहु परंत ॥६३॥
कर धार सार बाहत अखंड, मुख मार मार परि करत मुंड।
चंचल तुरीनि कढ़ि प्रान जात, मनु मीन फंद परि तरफरात ॥६४॥

---

५५. भूर=सब। छनंकिय=छेद दिये। बरच्छनि छोह=बरछियोंकी नोक। बोह=प्रहार। ननंकिय=निश्चय ही किया। बिलंबनि लोह=लिपटा हुआ लोहा, कवच।
६१. इभ=हाथी। किरवान पान=तरवारकी धारसे। खिमंत=चमकती है।
६३. चुकुमार=गदा। पंजर=शरीर, देह। नटसाल=तीरकी गाँस। दुसार=आर पार छेद। मादिक असाध्य=खब (अत्यंत) नशे वाला।

आयुध अलीह-हय परचों खेत, घन घात्र मीर घूमत अचेत ।
साहस्स धारि हय चढ़यो ओर, फिरि सार धार बजि ठौर ठौर ।।६५।।
केते कुठार बाहत करूर, परिघन कितेक सिर चकनचूर ।
बंके छछोह करि व्रोह सेल, नट जेम तेहरीय चोट खेल ।।६६।।
गुपती कटार भमकार घाव, तन परत भूमि पर ठाह पाव ।
गिर जात भूमि तन झांफ धारि, फिर उठत मार मारहु बकारि ।।६७।।
घायल अनेक रन खेत घूमि, सनि गई श्रोनतें रंग भूमि ।
कुल भान खान जुध येम कीन, धरपरयो झूझि आयुध अलीन ।।६८।।

दोहा

परयो धरनि आयुध अली, प्रजरयो दवल उजीर ।
कर तसवी रक्खी तमकि, लिए सरासन तीर ।।६९।।
मनहु देव दानव दुहुनि, पानि उद्दग्गन खग्ग ।
मुसलमान हिंदवान फिरि, लिए तुरग्न बग्ग ।।७०।।

छंद दुर्मिला

हय हिन्दुनि हक्किय वीर किलक्किय सोर भभक्किय ओर दहूं ।
सिर शेष लचक्किय भूमि भचक्किय कोल मचक्किय दंत कहूं ।।
किलमायुध हट्ठिय सायक पट्ठिय चाप चमट्ठिय जोर दये ।
कसि बागन कट्ठिय हिन्दु इकट्ठिय बाजिन तट्ठिय ओर दये ।।७१।।
तुरकान तलक्किय हिन्दु ललक्किय, हूर हलक्किय हेरिवरं ।
कर सेल भलक्किय ढाल ढलक्किय खाल खलक्किय श्रोन भरं ।।

---

६५. ठौर ठौर=स्थान स्थान पर ।
६६. बाहत=चलाते हैं । परिघन=आगल (आयुध विशेष) । छछोह=सोत्साह । तेहरीय=तिगुनी ।
६७. भमकार=गहरा । ठाह=सीधा; सही, ठिकाने पर । झांप धारि=लडखडा कर ।
६८. तमकि=तमक कर, क्रोध करके ।
७१. भमकिय=भकसे जलना, एक दम जल उठना । कट्ठिय=काठी, जीन । भचक्किय =भोंचक्की हो गई । चमट्ठिय=चमोठे, धनुषके ऊपर लगे हुए चमड़ेके बंध । तट्ठिय=उस दिशाकी ।

खग धार खनक्किय तीर छनक्किय प्रोथ सनक्किय होफ हयं।
इभ घंट ठनक्किय नद्द रनक्किय भेरि भनक्किय सद्द भयं ।।७२।।
हयते हय सत्थिय रत्थनि रत्थिय हत्थनि हत्थिय जुद्ध करं।
लरि बत्थनि बत्थिय लूथप लत्थिय मत्थनि मत्थिय भूमि गिरं ।।
बह्नी मनु दट्टिय सोर उपट्टिय कातर फट्टिय बैन दुखं।
दहु दीन अहुट्टिय आरन थट्टिय सारन घट्टिय मार मुखं ।।७३।।
तन तेगनि तच्छिय मानु कि मच्छिय तोयनि तुच्छिय त्यों तलफै ।
कटि पायन कच्छिय घाव वरच्छिय धाव तरच्छिय ते मलफै ।।
खग धारनि खंडिय खंड बिहंडिय भारथ मंडिय भीम नच्यो ।
पिय श्रोनित चंडिय धार अखंडिय, रंभ घुमंडिय राश रच्यो ।।७४।।

दोहा

दंपति हूर अपच्छर सूर बरि, बैठि विमाननि जात ।
मानहु तीज दिन, डुलहर बैठि डुलात ।।७५।।

छप्पय

बजि धप्पी किरवान, बीन बज्जा धप्यो मुनि ।
धप्पी गिद्धनि गूद, श्रोण धप्पी सब जुग्गनि ।।
हर धप्यो सिर चुनत, हेरि धप्पे नभ-धावनि ।
बर धप्पी बरहूर, बीर धप्पे बकि बावनि ।।
दल मुसलमान बलवान खल, लुत्थ बत्थ धप्पे लरत ।
धप्पे न युद्ध पद्धरपति, सूर बीर बंके भिरत ।।७६।।

---

७२. तलक्किय=शीघ्र गमन किया, रपटके दौड़े। हलक्किय=प्रसन्नता हुई। प्रोथ= घोड़ेकी नाक। होफ=हाफना, जोर जोरसे सांस लेना।
७३. बह्नी=बह्नि, अग्नि। दट्टिय=दधक उठी। उपट्टिय=उत्पन्न हो गयी। दहुँ दीन=दोनों धर्म, हिन्दु मुसलमान। आरन=युद्ध।
७४. तच्छिय=काटना। मच्छिय=मछली। तुच्छिय=तुच्छ, कम। कच्छिय=घोड़े। धाव=दौड़ना। तरच्छिय=तिरछा, टेढ़ा होकर। मलफै=कूदे।
७५. डुलहर=झूला जो गोलाकारमें ऊपर नीचे झूलता है।
७६. धप्पी=धाप गया, तृप्त हो गया। नभधावनि=नभचर।

कर थक्के तरवार, म्लेच्छ कर थक्के मच्छर ।
बरि थक्के वरिहर सूर बरि थक्के अच्छर ॥
पर थक्के पल चरनि धरनि थक्की नर भारनि ।
मार मार मुख बकत जीभ थक्की जोधारनि ॥
थक्के विमान असमान सुर, नर हँमर थक्के फिरत ।
थक्के न जुद्ध पद्धरपती सूरवीर बंके भिरत ॥७७॥

श्रोन धार धर चलत चलत लख पंक्ति पलच्चर ।
कातर विमुहे चलत, चलत समुहे नर हँमर ।
चलत लोह उत्ताल, मूल सरगदा परिघ्घन ।
चलत सोर साबत, मनहु डंडूर बूंद घन ॥
उर चलत हँस किरवान कर, चलत मुगल चलविचल चित ।
नन हिन्दु-पाय पुठ्ठिन चलत, चंपि अँगूठनि भूमि जित ॥७८॥

लोहकार उत्ताल, मनहु अैरन घन गज्जिय ।
गजर मनहु घरियार जाम पूरन प्रति बज्जिय ॥
मनहु बूंद बस बात, असनि असमान विछुट्टिय ।
येंक मेक अन्नेक तडित मानहु नभ तुट्टिय ॥
यम बजिय सार आतुर अनिय जुद्ध जीति फतमल प्रबल ।
बल मीरखान हुय चल विचल, वे भग्गे तुरकान दल ॥७६॥

दोहा

हुय तग्गा तग्गा तुरक, वे भग्गा तजि बैर ।
पानि उनग्गा खग्ग ले, लग्गा हिन्दू लैर ॥८०॥

---

७७. मच्छर=मत्सर, घमंड। अच्छर=अप्सरायें ।
७८. बिमुहे=उलटे, विमुख। साबात=हवासे। डंडूर=वर्षाकी वे बूंदें जो हवाके वेगसे छितर कर पड़ती हैं । पुठ्ठिन=पीछे । चपि=चांप कर, दबा कर । जित=जितना ।
७८. उत्ताल=ऊंची । असनि=बिजली, वज्र । अनिय=फौज सेना ।
८०. उनग्गा=नंगे । लैर=पीछे ।

छंद भुजंगप्रयात

सबै छांडि सब्बाब नव्वाव भग्गे, सुभट्टं फतैंसिहके लैर लग्गे ।
फतैंसिह राजा धरे बीर खेतं, लुटे खानके सार सीसा समेतं ।।८१।।
लुटे मेछके तोप तम्बू कनातं, लुटे अम्वरं कीमखावं बनातं ।
फरी तेग बंदूक सिल्लैहखानं, लुटै तीर तूनीर सुद्धि कबानं ।।८२।।
दुहाई फिरी पद्धरी हिन्दवानं, लयें छीनिके फील सुद्धे निसानं ।
रुपे रोक पेटिनके भार फट्टैं, हयं पक्खरं टोप सन्नाह लुट्टैं ।।८३।।
लई दीनताई रहे खानजादे, कहैं खो गये मेच्छ वेरे विवादे ।
फतैंसिहके बोलबाला चहेंगे, सदा हिन्दुगी बादस्याही रहैंगे ।।८४।।
बचै ज्यान जो हिन्दु आगे हमारी, करैं जारता पीरख्वाजे तुम्हारी ।
फतैंसिहकी मेच्छ बोलै दुहाई, फतैराव राजा फतै जुद्ध पाई ।।८५।।

दोहा

यमजुट्टे दुह ओर जुध, मीरखान फतमाल ।
अपनी मति अनुसार कहि, वरनै ग्रंथ गुपाल ।।८६।।

इति श्री कूर्मयश म्लेच्छविध्वंस कलहकेलिवर्णनं सुकवि गोपालदान विरचित चतुर्थ प्रसंग उनियारा युद्ध समाप्त ।

—–०—–

८१. सब्बाब=असबाब, सामान।
८२. सुद्धि=सहित ।
८५. जारता=यात्रा, ज़ियारत ।
८८. उनग्गा=नंगी । लैर=पीछे ।

द्वितीय लावा युद्ध

सोरठा डिंगल

उणियारै आथाण, फतह नृपति कीधी फतह ।
अब 'लावैं' आराण, 'करणैं' कीधी सो कहूं ॥१॥
कुण सिर महुकम पाग, धर लावैं सबलो धणी ।
बाघ मणी थह बाघ, पाट लदाणैं पातलो ॥२॥

छंद बेक्खरी

लावैं भूमि मेर लख बिघ्घनि, हाटिक पाट अमारत दिघ्घनि ।
नहि लबार ठग चोर जुवारी, पुर बसवान सकल सुखकारी ॥३॥
गढ़ सफील उन्नत छवि छाजत, रजत द्वार कलशादिक राजत ।
पूर तोय परिखा चहूं पासी, मगर मीन जलचर सुखरासी ॥४॥
कमल खिलत सरिता सर सोहत, वन उपवन खग मृग मन मोहत ।
मधु छाके मधुकर गुंजारत, कोकिल कीर कपोत पुकारत ॥५॥
नित कृसान कृषि रचत नवीनी, मालव कासमेर धर चीनी ।
आफू ईख जवानि उपज्जत, सप्त धान उपधानहु निपजत ॥६॥
दुगन साख षट् ऋतु मधि लूनत, सुनि सुनि टूंक असुर सिर धूनत ।
करनसिंह दुज गो प्रतिपालत, वेद मृजाद नीति ध्रम चालत ॥७॥
बनु, सुजान, रनो बखतावर, गोविंद, हनुमत, तेग-किरावर ।
बोर समुद्र सिंह बरदाई, क्षिति वितान सम कीरत छाई ॥८॥

१. आथाण = स्थान । आराण = युद्ध । करणै = कर्णसिंह ।
२. कुण = किसके, यहां 'उण' शब्द होना चाहिए । सबलो = बलवान ।
'मणीं' के स्थान पर 'तणी' शब्द होना चाहिए । थह = सिंहके रहनेका स्थान ।
पातलो = प्रतापसिंह ।
३. मेर = सीमा । बिघ्घनि = बीघा । लबार = वाचाल, बकवादो ।
८. तेग किरावर = तलवारका धनी, तलवार चलानेमें चतुर । चावो = प्रसिद्ध ।

सुनत पुरान त्रिसंध्या साधत, दिन प्रतिदिन द्विज देव अराधत ।
सम प्रभुता उरमें पूरन हित, एक थार भोजन नित जीमत ॥९॥
टूँक नजीक बैर जग चावो, गल सिंघनि बंधे गढ़ लावो ।
लरन मनोरथ करि उर आनत, प्रबल नरुकनिको पहिचानत ॥१०॥
आसुर प्रतिदिन चित ललचानो, मन ही मन गुनि भयो अयानो ।
तूल पत्र चित चक्र चढयो सो, ज्ञान मूढ़ मति मूढ़ पढयो सो ॥११॥
दिन छिनदा अहिमति उर आनत, प्रथम जुद्धकी रीति पिछानत ॥१२॥

दोहा

भय कर करत निरास चित, लालच करत प्रवेश ।
आसुर जीव ससांक ज्यों, बढ़ घटि होत हमेश ॥१३॥
भावनगरको तुरक यक, सब तुरकन सिरताज ।
कुसती पटो विनोट कृत, सब येलम उसताज ॥१४॥
टूंक मध्य आयो तदन, सदन सदन परिसोर ।
एलमगीर अधीर उर, सब तुरकन पर तोर ॥१५॥
रखहु सरब पर तव हुकम, ज्यान मान सब राज ।
रहुगे दवलउजीर कहि, तुम हमरे उसताज ॥१६॥
करी सीख घरको किलम, दई नवाव विचारि ।
हय पाटंबर तार हिम, फरि तुप्पक तरवारि ॥१७॥
रुकि नवाबपै आय रहि, सबै सबावनि मुक्कि ।
पंच सवारनते चढ़े, मेच्छ गये मग चुक्कि ॥१८॥

१४. येलम = विद्या । उसताज = उस्ताद, मास्टर, गुरु ।
१५. एलमगीर = विद्या वाला । तोर = श्रेष्ठ, तुर्रा ।
१७. करी सीख = विदा किया । फरिं = बड़ी तरवार । तुप्पक = बंदूक ।
१८. सबावनि = असबाब, सामान ।

रंगकार तेलार बिनु, बिनु कलार दरवेश।
मारबंध 'लावै' असुर, पुर नहि करत प्रवेश ॥१६॥
याते यहि मति धार उर, तहि खल उतरे आन।
कुममनि कर उपवन सघन, सर नजीक शिवथान ॥२०॥

छप्पय

करनसिंह उमराव, ईश पूजन यक आयो।
करि परिक्रमण अनेक, बील पत्रनि हर छायो ॥
धूप दीप नैवेद्य, सुरख श्रीखंड चहोरे।
अरक सुमन आधार, बारि मंदाकिनि बोरे ॥
तुम चरन शरन त्रिलोक पति, यम सरनागत उच्चरी।
वंदन विनोद आनंदमय, करि प्रणाम अस्तुति करी ॥२१॥

अथ शिव स्तुति छंद गीतिका

त्रिगुणात्म ईश त्रिलोचनं त्रपुरांत मार - प्रजारनं।
अलिकेन्दु बिन्दु, अदेव मर्दन, वारिधी-विष जारनं ॥
गिरिजास्मितं, प्रतिमा सिता शिव सर्गुणात्मक रूपणं।
निगमागम गावत विश्व व्यापक निर्विकार निरूपणं ॥२२॥
उरमाल मुंडनि छाल मृगकी खाल केशरि जूसणं।
वपुभस्म लेप स्मशान राजित व्याल पाणि विभूषणं ॥

१६. रंगकार = रंगरेज, नीलगर। तेलार = तेली। रंगकार······प्रवेश = रंगरेज, तेली, कलार और फकीरके सिवा और कोई हथियार बंध मुसलमान "लावै" में प्रवेश नहीं कर सकता है।

२१. सुरख श्रीखंड = लाल चन्दन। चहोरे = चढ़ाए।

२२. त्रपुरांत = त्रिपुर नामक राक्षसको मारने वाले। मार-प्रजारनं = कामदेवको जलाने वाले। अलिकेन्दु = निश्कलंक चन्द्रमा। अदेव = दैत्य, राक्षस।

गनभूतप्रेत पिशाच कौतुक अंत तंतु जटा जुटी।
जय व्योम केश महेश त्रंबक भीम भूतप धूर्जटी ॥२३॥

दोहा

येम सुभट अस्तुति करी, पानि जोरि परि पाँय।
करि वंदन आनंदमय, विविध कपोल बजाय ॥२४॥
बाजत सुनत कपोल हँसि, अरि करि कंधुर बंक।
ईशालय गमन्यो असुर, पनही सहित निसंक ॥२५॥

छप्पय

तुरक एक तिन मध्य, रोष पोरुष गुन रत्तो।
मनहु छाग मुख मूत, येम आसुर उन्मत्तो ॥
पान सूल कब्बान, सुभर तूनीर शिलीमुख।
कटि बाँधी किरवान, चरम पावन आवन रुख ॥
खल आत सुभट बरजे प्रथम, मति आवहु यह मूढ़मति।
यह ठोर मेच्छ आवत नहीं, ये त्रिपुरारि त्रिलोक पति ॥२६॥
सुनत बत्त प्रज्जर्‌यो, आनि ईशालय अंदर।
ईश शीश दिये पाव, कुबुद्धिकारी मनु बंदर ॥
रोस नयन मुख रक्त, मूछ भूंहनि मग चढ्ढिय।
कर कढ्ढिय किरवान, कुबत मुखते खल कढ्ढिय ॥
दहुं मार मार मुख उच्चरो, होय शब्द हंकार हर।
किरवान पान बाही किलम, हनी कटारी हिन्दु कर ॥२७॥

---

२३. जूसएं = लगा हुआ, चिपका हुआ।
२४. कंधुर = कंधर, गरदन।
२५. पनही = पगरखी, जूता।
२६. मनहु छाग मुख मूत = विषयोन्मत्त बकरा (बकरीके या अपने) पेशाबको मुँहमें ले कर मानो मत्त हो गया हो। पान = पानि, हाथ। सुभर = खूब भरा हुआ।

आसुरके उर मध्य दंत अंतक सम बैसिय ।
मानहु रंध्र मुसाल, खंभ ज्वाला गनि जैसिय ।।
बसन बेधि कटाक्ष, कोर कुलटा द्रग कढ्ढिय ।
हढ्ढ बेधि जमट्ढ्ढ, येम तन पारऊ कढ्ढिय ।।
ऊघरी जानि संपा जलद, चुवत श्रोन रंग चढ्ढियो ।
मानहु कुमारि जावक सहित, कर बतायन कढ्ढियो ।।२८।।
ते रिपु धरनी पर्‌यो, बहुरि मुरि मेच्छ हकारे ।
सुनि कोतुक पुर लोग, आनि तिनको फिर मारे ।।
यम देवालय मध्य, दीन जुट्टे दहुँ सम्मर ।
आलबाल भरि श्रोन भई प्रतिमा रातंमर ।।
छंड्यो सुमेक लघु बैस लखि, ते मग लग्गो टूंकपुर ।
दवलाउजीर दरगा तदन, अदन हेतु कूके असुर ।।२९।।

दोहा

उर कंपित सूकत अधर, भरत ढ़रत युग नैन ।
चित चक्रित बैबरन तन, कहत बाल कटु बैन ।।३०।।

छंद त्रिभंगी

नब्बाब कहाँरे राज तिहारे, हिन्दुनि धारे सो करि हैं ।
हनि पिदर हमारे मातुल मारे बैर बिचारेको करिहैं ।।

---

२८. दंत अंतक = यमके दांत । बैसिय = बैठ गई, गड गई । मुसाल = मशाल, चिराग । बसन = वस्त्र । जमदढ्ढ = कटारी । पारऊ = दूसरी ओर, आरपार । ऊघरी = प्रकट हुई । संपा = बिजली । श्रोन = श्रोणित, खून । बातायन = वातायन, खिड़की, झरोखा

२९. हकारे = बुलाये । दीन = धर्म (यहां धर्म वाले) सम्मर = समर, युद्ध । आलबाल = थाँवला । रातंमर = लाल । बैस = वयस, उमर । दरगा = दरगाह, दरबार । कूके = पुकारे ।

३०. बैबरन = वैवर्ण्, मलिन ।

अब या तुरकानीको हम जानी भई पुरानी बीगरि हैं ।
असमान गिरेगा ना उबरेगा काफर रैगा तू मरि हैं ।।३१।।
दोजिगमें जैहैं तू फल पैहैं दावन गैहैं हम तुमरे ।
ऐसी अनहूनी लखी न सूनी, कबरैं धूनी कुल हमरे ।।
अब कोन हमारे देश तुम्हारे आनि पुकारे जोर यहां ।
तुम सुनत न ऐसी हम परदेसी बालक भेषी जाय कहाँ ।।३२।।

दोहा

ते लरका मुख विष सुने, बायक सायक सार ।
श्रुति संभर मेछ्छंदके पंजर करत प्रहार ।।३३।।
तब नवाब कथ उच्चरी, रक्खहु मनमें धीर ।
सकल नरुकनिको हनों, तब मैं दवलउजीर ।।३४।।
गढ तोपनतें करि सफा, पुरतें करों तगीर ।
"लावै" हिन्दु न रक्खहूं, तो मैं दवलउजीर ।।३५।।
बोले सुनत तमाम खल, कर तोले किरवान ।
जो "लावै" जुध नहि जुरे, से नहि मुस्सलमान ।।३६।।
बड़े मीरखां जुध जुरे, तहां परे रन खेत ।
तुजे विरादर सबनके, चच्चे पिदर समेत ।।३७।।
कर मुच्छनि घल्ले किलम, यम बुल्ले उजबक्क ।
स्याम काज पितुके बयर, हदपै मरना हक्क ।।३८।।

---

३१. पिदर = पिता । रैगा = रहेगा ।
३२. दोजिग = दोजख, नर्क । दावन = दामन, पल्ला । गैहैं = पकड़े हैं ।
सूनी = सुनी । कबरैं धूनी = क़बरमें धुआँ ।
३५. तगीर = तग़य्युर, परिवर्तन, निकालना ।
३६. तोले किरवान = तलवार पकड़ कर ।
३८. उजबक्क = मूर्ख, उजड्ड, असभ्य, उद्दंड । स्याम = स्वामी । बयर = बैर ।

कर असील किरवान गहि, बुल्ले मीर मसूर।
'लावैं' लरना हक्क है, मरना बरना हूर ॥३६॥
नमक सरीतिन रक्खही, भक्ख अभक्ख समान।
काफर दोजगमें परे, अक्खैं मीर जहान ॥४०॥
अपने खावंदके हुकम, करहिं ज्यान कुरबान।
हक बे मरना हक्क है, कहै कुतब्बी खान ॥४१॥
अक्खै सेख ततारखां, उर सहना जमदढ्ढ।
मरनासे डरना कहा, लरना 'लावैं' गढ्ढ ॥४२॥
यम बुल्ले इकतारखां, करना गढ़ चकचूर।
काफर हैं सो वरजना, जुरना जुद्ध जरूर ॥४३॥

छन्द नीसाणी

उस बिरयों मुलतानखां मूंछाँ कर घल्ले।
ऐंचि कवादे टंक तोलि जब्बूं कहि बुल्ले ॥
हम गिरते असमानको शिर केई बर झल्ले।
दक्खनके दरम्यान कल दोऊ दल मिल्ले ॥४४॥
भूरि जमी असमानदे भालों मग झिल्ले।
चल्ले हुलकर सिंधिया मुज पाव न चल्ले ॥
क्या किल्ले चोगानदे क्या उस पर हल्ले।
हम किल्ले असमानदे कई बेर उथल्ले ॥४५॥

---

३६. असील = अशील, शील रहित, तेज।
४०. सरीतिन = सरीकता, हिस्सा, साथ। अक्खै = कहै।
४१. खावंद = पति, स्वामी। ज्यान = जीवन। कुरबान = बलिदान।
४४. उस बिर = उस समय। घल्ले = डाले। ऐंचि = खेंच कर। कवादे = सींगके टुकड़ोंसे बना धनुष। टंक = ४३ सेरकी शक्ति (जैसे हार्सपावरकी गणना मशीनमें होती है उसी प्रकार धनुषकी शक्ति टंकसे की जाती है जो ४३ सेर का होता है।) जब्बूं = जबून, खराब, बुरा। बर = बार, दफा, समय।

सीकर ईश नवाबको दोसत कर थट्टे ।
हम किल्ले सकरायदे सोरै पख जुट्टे ।।
तोप दगी दहुँ ओरतें झर सोर उपट्टे ।
लुट्टे माल जखीरदे नर हैमर कट्टे ।।४६।।
उसदी अपनी सेन सब हल्ले कर कट्टे ।
आगे भी हनुमंत थे किल्ले नहि छूट्टे ।।
क्या अच्छे कमनेत थे तीरों सिर तुट्टे ।
फिर उसदे तूनीरतैं सब तीरनि खुट्टे ।।४७।।
यों तर उन्मत फील करि भर पोरुष हट्टे ।
महा उपल मुं जफटते सीनो बिचि फट्टे ।।
हम किल्ले इस तोरसैं बहु बेर उलट्टे ।
यारां 'लावा' कोटपै सबके दिल घट्टे ।।४८।।

छन्द भुजंगी

बड़े मीरखांके चचा एक जुल्ला, कहावै सबोंमें बड़े मीर मुल्ला ।
बड़े मोलवी नेक पढ्ढ़े कुरानं, यलल्ला यलल्लाह यलल्लाह जानं ।।४९।।
इनो खूंन कीनो उनो बात अक्खैं, उनोंके इनों देवपै पाव रक्खै ।
लखे आपने दीनकी क्षीनताई, जिनोपै मरै मारना हक्क भाई ।।५०।।
बदी जो करै तो खुदाकी सजा है, सदा नेक रहना इनोंमें मजा है ।
मियां एक मस्सूरखां नाम जाकै, बड़े तेजवानं सबोंमें कजाके ।।५१।।

४६. जखीर = खजाना । सौरै पख = सोडे गाँव वालोंकी पक्ष लेकर, वा सोलह पक्ष ।
४७. खुट्टे = समाप्त हो गये ।
४८. हट्टे = हट्टे कट्टे, मोटे ताजे । महा......फट्टे = जिस प्रकार हाथी सूंडमें बड़े २ पत्थरोंलेकर अपने सीनेसे टकरा कर तोड़ देते हैं ।
४९. यलल्ला = या अल्लाह, ईश्वर ।
५१. बदी = बुराई । कजाके = कज्जाक, बलवान, लुटेरा ।

वही मीरखांके बजीरं कहावै, बड़े मीरजादे अदाबं बजावै ।
बड़े फारसी पोस जुब्बान चल्ली, अरब्बी पढ़े बुल्लके कल्ल बल्ली ।।५२।।

बड़े मीर मुल्ला कहा बात कीनी, खुदा मीरखांको नई भूमि दीनी ।
यते मीर मुल्ला कहा एक मानूं, चमूं जोरिके मूल "लावे" न जानूं ।।५३।।

उनोके बनेसिंह राजा सहाई, जिनोंकी फिरै देश देशों दुहाई ।
बबाजान याके जुरे जंग 'लावै', उनोंके रहेगा तुमारे न आवै ।।५४।।

सबै कूंममें यह नरूके बुरे हैं, जुरे जंगमें यह कहूं ना मुरे हैं ।
जिते ये नरूके जुदे नाहि जानो, सबै देशके 'उन्नियारो', 'लदानो' ।।५५।।

बड़े मीरखांके रहे पीर पक्खै, उनोंके कबीले इनों कैद रक्खै ।
कहा जो हमारा उनों भी न माना, सबै यार जानो रहा नाहि छांना ।।५६।।

सबै सोर सीसा सबाबं लुटाये, रुपा लाख देके कबीला छुटाये ।
तुम्ही कल्ल यापै गये 'उन्नयारे', कला खोयके रोय पीछे पधारे ।।५७।।

हमैं आज लौं बात ऐसी निहारी, अबै जो न मानूं रजा है तिहारी ।
अबै मीर मस्सूरखां बत्त बोले, किये नैन 'रत्ते' करों तेग तोले ।।५८।।

उमीरी फकीरी बड़े एक आंटे, खुदाने दई है किसीके न बांटे ।
किनूं कायरी सूरताई दई है, जिनो अप्पनी अप्पनी ही लई है ।।५९।।

दरग्गाह जावो फकीरों पढ़ावो, तसब्बी फिरावो खुदाको लडावो ।
तुम्हें बात ऐसीनसे काम क्या है, बड़े जो कहाये खुदाकी रजा है ।।६०।।

---

५२. फारसी पोस = फारसीदां, फारसी भाषा जानने वाले । बुल्लके कल्ल बल्ली = कल बल करके बोले ।
५६. छांना = छुपा हुआ । पक्खे = पक्ष पर, मदद पर ।
५९. उमीरी = अमीरी, ठकुराई । आंटे = फर्क है, अंतर है । बांटे = हिस्सेमें ।
६०. खुदाको लडाओ = ईश्वरका लाड (प्यार) करो; ईश्वरका भजन करो ।

रहै पीर दोला मदत्ति तिहारी, यलल्लाहके हाथ है जीति हारी ।
करि आज हिन्दूनि ऐसी अनेसी, तिहारे रही राजके पाज कैसी ॥६१॥

दोहा

करिय मीर भृकुटी कुटील, बोले येह जुवाब ।
किय रजपूतहि रज्ज बिन, किय नवाब बिन आब ॥६२॥
करहुं बंध चतुरंगनी, सीसा सोर सवाब ।
कल बनास उतरहि कटक, यम दिय हुकम नवाब ॥६३॥

छंद मोतियदाम

भरो सत मत्त गयंदनि सोर, करो फिर पीठ मदत्तिय ओर ।
हकी सब तोपन जुट्टि लगाय, धुनी लवबान पताकनि छाय ॥६४॥
बडे गजराजनि रंग चढ़ाय, करे उन्मत्त घनूं मद पाय ।
चढै छलतें हुजदार कजाक, मनो हनमंत चढ्यौ मयनाक ॥६५॥
सिरी असिता सिर झुल्ल समेत, मनो तम राह पड़ा रहि केत ।
किते गजराजनि पीठ निसान, किते गज पीठनि नोबत खान ॥६६॥
किते चवदंडिय होदनि छाय, दये डगबेरनितें खुलवाय ।
चले मिलि दंतिय पंक्ति समग्र, मनो बग पंक्ति उठी घन अग्र ॥६७॥

---

६१. अनैसी = खोटी बात, बुरी बात, असह्य । पाज = सीमा, मर्यादा ।
६२. किय = किधों, अथवा, संदेह सूचक शब्द है ।
६४. जुट्टि = जोड़ी, बैलोंकी जोड़ी । धुनो = धूँणो, धूँम, धूआं । लवबान = लोबान, एक प्रकारका सुगंधित द्रव्य, जिसको 'धूप' के स्थान पर मुसलमान लोग जलाते हैं ।
६५. घनूं = घणां, अधिक । हुजदार = महावत, हाथीको चलाने वाला ।
६६. सिरी = श्री, हाथीके मस्तक पर किये जाने वाले रंग आदिको कहते हैं । असीता = काली । राह = राहु । केत = केतु ।
६७. चवदंडिय = चार डंडे वाले, अम्बावाड़ी छतरीदार हौदा । बेरनि = जंजीरोंसे ।

लसै उपमा यक और अचंभ, किधों शनि भोन शशी प्रतिबंब ।
ठनंकत घँट चलै तनु मोर, मनू कुलटा चलि चित्तहि चोर ॥६८॥
झनंकित झल्लिय कंठनि सोर, मनो बरखागम बुल्लिय मोर ।
चलावत अकुंशतें हुजदार, मनो गिरिके सिर वज्र प्रहार ॥६९॥
चले इभ अँदुक अंचत पाय, जरे पग लोह मनो जम जाय ।
चवै मद पूर छभट्ठिय राह, मनो बरषे वन भद्दव स्याह ॥७०॥
किते बिरचे गज मत्त करूर, करैं गज गीरनके चकचूर ।
उखारत मूल पिचू बटु तार, वजारनि हाक परी हटनार ॥७१॥
अनी चख भालनि भेरिय अग्र, धुवां चरखीनि मची धम जग्र ।
तरायल हत्थनि दे बहुतारि, लये पुर बाहिर निट्ठि निकार ॥७२॥

दोहा

उर अहिमति सिर भिरि उरस, हय पैदलनि समुच्च ।
यम उजीरदवला चल्यो, कुच्च कुच्च दर कुच्च ॥७३॥

छंद भुजंगी

चढ्यो मीरखां संग जंगी सबाबं, चढ्यो मालवी जावरेको नबाबं ।
चढ़े बाजी ह्वैके सबै सैद संगी, हयं पक्खरं टोप सन्नाह जंगी ॥७४॥

---

६९. झल्लिय = झालर, हाथीके गलेमें पहिनाई जाने वाली घूघरोंकी माला ।
७०. अँदुक = हाथीके बांधनेकी जंजीर । छभट्ठिय = गंडस्थल छै स्थानोंसे । जम = यमराज ।
७१. बिरचे = क्रोधित । गज गीरन = मजबूत दीवार । पिचू = कैर का वृक्ष, नीमका वृक्ष हाक = हल्ला . हटनार = हडताल ।
७२. भेरिय = सटा कर, भिड़ा कर । तरायल = चपल । बहुतारि = बहुत सी ।
७३. उरस = आकाश ।

चढे सिंधके भावनग्री मुसल्ले, करों ले कमठ्ठे बयं केक झुल्ले ।
चढे कुच्च दढ्ढे सिखा हीन मत्थे, इरानी अरब्बी तुरक्की चिगत्थे ।।७५।।
दिलीवाल संगी चढ़े जुद्ध काजं, जिनों सीसपै बंक बत्ती विराजं ।
चढ़े बंगसी रूम सींदीं गिलज्जं, भतं भत्तनि कंत कांता बिलज्जं ।।७६।।
चढ्यो मीर मस्सूरखां तेज ताजी, जिनों देख मारुत्तकी गत्ति लाजी ।
चढ्यो खान दोरा बरच्छी घुमावै, फुलै अंग ये तो जरद्दं न मावै ।।७७।।
चढ़्यो जावदीखां सुरा अंध कंधं, लगाए दुसालो जिनो जेर बंधं ।
चढ्यो जाफरीखां नचै बाजि अैसे, जिनूके अगे मृग्गके धाव कैसे ।।७८।।
हरेई चढ्यो बाजि साहाबदीनं, भये कंध केकीनके मान हीनं ।
चढ्यो दाददीखां हयं बाग खच्चै, मनो पातुरी चातुरी भूमि नच्चै ।।७९।।
चढ्यो मीर कालू हयं बे बिरच्चे, मनो मेक मूंगा थतं थाल नच्चै ।
चढ्यो पीरखानं यतै बाज लक्खी, जिनोके रहे पीर चोबीस पक्खी ।।८०।।
चढ्यो गोसखानं उड्यो हय हरेई, मनो आसमानं विमानं परेई ।
चढ्यो मोजदारं दिवाना रवद्दं, हयं पाव मंडै करीके हवद्दं ।।८१।।

---

७५. कुच्च दढ्ढे = कूँचीके समान दाढ़ीवाले, (कुच्च = एक प्रकारका औजार जिससे बुनकर लोग सूतको सुलझाते हैं) चिगत्थे = चगताई । कमट्ठे = कबान । केक = कई । झुल्ले = बूढ़े ।

७६. दिलीवाल = देहली वाले । बंकवत्ती = टोपीके ऊपरकी कलंगी । भतं भत्तनि = भाँति भांतिके । कंत कान्ता विलज्जं = दूल्होंको भी लज्जित करने वाले ऐसे बने ठने ।

७७. जरद्दं = कवचमें ।

७८. अंधकंधं = मस्त हुआ ।

७९. हरेई = नीला, बाजिका विशेषण ।

८१. परेई = परी, अप्सरा ।

चढ़्यो सेख तत्तारखां बाजि तत्ते, उडै आसमानं मनो पोन पत्ते ।
चढ़े खान जादे किते बाजि फेरै, उलट्टे सुलट्टे पटे दाव घेरै ॥८२॥
चढे मीरजादे सबे एक सत्थं, लखै आफताबं जिनो थामि रत्थं ॥८३॥

दोहा

पंच अयुत लय संग दल, होय किलम हमगीर ।
कियो मुकाम उलंघि जल, खल वासिष्टी तीर ॥८४॥
करनसिंघ प्राकार प्रति, सजि पूरन सामान ।
कग्गल बंधुनको दये, आसुर आवत जान ॥८५॥

छप्पय

उनियारे पति प्रबल मदत फतै नृप भेजी ।
चोरू, महर्‌यों मिले तोर उत्थल अंगरेजी ॥
स्योरापति हनुमंत मिले बंधव पंचालय ।
पाट, थान, लद्दान, सदा असुरां उर सालय ॥
भारत्थ करन भारथ तनय, संग सुभट लावै सबल ।
'लावै' उबेल आये दहूं, पातिल गोबरधन प्रबल ॥८६॥
नग मारन मघवान दक्ष मारन शंभूगन ।
मृग मारन मृगराज, पनग मारन पनगासन ॥
कन्हर मारन कंस, हरी हिरनाक्ष विदारण ।
हर मारन मनमत्थ, पार्थ खांडीव प्रजारन ॥

---

८४. हमगीर = साथ । बासिष्टी = बनास नदी ।
८५. कग्गल = कागज, पत्र, चिट्ठी ।
८६. चोरू, महर्‌यो = गांवोंके नाम हैं, यहां उनके स्वामियोंसे मतलब है । तोर = तेवर, त्यौंरी । तोर उत्थल अंगरेजी = अंगरेजोंकी परवाह न करके । उर सालय = हृदयमें खटकने वाले । उबेल = मदद । पंचालय = पंचाला, एक ठिकानेका नाम । पाट = पाटन । थान = थाना, एक ठिकानेका नाम । लद्दान = लदाना, एक ठिकानेका नाम ।

तुरकान सेन मारन तदन, इसो रूप दरसावियो ।
"लावै" उबेल बंधू प्रबल, यम गोबरधन आवियो ॥८७॥
मार छोरु कर गह्यो धनुष कामातुर मारन ।
ईश छोरु ऊघरचो नयन तीजो प्रज्जारन ॥
अनिल छोरु घ्रत परचो बहुरि मारुत झकझोर्‌यो ।
सार छोरु दुद्धार बहुरि वाको विष बोर्‌यो ॥
रन पत्थ छोरु सारथ हरी, सिंघ छोरु पक्खर घल्यो ।
करनेश छोरु कल्लह करन, बहुरि आनि पातिल मिल्यो ॥८८॥

दोहा

बखतावर, गोविन्दवर, बीर पराक्रम सूर ।
आये 'लावै' बंचि खत जैपुर हूंत जरूर ॥८९॥
निसि बासर उन्मत्त रहि, आसुर जुत्थ उथाल ।
ओ बखतो नव्बाब उर, सालत ज्यों नटसाल ॥९०॥
लावा-पति बंधु प्रबल, अलवर रहत असंक ।
तिनको धावन पठ्ठये, लिखे बुलावन अंक ॥९१॥

---

८७. नग = पर्वत । मघवान = इंद्र । पनगासन = गरुड़ । कन्हर = कृष्ण ।

८८. छोरु = था तो सही, और । ऊघर्‌यो = प्रकट किया, खोला । दुद्धार = दोधारा, दोनों तरफ पाण (धार) वाला । बोर्‌यो = डुबाया । पत्थ = पार्थ, अर्जुन । घल्यो = डाला गया । कल्लह = कलह, युद्ध । पातिल = प्रतापसिंह ।

८९. बंचि = बांच कर, पढ़ कर । हूंत = से ।

९०. जुत्थ = यूथ, झुंड । उथाल = उलट कर । बखतो = बखतावरसिंह । सालत = खटकता है । नटसाल = फांस, गांस, कांटेका वह भाग जो टूट कर शरीरमें रह जाता है ।

९१. धावन = दूत । अंक = आंक, अक्षर, पत्र ।

किल्ले रक्खनहार नहिं, आज 'सलो' अनभंग ।
'रैनालय'में थट्टियो, तुज्जि भरोसे जंग ॥६२॥

जुध 'महुकम' थट्टो जदन, छो 'सादूल' सहाय ।
आज 'पना' ! तू सीस पर, ओ असमान उचाय ॥६३॥

पहिले जुद्ध खुमानसी, असुरां दिया उत्थल्लि ।
आज सुजान भुजानपै, सरम समूची झल्लि ॥६४॥

छप्पय

येम पत्र करनेश, लिखे अलवर पुग्गाये ।
पंति पंति प्रति पंति, सकल बंधुनि सुनि पाये ॥
अंक येम उघ्घरे, लोभ लग्गो पुर लुट्टन ।
आयो सरित उलंघि, जुद्ध अपने गढ़ जुट्टन ॥
छुट्टै न दान किरवान बिनु, कहु दल जोर उमंगियो ।
लग्गियो केत बासर किरन, ज्यों आसुर 'लावै' लग्गियो ॥६५॥

मत्तो मत्ति उर मद्धि, पत्र भूपति कर दिन्हिय ।
बंचि खत्त बनराय, नयन रोषारुन किन्हिय ॥
बयन येम उच्चरे, गमन पल जैज न कीजै ।
सिलह तोप बारूद, जुद्ध संजत सब लीजै ॥

---

६२. सलो = सलहसिंह । रैणालय = रणजीतका घर ।

६३. महुकम = महुकमसिंह । थट्टो = स्थापित किया । सादूल = शार्दूलसिंह । पना = पनेसिंह । उचाय = उँचो, सर पर रखो ।

६४. सरम = शर्म, लज्जा । समूची = सम्पूर्ण ।

६५. पुग्गाए = पहुँचाये । उघ्घरे = प्रकट हुए । केत = केतुग्रह । बासर किरन = सूर्य ।

अब खूब जुद्ध करिबो उचित, पूरन मदति पठाय हैं।
जो रहत किलम सिर जोर तब, बहुरि सबलता आय हैं ॥६६॥

लखनेऊ पति कवन, कवन पंचाल धरत्तिय।
पल्हनपुर पठ्ठान, कवन भागलपुर पत्तिय ॥
खल भावलपुर कवन, कवन सिंधी जिल्लायत।
को बपुरो नव्वाब, टूंक जावरै मिल्लायत ॥
अनयास होत मैवासपति, तुरक तोर तुट्टै तदन।
बनराव येम कथ उच्चरत, सोर परत दिल्लय सदन ॥६७॥

सत मत्ते मातंग, द्वार खंभारनि गज्जहि।
अयुत पंच रजपूत, सकल आयुध तन सज्जहि ॥
प्रबल तोप रथ पंक्ति, याम प्रति नोबत बज्जत।
सूर सुभट तोखार, सार पक्खर जुत सज्जत ॥
बावन दुरंग बंके विविध, सब क्षिति छोगो छत्रपति।
बखतेश तनय वनराव नृप, करत राज अलवर नृपति ॥६८॥

छंद मोतीदाम

वढै बनराव सहल्लनि भोर, परै सब शत्रुनके घर सोर।
जुरे नर हैमर गैमर जुत्थ, मनो चतुरंगनि राधव सत्थ ॥६९॥

---

६६. जेज = देर, विलंब। मत्तो मत्ति उर मद्धि = मनमें अपने आप ही मनसबा करके, अपने आप ही खूब सोच विचार कर।
६७. अनयास = अन आस, आशा रहित।
६८. तोखार = घोड़े। छोगो = शिरोमणि।

परै बहु ठोर बमीलनि बंब, नचै मनु लंकप काल कुटंब।
निवालनि धप्पिय लेत डकार, किते सद तोपनि फट्टि पहार ॥१००॥
करी समकौर करीनकी पंति, उठी वरखा मनु ग्रीषम भ्रंति।
लसै रद इंदव देह दुनाय, जुटे मनु राह सनम्मुख आय ॥१०१॥
जरै सब्र पीतरतैं सम दंत, बसी हिमके मनु भोन बसंत।
झल्लकत झूल हवद्दनि पास, किधों झर मध्य रच्यो कयलास ॥१०२॥
हयं सफ सारनकी खुरतार, खनंकित पाहन अग्गि उपार।
सजै हिम साखति भूखन गात, ग्रस्यो मनु आतप भान प्रभात ॥१०३॥
लसै पति पद्धर पिट्ठ निसंक, कसै कर वग्गनि कंधुर बंक।
गुहे कच यालनके भरि बत्थ, सितासित पीत कनादिक सत्थ ॥१०४॥
मिलै जरदोजनितै मखतूल, सरासनपै मनु आतस फूल।
बरक्खत पंच तते तनु अच्छ, तलप्फत मीन मनोजल तुच्छ ॥१०५॥

१००. ठोर = चोट। बमीलनि = नगारे, नक्कारे। बंब = रणनाद। लंकप = लंकापति रावणके। निवालनि = ग्रासोंसे।

१०१. समकोर = बराबर, एकसार। इंदव = बहुतसे चन्द्रमा। राह = राहु। देह दुनाय = शरीरको दोहरा करके। (बंक चंद्रमहि ग्रसै न राहू, तुलसी)

१०२. पीतर = पीतल, धातु विशेष। भोन = घर। हवद्दनि = हौदा।

१०३. सफ = पंक्ति, कतार। साखति = घोड़ेका साज सामान।

१०४-१०५. गुहे......सत्थ = घोड़ेकी अयाल (गर्दनके) बाल कनोतीके साथ सफेद काले और पीले डोरोंसे गुथे हुए थे।

पद्धरपति जिस घोड़े पर बैठे थे वह 'पंचकल्याण' (पांच सफेद चकते वाला) था। लसै पति......मनोजल तुच्छ—पद्धरपति उस पंच कल्याण घोड़ेकी पीठ पर हाथ निशंक हाथमें लगाम कसे कंधेको तिरछा कर बैठे हुए थे, उसकी गर्दनके बाल कनोतीके साथ कफेद, काले और पीले डोरोंसे गुंथे हुये थे, ऐसा मालूम होता था कि मानो रेशम पर जरदोजीका काम हो रहा है अथवा, धनुष पर सूर्यमुखी फूल लगा हो। उसके तेज और स्वच्छ शरीर पर वे पांचों चिकत्थे, जब वह उछलता था तो मालूम होते थे मानो थोड़े जलमें मछली तड़पती हो।

उड़े नभ रागनि लग्ग छछोह, मलफ्फत पंच बरच्छनि बोह ।
सजै तिनपै असवार कजाक, छके उन्मत दुबारनि छाक ।।१०६।।
'लखा' हंनुमंत जिसे उमराव, जिनूं जुध मद्ध न डुल्लत पाव ।
चढ्यो मनु सिंधु उलंघत पाज, जुरे जुध कौन बनेशतें आज ।।१०७।।

दोहा

यम अक्खी बनराव नृप, हारि जीति हरि हत्थ ।
लरना मरना मारना, येह तिहारे सत्थ ।।१०८।।
कर मुच्छनि घल्ले रवत, बुल्ले 'पनो', 'सुजान' ।
जो खल अग्गल भग्गि हैं, उगि हैं पच्छिम भान ।।१०९।।
सकल जुद्ध सामान दिय, बिदा किये बनराज ।
मनु जग बोरनको उदधि, लगे उलंघन पाज ।।११०।।
'थाना' पति 'हनुमंतसी', कँवर गढी पति 'कान' ।
'बीजबार' गढपति 'लखैं', कर झल्लीं किरवान ।।१११।।

छंद मोतीदाम

गढीपतिके रनजीत कुमार, सुनी यह बत्त गह्यो कर सार ।
किते बलके खल टूंके नवाब, हरों गज वाजि करों बिन आब ।।११२।।

---

१०६. छछोह = उत्साह सहित । मलफ्फत = उछलते हैं । रागनि = रानोंके (जंघाके) इशारेसे ही । दुबारनि छाक = दूसरी बार निकाली हुई शराब । पंच बरच्छनि बोह = पांच बरछियों जितनी लम्बाई तक ।

१०९. रवत = रावत, वीर । अग्गल = आगे, सन्मुख ।

११०. बोरन = डूबोनेके लिए ।

१११. बीजवार = अलवर रियासतका एक प्रसिद्ध 'ठिकाना' । थानां, गढ़ी = ये भी अलवरके ठिकानोंके नाम हैं ।

यतै हनुमंत कहि यह बत्त, अबै घन मेच्छ भये उन्मत्त ।
गह्यो कर बान उदग्गनि हत्थ, महिख्य समान उनत्थहि नत्थ ।।११३।।
'लखै' यम अक्खिय बत्त निसंक, करो खल जुद्ध निकारहु बंक ।
सबों दल पूर मदत्तिय संग, करो न विलंब जुरो यम जंग ।।११४।।
हनूँ खलके दल खग्गनि जोर, शकिते मग ग्गहि छाँडि मरोर ।
यतो बलहीन करो खल जुद्ध, जुरै नन जाय कहूं फिर जुद्ध ।।११५।।

दोहा

बिंटि सनाहनि अंट उर, सकल जुद्ध तन सज्जि ।
चढ़े बीर पद्धरपती, पूर नगारनि बज्जि ।।११६।।

छंद भुजंगी

घनं घोर बंबील बज्जे निघातं, उडे गैन पंखी मनो तूल पातं ।
'रणों' सूर बीरं चढ्यो बाजि तत्ते, भये रोसकी ज्वालतें नैन रत्ते ।।११७।।
महासूर बीरं चढ्यो येम 'सूजो', मनो भानके बाजिपै भान दूजो ।
'पनूं' पक्खरादी हयं पीठि ओपै, मनूं कामकी सेनपै ईश कोपै ।।११८।।
'पना'को तनूं येम 'गोपाल' सज्जै, धरा नेत बंधी हयं खूर मज्जै ।
चढ्यो रेवतं पूत 'सुज्जान' केरो, भयो जेठके भान जैसो उजेरो ।।११९।।
'हरन्नाथ' कुम्मेरको नंद चढ्यो, घने आसुरोंके घरों सोक बढ़चो ।
दरोगो चढ़चो 'हाजर्‍यो' तेज ताजी, करै लून राई भई रंभ राजी ।।१२०।।

---

११३. महिख्य = भैंसे । उनत्थहि नत्थ = बिना रस्सी वालोंके नाकमें रस्सी डाल दूंगा ।
११५. जोर = बल, ताकत । मरोर = मरोड़, ऐंठ, गर्व ।
११६. बिंटि = वेष्ठित करके । अंट = आंटियें, कड़ियें ।
११७. बंबील = नगारे । निघातं = चोट । गैन = गगनमें, आकाशमें ।
११९. धरा नेत बंधी हयं खूर मज्जै = वह भाला लिए हुए था और उसका घोड़ा अपने खुरसे जमीनको खोदता था । तनूं = पुत्र । रेवतं = हाथी । केरो = का ।
१२०. करै लून राई = नोन राईको ले कर और वार कर अग्निमें डाल दिया जाता है । ऐसा करनेसे 'नज़र' दृष्टि-दोष नहीं होता ।

कपाली चढ़चो बैलपै लैर लग्यो, चढ़ी सिंघ काली, लखै बैल भग्यो ।
गिरि मादिके मेखली रुंड माला, गिरे ग्रंत तंतावली मृग्गछाला ।।१२१।।
गिर्‌यो कालकूटं परी भंग तुच्छी, परे बित्थुरे भूमिपै नाग बिच्छी ।
जटी भूत प्रेतं लिये लैर लग्यो, हठी बीरभद्रं तमासै उमग्यो ।।१२२।।
चली जुग्गनी चोसठी पत्र झल्ले, बसूहीन सट्ठी महाबीर चल्ले ।
मुनि जंत्र पाएी ग्रसोमं बजायो, ललक्कारि भैरूं किलक्कारि ग्रायो ।।१२३।।
गुडी लों उडी गिद्धनी व्योम छायो, नहीं हूर रंभा रथों पंथ पायो ।
भिरी पक्खरों पक्खरों भीरि पूरं, हयं गज्ज गाहं भयं चूरमूरं ।।१२४।।
धरा धूसरी धूरि ग्राकास लग्गी, हयं खूरतें सीस धूनै पनग्गी ।
सबै सूरवीरं धर्‌यो सिंघ भेसं, कर्‌यो पद्धरि सेन 'लावै' प्रवेसं ।।१२५।।

दोहा

ग्रब ग्ररजन राठोरको, ग्रावन कहूं बखानि ।
जुद्ध भयो "लावै" जदन, जिहि बिध जुट्टे ग्रानि ।।१२६।।
बनयसिंघ मातुल तनय, जिनो ग्ररज्जुन नाम ।
मेरतियो कुल राठवर, पुर'मारौठ' सुधाम ।।१२७।।
हैदल पैदल संग दय, बिदा किये बनराज ।
यम कहि "लावै गढ्ढ"की, तुज्ज भुजों पर लाज ।।१२८।।

छंद मोतीदाम

चढ्यो हय पक्खर बिट्टि रठोर, पर्‌यो सिर शेष समस्तनि जोर ।
डुली मनि मत्थ फनी फन चंपि, उरब्बिय ताम थरत्थर कंपि ।।१२९।।

---

१२१. कपाली = शिव । लैर लग्यो = पीछे २ चला । मादिके = मादक द्रव्य ।
१२२. जटी = जटा वाले, शिव । लैर = साथ ।
१२३. वसूहीन सट्ठी = आठ कम साठ अर्थात ५२ भैरव ।
१२६. उरब्बिय = उर्वि, पृथ्वी । ताम = उस समय ।

चले चक पत्र चलद्दलभांति, तलातल ज्यों अतला विचलाति ।
शस्त्रनि तेज हुतासन धुक्ख, प्रलै रविकी मनु तुट्टि मयुक्ख ॥१३०॥
हयं सफ वज्र हरग्गिर खिज्ज, खिवैं खुरतार मनो घन बिज्ज ।
उडी रज डंबर अंबर गोम, विहंगमकी पर बज्जिय व्योम ॥१३१॥
कियो मनु बाडव सिंधु प्रलोप, कियो मनु कंसपै कन्हर कोप ।
भरी मनु सिंघ करीनिपै डग्ग, अरज्जन येम लग्यो जुध मग्ग ॥१३२॥

छप्पय

जिमि जैमल राठोर मरन चित्रागढ़ पायउ ।
पित्थुर संभरि ईश येम अरबुद्दनि आयउ ॥
धर छुट्टत चंदेल आनि अन्हल सिर तुट्टिय ।
कन्हर पन कर हल्ल जंग फतैपुर जुट्टिय ॥
यह तोर बदन राठोर तन, बीर नूर बरसावियो ।
पन झल्ल पूर मारन मरन, येम अरज्जन आवियो ॥१३३॥
लख बटेर सिच्चान मनहु चीतो मृग मारन ।
हेरि पत्थ जयद्रथ बाघ हेर्‌यो मनु बारन ॥
हर हेर्‌यो मनु मार सोर हेर्‌यो हुत्तासन ।
सर हेर्‌यो आगस्त, पनग हेर्‌यो पनगासन ॥
पायो कुलंग कुल बाज मनु, भीम दुसासन पावियो ।
आसुरां सीस 'लावै' मलफि, येम अरज्जुन आवियो ॥१३४॥

---

१३०. यहां 'पत्र' के स्थान पर 'पत्त' पाठ होना चाहिए । चक पत्त = दिशाओंके मालिक विचलाति = विचलित हो गये ।

१३१. सफ = पंक्ति, कतार । खिज्ज = खिरना, टूटना । खिवैं = चिनगारी निकलती है चमकती है । डंबर = समूह । गोम = धुंधला गया ।

१३३. चित्रागढ़ = चित्तोड़ । पित्थुर = पृथ्वीराज । अरबुद्दनि = अर्बुदाचल, आबू पहाड़

१३४. पत्थ = पार्थ, अर्जुन । बारन = हाथी । सोर = बारूद । मलफि = कूद कर ।

जिमि जालंधर तक्कि, जुद्ध जुट्टन हर आयो ।
हैहय नै हंकार, मनहु फरसाधर धायो ।।
पंडव पत्थ सहाय, क्रस्न आयो जिमि जद्दव ।
कृषि सूकेतें मेघ, मनहु धायो धुर भद्दव ।।
हय हक्कि बीर आतुर यते, रज डंबर नभ छावियो ।
"लावै" उबेल असुरां लरन, येम अरज्जन आवियो ।।१३५।।

दोहा

येम अरज्जुन आवियो, "लावा" मधि राठोर ।
तदन रवद्दनके हिये, पर्‌यो अचानक सोर ।।१३६।।
तुरकनके आगम तदन, कर गहि ऐंचें काल ।
आये जुत्थपै जुत्थ मनु, सिंहालय श्रंगाल ।।१३७।।
के मरना के मारना, यम नवाब पन झल्लि ।
हम ऊतरि हैं फीलतें, "लावो कोट" उत्थल्लि ।।१३८।।
फिरी प्रबल चतुरंगनी, पुर दुरंग चहुं कोर ।
इत हिन्दुनि उत आसुरनि, दगी तोप दहुं ओर ।।१३९।।

छन्द मोतीदाम

यतै दुहुं ओरनि दग्गिय तोप, किये मनु काल प्रलै कृत कोप ।
मिले सद मध्य जमूर जुगाल, किलक्कत जुग्गनि जानि कराल ।।१४०।।
भयो दुहुं ओर भयानक सद्द, पर्‌यो उन्मत्त मतंगनि मद्द ।
भयो उर सूरनके उछरंग, थरत्थर कंपिय कातर अंग ।।१४१।।

---

१३९. फिरी = घूमी, घूम गई, घेरा डाल लिया । दुरंग = किला ।
१४०. सद = शब्द । सदमध्य = तोपोंके शब्दोंके बीचमें । जुगाल = दोनों ओरके ।
१४१. उछरंग = उत्साह ।

धुनी उडि सोर उपट्टिय ज्वाल, किधों घन तुट्टिय बिज्जु कराल।
तुपक्कनि तोप जमूरनि जुट्टि, परैं नर हैवर प्रान विछुट्टि ॥१४२॥
उडी झर सोर बिथोरत बाय, लगी मनु ग्रीषमकी ऋतु लाय।
तलत्तलि तोय तते मनु तेल, लगे दुहुं ओरनितैं यह खेल ॥१४३॥

छप्पय

मुख्य तनय 'सादूल' सुभट संगी रोषारुन।
सजि आयुध सन्नाह, बींटि पक्खर तोषारुन ॥
खल खग्गनि खंडिहु, येम बायक मुख बुल्लै।
पाहन रेख प्रमाण, 'पनै' पूरन पन झल्ले ॥
हय हक्कि समुख चतुरंगनी, बहुरि मुगल दल मारिहूं।
करि जुद्ध येम चवग्गनि फिरि, आसुर देश प्रजारिहूं ॥१४४॥

दोहा

पनयसिंह पद्धरपती, सूरवीर गहि सार।
तदन मुगल दलपै प्रबल, यम हक्के तोषार ॥१४५॥

छंद मोतीदाम

चढ़े मनु सिंधु उलंघन पाज, करी मनु सिंह करीनिपै गाज।
किधों बडवानल कोप समुद्र, किधों हथनापुरपै बलिभद्र ॥१४६॥

---

१४२. धुनी = धूनी, धुआँ धूम्र।
१४३. झर = लपट, ज्वाला। सोर = बारूद। बिथोरत = फैलाना। बाय = वायु। लाय = अग्नि। तलत्तलि = तलातल तकका। तते = गरम हो गया।
१४४. रोषारुन = गुस्सेसे लाल। तोषारुन = घोंड़ोंको। चवग्गनि = चौगान, मैदान।
१४५. तोषार = घोड़े।

किधों कुल अद्रनि इंद्र हकारी, किधों कुल कद्रुनिपै पनगारि ।
किधों सर सोखन कोप अगस्त, किधों द्रुम डारिनपै गज मस्त ।।१४७।।
किधों कुल रावनपै रघुराय, किधों कुल कंज हिमालय-बाय ।
किधों सहिश्राभुजपै दुजराम, किधों हनमंत असोक अराम ।।१४८।।
किधों इभकुंभ व्रकोदर हत्थ, किधों जयद्रथ्थहिपै पन पत्थ ।
किधों त्रिपुरासरपै त्रिपुरारि, किधों मुरदानव सीस मुरारि ।।१४६।।
किधों मृग जुत्थनपै मृगराज, किधों लखि चंग कुलंगनि बाज ।
किधों दखके मखपै हर ताप, किधों कुल जादवपै ऋषि श्राप ।।१५०।।
किधों घननादपै लक्ष्मन बीर, जिही कुल मेच्छ'पनूं' हमगीर ।।१५१।।

दोहा

तेज बाजि हक्के तदन, पनयसिंह यह बिद्धि ।
मुख चढ्ढ़े जेते किलम, मरे परे धर मद्धि ।।१५२।।
किते बोह कीने किलम, लग्गे लोहन काय ।
प्रबल नरुकनके तदन, संकर भयो सहाय ।।१५३।।
येम जोरि चतुरंगनी, पद्धरपति 'पन्नेस' ।
किलम संहारनको भयो, बीरभद्र गनभेश ।।१५४।।

छंद भुजंगी

करों तेज तांजीनकी बाग झल्ले, धरा लूटिबेकों महासूर चल्ले ।
मतो मत्ति ले संग जंगीन सन्ने, परे मेच्छ किल्लोंनपै जोर घन्ने ।।१५५।।

१४७. अद्रनि = पहाड़ । कद्रनि = सर्प ।
१४९. व्रकोदर = पांडुपुत्र भीम । पत्थ = पार्थ, अर्जुन ।
१५०. चंग = चंगे, मोटे ताजा । कुलंग = एक बतखकी जाति ।
१५१ हमगीर = समान, साथी । जिही = ज्यूहीं; वैसे ही ।
१५२. यह बिद्धि = इस प्रकार । मुख चढ्ढ़े = सन्मुख आया ।

हरी देख मालीत भूमी प्रजारी, परे आसुरोंके घरों सोक भारी ।
पुरी प्रज्जरी मेच्छकी घूम धायो, धरा व्योम धप्पे मनूं अभ्र छायो ।।१५६।।
मिले नग्र मेच्छंदवारे गरद्दं, भयो टूंक भारी हहंकार सद्दं ।
चकै ओचकै तारुनी वृद्ध छोना, किती आसुरी गर्भ आंवत ऊना ।।१५७।।
मृगाकसीपी त्यों पुरी शक्र कूटी, किधों धीर पुंडीर लाहोर लूटी ।
हरे कोपि कुट्टी पुरी त्यों अनंगी, बिधूंसे 'पनै' मेच्छकी भूमि चंगी ।।१५८।।

दोहा

बूडी सोक समुद्र बिच, जीव निसासनि जात ।
बीबी दवलउजीरकी, यम लिखि भेजी बात ।।१५९।।
'पना' एक रंघर सुना, जिना दिया फुरमाया
पकरेंगे हमको वहै, आजकालमें आय ।।१६०।।
सकल 'टूंक' बसवान खल, सरल भये तजि बंक ।
संधि करहु 'करनेश'तें, यम लिखि भेजे अंक ।।१६१।।

छंद नीसानी

यम लिखि दोलउजीरनै पुरजा पहुँचाया ।
खान विरादर नोकरों सबको बुलवाया ।।

---

१५५. झल्ले = पकडी । मतो मत्ति = अपने आप । सन्ने = सेना, फौज । घन्ने = बहुत ।
१५६. मालीत = दौलत । हरी = छीन ली । धायो = फैल गया, दौड़ा । धप्पे = व्याप्त हो गये, भर गये ।
१५७. अभ्र = बादल । नग्र = नगर । गरद्दं = गारत हो गये, बरबाद हो गये । चकै ओचकै = घबड़ा गये । छोना = लड़के, बच्चे । ऊना = अधूरा ।
१५८. मृगाकसीपी = हिरण्यकश्यप । चंगी = ताजा ।
१६०. रंघर = प्रणके पक्के राजपूत । जिना = जिसने ।
१६१. बसवान = बसने वाले ।

सबके बीच मसूरखां पुरजा बंचवाया ।
फिर कासीद जबानदां समंचार सुनाया ।।१६२।।
उस 'पन्नै' सादूलदे सब देश जराया ।
जारी सब जरातिको मध छार मिलाया ।।
खेहाडंबर धूमते धर अम्बर छाया ।
हल्ला बोलि हकारिके किल्ला गिरदाया ।।१६३।।
'टूंक' समेती भूमि गढ़ लूटनका दाया ।
करि समझासि नवाबकों सबनै समझाया ।।
उस बरि यों 'दोले' नवाब पुरजा सुनि पाया ।
जहर भरे जिह्मग जिम घन रोषए छाया ।।१६४।।
रोष मुसल्ले आनि उर हल्ले सिर लग्गो ।
उस बिरियों 'खुम्मान'वा 'हनुमंत' उमग्गो ।।
'सिवरा'के 'हनुमंत' भी बांई भुज लग्गो ।
केसर सन्ने कापरे कर तेग उनग्गो ।।१६५।।
पानिप तासे भेंरि नद बीरा रस बग्गो ।
क्रेते सिंधू राग सुनि कातर गन भग्गो ।
तोपन दिग्घ अवाजतें धरनी धग धग्गो ।
कोल कमठ्ठे जोर परि शिर धूनि पनग्गो ।।१६६।।

---

१६२. नै=को । पुरजा=पत्र ।
१६३. दे=के । छार मिलाया=मिट्टीमें मिलाया, बरबाद किया । गिरदाया=घेर लिया ।
१६४. समेती=सहित । दाया=हक । जिह्मग=टेढ़ा चलने वाला सर्प ।
१६५. हल्ले सिर लग्गो=हमला कर दिया । सन्ने=सने हुए, रंगे हुए । कापरे=कपड़े ।
१६६. धग धग्गो=कंपित हो गई ।

कारतूस घन युट्ठ कर सुम्मा लग थग्गे।
एक पलीती कालिका दहूं ओरनि दग्गे ।।
रिंजक प्याला सोरही झाला जगमग्गे।
यारो परलै कालदी ज्वालानल जग्गे ।।१६७।।

छन्द मोतीदाम

मिलक्किय दीन दहूंजुध पूर, हलक्किय बैठि बिमाननि हूर।
किलक्किय जुग्गनि शब्द कराल, खलक्किय भूमि किते रुहिराल ।।१६८।।

तुपक्कनि तोप जमूर जुलाल, परघ्घन सूल गदा भिंदिपाल।
गुपत्तिय खंजर धूप कटार, करत्तिय चक्र चलै चुकमार ।।१६९।।

फरी पिसतोल गुलेल कुठार, थकै नन हत्थ बकैं मुख मार।
जुरै कहूं सीस बिहीन कबंध, परै कहूं काल कला कृत फंद ।।१७०।।

किते बिन पाय परे तरफात, किते कढि प्रान पयाननि जात।
किते कर पांय परे अनमेल, रचे मनुं भूमि प्रपंचिय खेल ।।१७१।।

---

१६७. घन=ज्यादा। युट्ठ कर=युक्त कर, लगा कर, डाल कर। सुम्मा=तोपको साफ करनेका डंडा, जिसके सिरे पर एक गुच्छा लगा हुआ होता है। लग थग्गे=कंपित हो गए। पलीती=बत्ती। रिंजक=तोपके कानमें रखी जानी वाली बारूद। प्याला=तोपका कान। झाला=ज्वाला।

१६८. मिलक्किय=मिले। दीन दहूं=दोनों धर्म वाले, हिन्दू, मुसलमान। खलक्किय=बहे। रुहिराल=खूनके नाले।

१६९. जमूर=छोटी तोपें। जुलाल=बड़ी बन्दूक। परघ्घन=आगल। सूल=त्रिसूल। भिंदिपाल=गोफा, गोफना, एक अस्त्र विशेष। धूप=तलवार, खांडा। करत्तिय=कतरनी। चुक=गदा।

१७०. फरी=शस्त्र विशेष। गुलेल=एक प्रकारका अस्त्र, मूल प्रतिमें "गुलाल" पाठ है। जुरै=जुड़ै, भिड़ै।

१७१. तरफात=तरफराना, तड़फड़ाना।

लई पद चंपि अंगूठनि भूमि, सरब्बसु दब्ब लई मनो सूमि ।
खरे हनुमंत दुहु तिहँ ठौर, लये मनु हिंदव सिंधु हिलोर ।।१७२।।
लये तहँ मीर मसूरहि मारि, हने मनुं सिंधु तनै त्रिपुरारि ।
पर्‌यो रन खेत मसूर मलेच्छ, मचक्किय सेन किलंमनि पच्छ ।।१७३।।

दोहा

बज्जहि पूरन जाम प्रति, मनहु घरी घरियार ।
यह प्रकार दुहुँ ओरते, बज्जे सार अपार ।।१७४।।
खान पान सुध बीसरी, धरी न उरमें धीर ।
मरन मसूर मलेच्छको, संभर दवलउजीर ।।१७५।।

छन्द मोतीदाम

करे तहि दोलउजीर बिलाप, भयो सुरभंग महिख्य अलाप ।
लख्यो तन तेगनतें चकचूर, पुकारत मेक मसूर मसूर ।।१७६।।
बढ्यो उर सोक असाद्धि प्रलाप, तच्यो बडवानलकी मनु ताप ।
पर्‌यो भुव प्रान दुखी मुख फैन, तलफ्फत व्याधि हन्यो मनु ऐन ।।१७७।।
यते बहु दीर्घ बिरादर आय, दयो उरु धीर किते समुझाय ।
सुनी रजपूतनकी कुल रीत, परी हमको यह सच्च प्रतीत ।।१७८।।
मरै तिनके घर मंगल होय, करै जुध मृत्यू बिलाप न कोय ।
करो नन सोक दवल्लउजीर, करो द्रढ़ पांव धरो उर धीर ।।१७९।।

---

१७२. चंपि = दाबना । दब्ब लई = दाबली, अधिकारमें कर ली । सूमि = घोड़ोंके खुरोंसे ।
१७३. तनै = तनय, पुत्र । मचक्किय = सरकी, हिली, हटी ।
१७६. महिख्य अलाप = भैंसेकी तरह चिल्लाया ।
१७७. तच्यो = तपा हुआ । अैन = हरिण ।
१७८. विरादर = भाई ।

छंद निसानी

मरा मीर मसूरकों दुख धारा तब्बी ।
ज्यों घ्रत डारा आगिमें हिय पावक हुब्बी ॥
जानिक तत्ते तेलमें बूंदै परि अब्बी ।
जानि बिरूतें सेरदी पग सांकल दब्बी ॥१८०॥

कायमखां कपतानसे करि बातें चब्बी ।
सेख इनायत खानके भुज पलटएा ढब्बी ॥
टेरि कुतबीखांनसे खुद कहा मुरब्बी ।
हल्ले पूठे ना फिरै कल उसकी फब्बी ॥१८१॥

के तुम किल्ले तोरियो के मरियो सब्बी ।
देखो नब्बी क्या करै कर नाख तसब्बी ॥
उस बिर यों वज्जीरदौलकूं कहै कुतब्बी ।
जानिक सुर्गे लेनको हिरनाख्य मुरब्बी ॥१८२॥

दोहा

रहो नवाब निसंक उर, सोक न करहु सयान ।
मारा मीर मसूर तहु, खर्‌यो कुतब्बी खान ॥१८३॥
प्रलय सिंधु सम खिजि असुर, गवने तोपन दग्गि ।
मही काल बासर समय, यहि विधि चले उमग्गि ॥१८४॥
स्याम बसन सायुध सिली, मिली भयानक भेस ।
मनहु हलाहलकी सरित, पुर मधि कियहु प्रवेश ॥१८५॥

---

१८०. तब्बी = तब । हुब्बी = उठी, । अब्बी = आब, पानी । बिरूते = क्रोधित ।
१८१. चब्बी = टेडी, चिडानेको । ढब्बी = संभलाई, अधिकारमें दी । पूठे = पीछे । फब्बी = शोभा होगी । मुरब्बी = मालिक, स्वामी ।
१८४. मही काल बासर = प्रलयका दिन ।

छप्पय

सेन समुख तिह समय आनि 'हाजरियो' जुट्टे ।
हुय कोलाहल शब्द किलम इक्वान कुट्टे ।।
खंजर सेल कटार, तेग तुरकायन तच्छे ।
स्याम काज सिर दयो, पाव धर दिये न पिच्छे ।।
सिर माल काज संकर लयो, सिर बिहीन धर फिर लर्‌यो ।
बरि रंभ गयो सुरलोक मग, एम दरोगो 'हाजर्‌यो' ।।१८६।।

दोहा

सुनत बत्त रनजीत यम, आगम असुर समाज ।
मनहुं जुत्थ मातंग पर, लखि गमन्यो मृगराज ।।१८७।।
उते कुतब्बीखान अरु, यत रणजीत सजोर ।
तदन पत्थ जयद्रत्थ लों, पर्‌यो दहुनि पर जोर ।।१८८।।

छंद भुजंगी

'रणों', खांकुतब्बी तणें सीस चल्यो ।
मनो मत्त मातंग खूनी मचल्यो ।।
खिज्यो खांकुतब्बी मनूं सिंधू लोप्यो ।
किधों पत्थके रत्थपै द्रोन कोप्यो ।।१८९।।
जरासिंध लों अंगमें जोर पायो ।
पनग्गी मनू पाँय पुच्छी दबायो ।।
दहूंकी अनी मोसरों मुंह चढ्ढी ।
दहूंके करों ज्वालसी धूप कढ्ढी ।।१९०।।

---

१८६. कुट्टे = कूटे, मारे । तच्छे = छील दिये । स्याम = स्वामी ।
१९०. अनी = फौज । मोसरों = मंछें, होठोंके बाल ।

दुहूँके जुरे छोइते नैन छक्के ।
खरी लाट लग्गी, मनू लोह पक्के ।।
दहूँ मेरलों भूमिपै मंडि पाँवं ।
दहूं बीर बंके करैं दाव घावं ।।१६१।।
दहूं प्रान बाजी रची मांह छंड्डे ।
दुहूँ जै पराजैं भुजों भार मंड्डे ।।
दहूं जेम जुट्टे मधु कीट दानू ।
मनी हेत श्रीकृस्न जामूत मानू ।।१६२।।
किये मेच्छ बोहं किते पूर घायं ।
भयो भीम कैलास पत्ती सहायं ।।
बही मेक रनालयं हत्थ रूकं ।
तुपक्कं फरी मुट्ठि मेच्छं बिटूकं ।।१६३।।
पर्यो खांकुतब्बी सबै सेन भग्गी ।
लगे लैर हिन्दू लिये तेग नग्गी ।।
भई जीत हिन्दूनकी मेच्छ हारे ।
किले मद्धितें कूट पीछे निकारै ।।१६४।।

दोहा

एक सहस अरु एक सत, एकादस जुध जुट्टि ।
"रैनालय" कट्टे रवद, किल्ले बाहिर कुट्टि ।।१६५।।
किल्ले भिरि भग्गो किलम, जे नहि जुट्टन जोग ।
मरे डरे घायल परे, भये अजीरन रोग ।।१६६।।

---

१६१. छोइ = क्रोध । मेर = मेरू पर्वत ।
१६२. जामूत = जामवन्त । बोह = बार । घायं = घाव ।
१६३. रूकं = तरवार । मेक = एक । रनालयं = रणजीतसिंहका स्थान, लावाकी युद्ध भूमि । बही = चली । बिट्टूकं = दो टुकड़े हो गये ।
१६५. रवद = म्लेच्छ, मुसलमान ।

अहुटे दवलउजीर पँह, जियत रहे जे आय।
अपनी अपनी बुद्धि बल, कहत सकल समुझाय ॥१६७॥

बचनिका

नबाबके सामने आया, हल्लेका जिकर चलाया। किस तौरसे आजका दग्गा, कोन भिरा कोन भग्गा। उस बखत बोले कालू मीर, फुरतके फरिस्ता अकलके उजीर। इस किल्लेमें सुजानसिंघ ठाकर, जिसके 'हाजर्‌या' चाकर। 'हाजर्‌या'ने आपा दिखलाया, गलबेके साथ बाहरको आया। 'हाजर्‌या'ने जान झोका, आफताबने विमान रोका। निमककी सरीतीपै सिर दिया, हूरके विमान बैठि आसमानको गया। आजके हल्लेमें नवाबकी दुहाई, सीनासें सीना मिला कर तरवार चलाई। सब जवान वहां गया था, किल्ला लेनामें कसूर ना रहा था। उस सुन्ने-रनि मूंठ वालेने जुल्म किया, तमाम मुसलमानोंको घेंचि किल्लेकी रनीमें दिया। क्या अच्छी तरवार चलाई जिस बखत बोले खान दुर्जन, काल-पीके सैयद ईलाहीबकसके फरजन। हिन्दु जाति कालके काल, बाडबके

---

१६७. अहुटे = वापस लौटे।
बचनिकामें-जिकर = चर्चा, प्रसंग। गलबेके साथ = हल्लेके साथ। जान झोका = तन-मनसे महनत करना, तन मनसे लड़ा। सरीतीपै = एवजमें। घेंचि = खींच कर। रनी = खाई। वितुंड = हाथी। जलाल्या = दरवाजेके बीचमें लगा हुआ पत्थर जो किवाड़ोंको रोकता है। (यहां जलाल्याकी टक्करका अर्थ है अडिग) उरस = आकाश। झाट = फेंट, कोडा, चपेट।

बचनिका = यह भी दवावैतकी तरह होती है। अर्थात् यह भी गद्यका एक रूप है। इसका भी "रघुनाथ रूपक" में इस प्रकार लक्षण लिखा है—

बचनिका दो प्रकारकी होती है पदबंध और गदबंध। पदबंधके दो भेद हैं। प्रथम भेदमें तो केवल 'वारता' ही रखना चाहिए, दूसरे भेदमें वारतामें मोहरा (अनुप्रास) रखना चाहिए। और दो ही भेद गदबंध बचनिकाके होते हैं। प्रथम

ज्वाल । सेरोंके झुंड, बलके वितुंड । हूरोंके हार, दिलके उदार । कालीके चक्र, जलाल्याकी टक्कर । उरसकी तेग, मारुतका बेग । पोरसका भीम, उतरकी सीम । बीरोंके बीर, सागरके धीर । नाहरके थाहर लोहकी लाट, जंगूके जालम जमकी सी झाट । लावाके किल्लेमें ऐसे रजपूत, सारके संगर बलके मजबूत ।

दोहा

यम बुल्ले इकतारखां, सुनि नवाब यह बात ।
सकल बिरादर बीगरे, अब प्रानन पर घात ॥१९८॥
कर कफनी कोपीन कर, कर करवा भर आब ।
अब मक्का जैबो उचित, नवणों नहीं नवाब ॥१९९॥
आयुधखान अजीमखां, यम अक्खी दहुँ आय ।
ते श्रुति संभर सबनके, लगी करेजनि लाय ॥२००॥
कही मीर मारुत्तखां, सुनहु दवलउजीर ।
कै मरिहैं कै मारिहैं, नहि फिर होंय फकीर ॥२०१॥

छंद भुजंगी

चढ़्यो कोपि उज्जीरदोला नवाबं ।
लिये जुद्धके संग जंगी सबाबं ॥

भेदमें तो आठ मात्राका पद होता है और दूसरे भेदमें २० मात्राका पद होता है । उक्त बचनिका पदबंध बचनिकाका दूसरा भेद है । इन सब बातोंको जाननेके लिए 'रघुनाथ रूपक' जो एक उत्तम ग्रंथ है, देखना चाहिए ।

१९९. करवा = शिकोरा, मटकाना, मिट्टीका छोटा गिलासनुमा पात्र । नवणो = नम्र होना ।
२००. लाय = अग्नि । श्रुति = कान । संभर = सुन कर ।
२०२. सबाबं = असबाब, सामान ।

करी अग्र तोपं किये नद्द शद्दं ।
सदा मादिकं पाय मत्ते दुरद्दं ॥२०२॥
किये भूत कप्पाटकी फेट कज्जं ।
परि त्रास सोई भई प्रान तज्जं ॥
खिले टोप सन्नाहके बान सज्जे ।
भयो कोह भेरी भयानंक बज्जे ॥२०३॥
यते लागया नै बड़े राग सिंधू ।
मिले साजि हल्ले महाबीर हिन्दू ॥
नरुकूनि ले सस्त्र हत्थौ उकढ्ढे ।
किधों कोटतें सावठे सेर कढ्ढे ॥२०४॥
दहूं दीन आरानमें प्रान झोंके ।
लगे खेल बिम्मानकों भान रोके ॥
मुनि बीर ऊमाहि ले संभू आयो ।
तजे लोक वृन्दारकूं बेत छायो ॥२०५॥
घरी चार लों सांवठी सोर दग्गी ।
तप्यो लोक तेगूनकी रीठ बग्गी ॥
किते बीर बंके गजों घाव मंडै ।
परे पाव हीनं हयं प्रान छंडै ॥२०६॥

---

२०३. फेटकज्ज = टक्कर देनेके लिए । कप्पाट = किवाड़ । किये भूत = पागल किये । त्रास = डर ।
२०४. सांवठे = इकट्ठे । कढ्ढे = निकले, बाहर आये । यते...सिंधु = इधर सिंधुराग (वीर रसकी राग में) 'दूहे' कहे जाने लगे ।
२०५. आरान = युद्ध । बेत = बेंतकी तरह ।
२०६. रीठ = युद्ध ।

किते अंग हीने मुसल्ले कजाकी ।
लरै लुत्थ वत्थे रहे प्रान बाकी ।।
किते भूत बैताल भैंरु किलक्कै ।
किती जुग्गनी गिद्धनी श्रोन छक्कै ।।२०७।।
धनी जावरेको अनी जोर गिल्यो ।
घनै घाय आरानके घान घल्यो ।।
उतै जावरे टूंक पत्ती मुसल्ले ।
यतै रूक हत्थो करन्नेश झल्लै ।।२०८।।

छन्द दुर्मिला

उततें तुरकान यते हिन्दवान दहुं पुर बाहर जुद्ध किये ।
तिह ठोर रठोर 'अरज्जन' से 'रनजीत' उदग्गनि खग्ग लिये ।।
दहुं राम रु 'स्याम' 'हनू' तनये 'हरनाथ' 'कुमेर'के पूत हले ।
बहु रेवतसिंह 'गुपाल' 'सुजान' 'पनै' सुतनै किरवान झलै ।।२०९।।
'बखतेश' 'सुजान' 'गोविन्दरु' 'पातिल' 'गोबरधनरु' 'लदान' पती ।
'करनेश'कें पुत्र 'उदैकनदेव' दहूं उमगे मृगराज भती ।।
उगली किरवान मियाननतें मुगली भद कट्टि परैं बिथुरे ।
शर पेख पिनाकनि बाननकी अवली अनहद्द सबद्द करै ।।२१०।।
अरिबद्ध बिसब्द कराल कितै करि कोप कुलाहल शब्द कढै ।
करनेश उजीरदवल्लनकी दहुँ ओर दुहाई मनुष्य पढै ।।

२०८. जोर गिल्यो=बलसे भरा हुआ । घने=अधिक, अनेक । घाय=प्रहारोंसे, वारोंसे । घान=समूहमें । घल्यो= सम्मिलित हुआ । रुक=तलवार ।

२१०. भती=भांति, तरह । उगली=निकाली । भद=गिरनेकी हल्की आवाज, जैसे पट, धप, धम वैसे ही भद है । बिथुरे=बिखर गई, फैल गई ।

बजि सार कुठारन बारनि ले, नर हैमर गैमर देह फटैं ।
खिर बाढ़ परै खग धारनतैं मनु आरनतैं चिनगी उछटैं ॥२११॥

कछवाह अकंटक भूमि रमैं, तुरकान हने खग धारनतें ।
मनु सग्र तनै खिनि कोटि पचास, तलातल भूमि कुदारनतें ॥
हिदूवान बिमान अपच्छरकी गलबाँह मनो दमनी घनकी ।
तुरकान लिए परलोक परी गमनी मनु जुट्टिी जुराफनकी ॥२१२॥

हर मुंडनि हार बनाय हँसे, बिहंसी सब जुग्गनि श्रोनछकी ।
पल खाय अघाय पलच्चर नाचत भूत पिसाचनकी किलकी ॥
बजि भैरव डैरव जंत्र मुनी, धुनि गिद्धनि गुद्द अघाय उडी ।
लखि आतुर सार प्रहारयतें किलमी गति सोक समुद्र बढ़ी ॥२१३॥

ढरके मन् कुंभ मजीठनके रनभूमि तलातल रक्त भई ।
करनेश हनी खग धारनतै खल सेन चलद्दल भूमि भई ॥
कमनेत बिनोट पटै कुसती उडगी सब सिद्धि किलंमनकी ।
फिरि तोप न दग्गिय खग्ग न बग्गिय भग्गिय सेन किलंमनकी ॥२१४॥

---

२११. खिर=गिरना, टूटना । बाढ़=धार, पाँए । आरन=लुहारकी भट्टी । उछटैं=उछलती है । बारनि=प्रहारोंसे । अरिवद्ध=शत्रुसे घायल हुए मनुष्य ।

२१२. तनै=तनय, पुत्रं । कुदारनतें=कुदालसे । दमनी=दामनि, बिजली । जुराफनकी=जिराफोंकी, जुराफ, अफ्रीकाका एक पशु विशेष, जिसकी गरदन बहुत लम्बी होती है ।

२१३. डैरव=डमरू ।
गुद=गूदा । अघाय=तृप्त हो कर ।

२१४. ढरके=पड़े हुए, गिरे हुए ।

दोहा

यम जुट्टे हिन्दू असुर, जुट्टे माल जखीर।
हुय तग्गो तग्गो तदन, भग्गो दवलउजीर ॥२१५॥

छप्पय

जुध जीत्यो करनेश येम मुनि जंत्र बजायो।
जुध जीत्यो करनेश ईश चुनि शीश अघायो॥
जुध जीत्यो करनेश, बीर बावन यम बक्के।
जुध जीत्यो करनेश, श्रोन जुग्गनि सब छक्के॥
पलचार हूर अप्छर सकल, भूत प्रेत जंगम जती।
नर नाग देव यम उच्चरत, जुध जीत्यो पद्धरपती ॥२१६॥
जुध हारयो नब्बाब जुद्ध पद्धरपति जीत्यो।
सर छिल्लर सुकि गयो येम आसुर दल बीत्यो॥
तिमिर घोर तुरकान भान कूरम लखि भज्ज्यो।
कुंजरकुल संहारि मनहु मृगराज गरज्यो॥
जुध जीति मेक 'महुकम' जदन, 'फतयसिंह' घर आभरन।
'भारथ' समान भारत्थ करि, किलम हूँत जीत्यो 'करन' ॥२१७॥

दोहा

'दांतोपुर' दक्खिन दिसा, 'सीकर' उत्तर कोन।
'कूहर' पच्छिम जानिए, पूर्व जींएको भोन ॥२१८॥

---

२१७. छिल्लर=छिछला, कम गहरा। बीत्यो=समाप्त हो गया। भारत्थ कर=युद्ध-कर।

ताके मद्धि 'उदैपुरो', बसत सुकविको ग्राम ।
उन्नत परबत हरसको, तहँ भैरवको धाम ॥२१६॥
कवि जन कवियो दिव्य कुल, चारन चंडी बाल ।
'अलू' भक्तके वंशमें, यह मम नाम गुपाल ॥२२०॥
सूर बीर रजपूत कुल, कवि चारन कुल जानि ।
जो न बहत निज धर्म जुत, दहुं कुल दीरघ हानि ॥२२१॥
आदि धर्म छिति छत्र कुल, पूरन पैज प्रतीत ।
दान करन मारन मरन, रजपूतों यह रीत ॥२२२॥
सँग रहनो संपति विपति, सुख दुख सहनो सत्थ ।
कीरति कहनो दान जुध, कुल चारन यह कत्थ ॥२२३॥
याते हम यह ग्रन्थमें, परिश्रम कियो अपार ।
सुजस कच्छ कुलको कियो, अपनी मति अनुसार ॥२२४॥

इति श्री कूर्म यश प्रकाश म्लेच्छ विध्वंस कलह केलि बरणनं कवि गोपालदान विरचित द्वितीय लावा जुद्ध समाप्त, समाप्तोयं पंचम प्रसंग

इति ग्रन्थ समाप्त ।

---

२२२. पैज=प्रतिज्ञा ।